प्रार्थना–वल्लरी

(प्रार्थना–स्थलीय कार्यक्रम)

सम्पादक
ताराचन्द मीना
प्रधानाध्यापक, (प्रारम्भिक शिक्षा)
भूतपूर्व कॉन्स्टेबल (दिल्ली पुलिस)
बी.कॉम,बी.एड, एम.ए.हिन्दी., एवं राजस्थानी, एम. एड.,
पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातक,
जल ग्रहण प्रबंध में डिप्लोमा

चीता प्रकाशन श्रीमाधोपुर

प्रकाशक : ISBN **978–81–909194–2–5**

चीता पब्लिकेशन

प्रधान कार्यालय :–
मु.पो. कंचनपुर, तह. श्रीमाधोपुर
जिला – सीकर (राज.)
मो. 09799257635

शाखा कार्यालय,
सुखसागर कॉलोनी, वार्ड न. 2
गौरव पथ चौराहा, बाईपासरोड़,
श्रीमाधोपुर (सीकर–राज.)

सर्वाधिकार सुरक्षित चीता पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : सन् 2010 – प्रतियां – 1100

द्वितीय संशोधित संस्करण : सन् 2014 – प्रतियां – 2000

मूल्य : दो सौ रूपए मात्र (200.00)

कम्प्यूटर टाईपसैटिंग चीता कम्प्यूटर श्रीमाधोपुर सीकर राजस्थान

समर्पित

श्री जीण भवानी, माता–पिता, गुरूजनों एवं मित्रों के प्रति जिनकी अनुकम्पा एवं प्रेरणा से इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा करवाया गया है । पुस्तक लेखन में लेखक, प्रकाशक, मुद्रक ऑपरेटर तथा प्रूफ रीडर द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी भूलवश गलती रहना या कमी रहना स्वाभाविक है । इस प्रकाशन को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के किसी भी रूप (फोटोग्राफी, विद्युतग्राफी, यांत्रिकी अथवा अन्य रूपों) में उपयोग के लिए मुद्रित नहीं किया जा सकता । आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं। किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र श्रीमाधोपुर (सीकर) ही होगा ।

PRATHANA VALLARY
SAMPADAK - TARA CHAND MEENA
PUBLISHER : CHEETA PUBLICATION SHRIMADHOPUR
SIKAR (RAJ)
Mob. 09799257635 price Rs : 200.00

विवरणिका

क्र. स.	शीर्षक	पृ. सं.
1.	प्रार्थना क्यों ?	
2.	पाठकों के लिए	
3.	प्रार्थना सभा का समय विभाजन	
4.	राष्ट्रीय गीत	
5.	प्रार्थनाएँ	
	1. जयति जय जय माँ सरस्वती	
	2. दया कर दान भक्ति का	
	3. हे स्वर की देवी माँ	
	4. शारदे वरदे मनो	
	5. हंस वाहिनी ऐसा वर दो	
	6. हर देश में तू	
	7. माँ तेरे चरणों में	
	8. हम बालकों की ओर भी	
	9. हे शारदे माँ	
	10. हे मालिक तेरे बन्दे हम	
	11. तुम्ही हो माता	
	12. करते है चरण में वन्दन	
	13. तु ही राम है	
	14. मिलता है सच्चा सुख	
	15. म्हारा घट में निपजे ज्ञान	
	16. ईश्वर तुझे है कहते	
	17. शारदे माँ अमर वर दे	
	18. सरस्वती हम बच्चे तेरे	
	19. उतरो तम पथ पर	

20. वीणा वादिनी वर दे
21. भगवान हमारा जीवन
22. मुझको नवल उत्थान दो
23. नमन तुम्हें हे मातु शारदे
24. निर्बल के प्राण पुकार रहे
25. मैंने सौप दिया इस जीवन को
26. कर्मवीर बनकर भारत का
27. भगवान तुम्हारी बस्ती में
28. जरा वीणा बजा दो
29. गठ गठ जीवन ज्योत जलाए
30. आजा मेरी हंस वाहिनी माँ
31. ईश्वर में ध्यान लगाये रखना
32. फूलों से सजाकर के
33. शुभ नाम प्रभु का सांचा
34. मुँह फेर जिधर देखुं
35. शरण में आये हैं हम तुम्हारी
36. भारत वंदना
37. वाणी वन्दना
38. सरस्वती वन्दना
39. दीनबन्धु! कृपा सिन्धु
40. हे प्रभो आनंददाता
41. वह शक्ति हमें दो
42. इतनी शक्ति हमें देना
43. हमको मन की शक्ति देना
44. वैष्णव जन तो तेने कहिए
45. ईश्वर अल्लाह तेरे बन्दे हम
46. अल्लाह तेरो नाम

47. ऐ मालिक तेरे बन्दे हम
48. तू प्यार का सागर
49. उठ जाग मुसाफिर
50. राजस्थानी म्हारी भाषा
51.भगवन्! मदीयदेशे सुखिनो जनाः भवन्तु
52. भवतु भारतम्
53. We shall overcome
54. Where The Mind Is Without Fear
55. All Things Bright and Beautiful
56. Thanksgiving Prayer for Children
57. prayer for the new year

6. **ध्यान स्थिति (मंत्र)**

1. गुरू ध्यान
2. सूर्य ध्यान
3. गायत्री ध्यान
4. ब्राह्मनाद
5. प्रातः स्मरण ध्यान
6. दीप ध्यान
7. श्री लक्ष्मी ध्यान
8. श्री हनुमत ध्यान

7. **झण्डा गीत**

1. हिन्द देश के प्यारे झण्डे
2. हिन्द देश का प्यारा झण्डा
3. प्यारे तिरंगे तू शान हमारी
4. ऐ तिरंगा ऐ तिरंगा
5. म्हाने ध्वज तिरंगो प्यारो लागे
6. हिन्द देश रो झण्डो प्यारो लागे

7. ऊँचो, ऊँचो उड़े गगन में
8. कौमी तिरंगे झण्डे ऊँचे रहो
9. झण्डा ऊँचा रहे हमारा
10. मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा
11. झण्डा तिरंगा प्यारा

8. देश भक्ति गीत

1. जहाँ डाल–डाल पर
2. चन्दन है इस देश की माटी
3. कर चले हम फिदा
4. अब जाग उठे है हम
5. चित्रकार तू चित्र बना दे
6. हिन्द देश के निवासी
7. उठो साथियो समय नहीं है
8. सारे जहाँ से अच्छा
9. जो शहीद हुए है उनकी
10. हम भारत के भरत
11. हम हिन्दुस्तानी
12. भारत हमको प्यारा
13. आजादी के पर्व को
14. भारत प्यारा देश हमारा

9. स्वागत गीत

1. हम चकोर हो निरख रहे
2. स्वागत है श्रीमान, आपका
3. म्हें करां थारी मनुहार
4. म्हें स्वागत थांको करां
5. रूनक–झुनक म्हारी पायल बाजे
6. आपके आ जाने से आई है बहार

10. प्रेरक प्रसंग

1. मौसी की मनुहार
2. ताते नीचे नैन
3. चार सवाल
4. राजा का सवाल
5. शर्तिया ईलाज
6. टूटे छप्पर के नीचे चैन की नीद
7. व्यापारी की पत्नी
8. उपासना
9. सच्चे उत्तर
10. सत्य और सुन्दर
11. मीठी वाणी
12. एक सेर धान
13. अन्तिम इच्छा
14. भाग्य का भोजन
15. क्या बोले ये पंछी

11. बाल गीत

1. नटखट बंदर
2. चलो जंगल
3. पेड़
4. स्वच्छता संबंधी बालगीत
5. ऊँट चला
6. खट्टे अंगूर
7. कबूतर
8. स्वर गीत
9. गिनती गीत
10. जवानी से बुढ़ापे की गिनती

11. फूल की महिमा
12. जिन्दगी का क, ख,ग
13. विद्यार्थी के लिए सबसे बड़ी सात बातें
14. वर्तमान में अंग्रेजी के 26 अक्षरों का बदला हुआ स्वरूप
15. विराम चिह्न (Punctuation)

12. यथा नाम तथा गुण

1. प्रिसिंपल
2. हैडमास्टर
3. टीचर
4. स्टूडेन्ट
5. यजुकेशन (शिक्षा)
6. शिक्षक का धर्म
7. जीवन क्या है

13. भारतीय काल चक्र

14. स्काउट

1. स्काउट गाइड नियम
2. प्रतिज्ञा
3. स्काउट / गाइड प्रार्थना व झण्डा गीत
4. स्काउट / गाइड झण्डा
5. ध्वज गीत

15. राष्ट्र ध्वज से सबंधित तथ्य

16. राष्ट्रीय चिन्ह्न का महत्त्व

17. राष्ट्रीय एकता का महत्त्व

18. राष्ट्रीय प्रतीक

19. अनमोल वचन

20. सफलता के रामबाण मंत्र

21. दोहे

1. कबीर
2. रहीम
3. दादूदयाल
4. अमीर खुसरो
5. वृंद
6. सूर्य मल मिश्रण
7. राजिया

22. राजस्थानी कहावतें

23. राजस्थानी कविता

1. धरती धोरां री
2. पाथळ अर पीथळ
3. जलम भोम
4. धन धन मात खेजड़ी
5. म्हारो राजस्थान

24. नीतिशतक

25. हंसी के फुव्वारे ठहाके

26. सार्थक बातें

27. राष्ट्रपिता की जय हो

28. प्रतिज्ञा

29. राष्ट्रगान

मैं अपनी इस पुस्तक की सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक मानव–समुदाय के लिए हितकारी हो।

मगळाचरणंम्

मूकं करोति वाचालं,
पगुं ल3~घयते गिरिं,
यत्कृपा तमहं वन्दे,
परमानन्द माधवम्।।

अर्थात् :–जिनकी कृपा से गूँगा व्यक्ति वाचालता करता है, अपंग व्यक्ति पहाड़ को लांघ जाता है, मैं उन परम आनन्द को देने वाले कृष्ण की वन्दना करता हूँ।

प्राक्कथन

प्रार्थना वल्लरी नामक पुस्तक छात्र–छात्राओं, शिक्षक–बन्धुओं एवं प्रबुद्धजनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता महसूस हो रही है कि मेरे छोटे से प्रयास से विद्यालय के वातावरण में सरसता आयेगी, मेरे द्वारा लिखित प्रथम संस्करण चीता पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित किया गया, उसकी प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षक बन्धुओं के हाथों में पहुँची। आप सभी की मांग के अनुसार इस पुस्तक का द्वितीय संशोधित संस्करण काफी बदलाव के साथ प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से विद्यालय में प्रार्थना–स्थलीय कार्यक्रम को रोचक बनाकर विद्यालयी वातावरण में आमूल–चूल परिवर्तन लाया जा सकता है। प्रार्थना–स्थलीय कार्यक्रम के दौरान नियमित रूप से विभिन्न प्रार्थनाओं, मंगलाचरणों, श्लोकों, प्रेरक प्रसंग, यथा नाम तथा गुण, मां सरस्वती की विभिन्न वंदना, अनमोल वचन, देशभक्ति गीत, बाल–गीत, राष्ट्रगीत, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान, संस्कृत के नीतिशतक, राजस्थानी कहावतें, कबीर जी, रहीमजी, दादूदयालजी, राजिया रा दोहा, राजस्थानी कविताएँ, हँसी के ठहाके आदि के सस्वर वाचन में विद्यार्थी रूचि लेंगे, जिससे विद्यार्थियों का सम्पूर्ण दिन प्रसन्नतापूर्वक गुजरेगा।

मैंने विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं विद्वानों से इनका संकलन कर आप पाठकों के समक्ष सरल, सरस एवं शुद्धता पूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिसमें विद्यार्थी, शिक्षक एवं मानव समुदाय लाभान्वित हो सकें। बालक अपनी प्रथम पाठशाला माँ के आँचल में बड़ा होकर बोलना चलना–फिरना सीखता है, तदुपरान्त बालक को ज्ञानवान, संस्कारवान, सुशील, विनम्र, आज्ञाकारी आदि गुणों से ओत–प्रोत करने के लिए पाठशाला में प्रवेश दिलवाया जाता है, विद्यालय में गुरू चरणों में रहकर बालक अक्षर ज्ञान और व्यावहारिक, सामाजिक ज्ञान प्राप्त करता है। बालक के लिए विद्यार्थी जीवन अविस्मरणीय जीवन होता है। क्योंकि विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित कई घटनाएँ जिसमें शिक्षकों की अध्यापन शैली, उनका व्यवहार और अपने सहपाठियों के साथ बचपन की बाल–लीलाएं, बालक के मानस पटल पर सदैव अंकित रहती है। प्रार्थना

स्थलीय कार्यक्रम का विद्यार्थी जीवन में अतिमहत्त्व होता हैं। जो उसकी सम्पूर्ण जीवन में अविस्मरणीय बना रहता है। इसमें बालकों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि मौखिक अभिव्यक्ति में सुधार, सहकार की भावना का विकास विभिन्न प्रेरक प्रसंगों से विद्यार्थी जीवन में मूल्यों का अर्जन करना एवं सुनागरिक बनने की ललक, जिज्ञासा जैसी प्रवृति का विकास बालक में सहजता के साथ हो जाता है। प्रार्थना सभा की प्रवृति के दिशा निर्देश शिक्षा विभागीय पंचाग में जारी किए जाते है परन्तु शिक्षक बन्धुओं के पास प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम से सबंधित विषय वस्तु उपयोगी तथ्य एवं जानकारी और इस कार्यक्रम से सम्बंधित सामग्री का अभाव होने से यह कार्यक्रम अधुरा सा रह जाता है यह पुस्तक इस अभाव को दूर करने का एक छोटा सा प्रयासमात्र है, उपर्युक्त विषय सामग्री इस पुस्तक में उचित स्थान के साथ दर्शायी गई है, विद्यार्थी इस पुस्तक के अध्यापन से अपने भावी जीवन को उज्ज्वल एवं अपने आपको देश के प्रति वफादार बनाने का पूर्ण प्रयास कर सकेंगे। शिविरा पंचांग में प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम को विभिन्न भागों में बांट कर उसका समय निर्धारण कर रखा हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक संकलन के माध्यम से तैयार कि गई है, जो प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण रोचक, आनन्दमय बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक के द्वितीय संशोधित संस्करण में मैंने जिन पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, गुरूजनों, प्रबुद्धजनों, छात्र, छात्राओं, विद्धानों की सहायता से संकलन के माध्यम से यह छोटा सा प्रयास किया है, मैं उनका अति आभारी रहूँगा तथा साधुवाद देना चाहूँगा कि उनके सहयोग से यह पुस्तक तैयार हो सकी है। अन्त में, मैं अपने पूर्ण विश्वास के साथ यह आशा करता हॅू कि विद्यार्थियों, गुरूजनों, देश प्रेमियों विद्धानों एवं समस्त मानव समुदाय के लिए यह पुस्तक बहुपयोगी साबित हो सकेगी। मैं मानता हूँ कि इस पुस्तक में कुछ त्रुटियाँ अवश्य रही होगी, जो मेरे ध्यान में नहीं आई होगी। इसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हॅू तथा आपके सहयोग की आशा करता हूँ कि आप उन त्रुटियों से मुझे अवगत करायेगे जिससे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके। इसके साथ ही आपके सुझावों को सादर आमंत्रित करता हूँ। इसी आशा और विश्वास के साथ..............................

धन्यवाद

आपका
ताराचन्द मीना

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा, सीकर

क्रमांक : जिशिअ/ प्राशि/सी/सामान्य/2012/817 दिनांक : 23/07/2012

प्रशस्ति एवं अनुशंसा पत्र

विद्यालयों का दैनिक कार्य प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम से शुरू होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों का विकास होता है।

श्री ताराचन्द मीना व.अ. एवं का. प्र.अ. राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जयरामपुरा, पं. स. खण्डेला, जिला सीकर द्वारा प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम को रोचक एवं आकर्षक बनाने के लिए '' प्रार्थना वल्लरी '' पुस्तिका का प्रकाशन चीता पब्लिकेशन के माध्यम से करवाया गया है। इस पुस्तिका में प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम के लिए उपयोगी ईश वन्दनाओं, दोहे व साखियाँ, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, देशभक्तिगीत, प्रेरक प्रसंग, बाल कथाओं, हँसी के फुहारों एवं अन्य उपयोगी तथ्यों का संकलन बहुत ही सरल एवं रोचक भाषा में किया गया है, जिनका प्रयोग करके विद्यालयों के प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम को और भी अधिक उपयोगी व आकर्षक बनाया जा सकता है। इस पुनीत कार्य के लिए श्री मीना जी निःसन्देह साधुवाद के पात्र है।

मैं श्री मीना जी के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करते हुए इस पुस्तिका को राज्य के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में लागू किये जाने की अनुशंसा करता हूँ।

जिला शिक्षा अधिकारी,
प्रारम्भिक शिक्षा, सीकर
(राजस्थान)

1. प्रार्थना क्यों

हमें अपने अनुभवों को बांटने का मौका देती है प्रार्थना। प्रार्थना हमारे आंतरिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है,क्योंकि प्रार्थना हमारे महत्वपूर्ण वैयक्तिक बदलाव का बुनियादी केन्द्र होती है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो स्वीकार करते है कि कोई तो है,जो हम सबको रोशन किए हुए है। कोई तो है जिसके पास इस समूचे ब्रह्माण्ड का बटन हैं।

जब हम प्रार्थना करते हैं तो अपने अहम का दमन करते है। जब प्रार्थना करते हैं तो हमारे मन से कलुषित विचार दूर होते चले जाते हैं। प्रार्थनाएं हीलिंग टच का काम करती है। प्रार्थनाएं हमें बल देती हैं,संबल देती हैं, क्योंकि प्रार्थनाएं हमें पवित्र बनाती हैं। हमारे शरीर को डिटॉक्सीफिकेशन करती है यानी उसे निर्विषीकरण की प्रक्रिया से गुजारती हैं। इससे हमारा शरीर स्वस्थ, पवित्र, प्रफुल्लित और तरोताजा होता है। प्रार्थनाएं हमें सिखाती है कि हम ऊर्जा कैसे हासिल करें। जो लोग प्रार्थना नहीं करते वे मौन में विलुप्त हो जाने का लुप्त नहीं उठा पाते। प्रार्थना उस शक्ति को हासिल करने का उपक्रम है, जो शक्ति हमें अपने पराक्रम से हासिल होती है।

2.पाठकों के लिए

इस पुस्तक में पाठकों के लिए कुछ रोचक प्रार्थनाएं व अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये है। जो जीवन के प्रत्येक मोड़ पर काम आते हैं, उन्हीं कार्यक्रमों को यहाँ दर्शाया गया है। प्रार्थना–स्थलीय कार्यक्रम को और भी अधिक रोचक बनाने के लिए विद्यालय का समस्त स्टाफ प्रार्थना कार्यक्रम में बच्चों के साथ भाग लेवें, जिससे मनोवांछित ईश–वंदना पेश की जा सके। इस पुस्तक में सभी पाठकों के लिए देशभक्ति गीत, अनमोल वचन, प्रेरक प्रसंग, चुटकले, दोहे आदि कहीं न कहीं से बटोर कर आपके लिए प्रस्तुत किये गये हैं। जिससे आपकी प्रार्थना के प्रति रूचि बढेगी इसके द्वारा छात्र–छात्राओं एवं समस्त अध्यापक बन्धुओं में एक नई जागृति का विकास होगा।

1. प्रार्थना स्थल पर जाजम, दरी आदि की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. प्रार्थना स्थल पर मां शारदा की तस्वीर को पुष्पहार पहनाकर अगरबत्ती तथा दीपक जलाकर प्रार्थना की शुरूआत करवानी चाहिए।
3. प्रार्थना बोलते समय हारमोनियम, ढोलक, तबले आदि वाद्य यंत्रों का उपयोग करना चाहिए।
4. सप्ताह के प्रत्येक दिन अलग–अलग प्रकार की प्रार्थनाऐं बालकों से बुलवायी जानी चाहिए।
5. प्रार्थना के समय बालकों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर भी देना चाहिए।
6. संस्था प्रधान एवं गुरुजनों के द्वारा भी प्रतिदिन प्रार्थना के समय बालकों को प्रेरणास्पद उद्‌बोधन देना चाहिए।
7. प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम शांत वातावरण के अन्दर किया जाना चाहिए।

3. प्रार्थना सभा का समय विभाजन

क्र.स.	नाम	समय
1.	राष्ट्रगीत(वन्देमातरम्)	2 मिनट
2.	प्रार्थना सरस्वती वन्दना	4 मिनट
3.	ध्यान स्थिति	1 मिनट
4.	अनमोल वचन	1 मिनट
5.	प्रेरक प्रसंग	2–5 मिनट
6.	देशभक्ति गीत	2–5 मिनट
7.	दैनिक समाचार	3 मिनट
8.	दोहा वाचन	2 मिनट
9.	प्रभु प्रार्थना (मंत्र कोई भी)	1 मिनट
10.	प्रतिज्ञा	2 मिनट
11.	राष्ट्रगान	(48–52 सैकण्ड)

4.राष्ट्रीय गीत (बंकिम चन्द्र चटर्जी)

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नां पुलितयामिनीम्, फुल्लकुसुमितां द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्, सुखदां वरदां मातरम्
सप्तकोटिकंठ–कलकल–निनादकराले,द्विसप्तकोटि भुजैर्धृतखरकरवाले
अबला केन मा एत बले, बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलकारिणीं मातरम्, तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि ह्रदि तुमि कर्म, त्वमहि
प्राणः शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति, ह्रदये तुमि मा भक्ति,
तोमारि प्रतिमा गड़ि मंदिरे मंदिरे, त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल–दल–विहारिणी, वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्, सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्, श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,धरणीं भरणीं मातरम्।

–: प्रार्थना 5 :–

1.जयति जय–जय माँ सरस्वती

जयति जय–जय माँ सरस्वती
जयति वीणा धारिणी माँ, जयति कमलासना माता
जयति सुखवर दायिनी माँ, कमल आसन छोड़ दे माँ
देख मेरी दुर्दशा माँ, ज्ञान का सागर बहा माँ
तू है पुस्तक धारिणी माँ, जयति जय–जय माँ सरस्वती
जयति वीणा धारणी माँ, देशहित बलिदान हो माँ
हो हमारी भावना माँ, विश्व का कल्याण कर माँ
तू है हंसवाहिनी माँ,जयति जय–जय माँ सरस्वती
जयति वीणा धारिणी माँ – 2

2.दया कर दान भक्ति का

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।
दया कर ....
हमारे ध्यान में आओ प्रभु आँखों में बस जाओ।
अँधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना।।
दया कर ....
बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल कर प्रभु रहना सिखा देना।
दया कर..
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा व सेवकचर बना देना।
दया कर...
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभु हम को सिखा देना।
दया कर..
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

3. हे स्वर की देवी माँ

हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो।
हम गीत सुनाते हैं, संगीत हमें दे दो।।
हे स्वर ....
सरगम का ज्ञान नहीं, ना लय का ठिकाना है।
तुझे आज सभा में माँ, मुझे दर्श दिखाना है।
अज्ञान हरो मैया, यह मुझ पे महर कर दो।।
हे स्वर ....
हम गीत ....
भक्ति ना शक्ति है, सेवा का ज्ञान नहीं।
तुझे आज सुनाने को मेरी मैया कुछ भी नहीं।
गीतों के खजाने से एक गीत मुझे दे दो।।
हे स्वर ....
हम गीत ....
अज्ञान ग्रसित होकर क्या गीत सुनाऊं मैं।
टूटे हुए शब्दों से क्या स्वर को बनाऊं मैं।
दो ज्ञान स्रोत मैया यह मुझ पे महर कर दो।।
हे स्वर ....
हम गीत ....

4. शारदे वरदे मनो

शारदे वरदे मनो, हमको नया वरदान दे ।
शीश चरणों में झुके, हम बालकों को ज्ञान दे ।। शारदे वरदे ...
प्रिय गुणों की आगरी, प्रिय नागरी परमेश्वरी ।
तू दया कर आज, जीवन को नया संवार दे ।। शारदे वरदे ....
बंद सदियों से पड़े हैं द्वार, द्वार मन के खोल दे ।
बालको जागो उठो यह शब्द मुख से बोल दे ।
शारदे वरदे हम बालकों को प्यार दे ।। शारदे वरदे..

5. हंस वाहिनी ऐसा वर दो

हंस वाहिनी ऐसा वर दो । अवगुण हर कर सद्गुण भर दो ।।
हंस वाहिनी ऐसा वर दो । पढ़ लिख कर माता हम विद्वान बन जायेंगे।।
भारत से अनपढ़ता को दूर भगायेंगे। दुखियों की सेवा दिल में भर दो।।
हंस वाहिनी ऐसा वर दो । अवगुण हर कर सद्गुण भर दो ।।
भाषा का विवाद मैया देश से हटायेंगे। हम सब एक हैं की भावना जगायेंगे।
वाणी में ओज मैया हमारे भर दो। अवगुण हर कर सद्गुण भर दो ।।
हंस वाहिनी ऐसा वर दो। झूठ और पाप के हम पास नहीं जायेंगे।।
अन्यायी के आगे कभी शीश ना झुकायेंगे। अवगुण हर कर सद्गुण भर दो
हंस वाहिनी ऐसा वर दो ।।

6. हर देश में तू

हर देश में तू, हर वेश में तूं।
तेरे नाम अनेक, तू एक ही है।।
तेरी रंग भूमि यह विश्वधरा।
सब खेल में मेल में एक ही है।।
सागर से उठा बादल बनकर।
बादल से फूटा जल होकर के।।
फिर नहर बनी नदियां गहरी।
तेरे भिन्न प्रकार, तू एक ही है।।
हर देश में ....
तेरी रंग ....
चींटी से अणु–परमाणु बना।
फिर सब जीव–जगत का रूप लिया।।
कहीं पर्वत, वृक्ष विशाल बना।
सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।।
हर देश में ....
तेरी रंग ....
यह दिव्य दिखाया है जिसनें।
वह है गुरूदेव की पूर्ण दया।।
तुकड़ियाँ कहे और न कोई मिला
बस मैं और तूं सब एक ही है।।

7. माँ तेरे चरणों में

माँ तेरे चरणों में हम शीश नवाते हैं।
श्रद्धा पुरीत होकर दो पुष्प चढ़ाते हैं।।
माँ तेरे चरणों में ....
झंकार करो ऐसी सद्भाव उभर आये।
हूंकार करो ऐसी दुर्भाव निकल आये।।
सन्मार्ग न छोड़ेगे हम शपथ उठाते हैं।
मां तेरे चरणों में ....
विश्वास करो माता, हम दूत तुम्हारे हैं।
बलिदान के क्षेत्रों में हम पुत्र तुम्हारे हैं।।
कुछ त्याग नहीं अपना, बस कर्ज चुकाते हैं।
मां तेरे चरणों में ....

8. हम बालकों की ओर भी

हम बालकों की ओर भी, भगवान तेरा ध्यान हो।
हो दूर सारी मुर्खता, कल्याकारी ज्ञान हो।। हम बालकों ....
हम ब्रह्मचारी वीरव्रत धारी, सदाचारी बनें।
हमको हमारे देश भारत पर बड़ा अभिमान हो।। हो दूर सारी ....
होकर बड़े कुछ कर दिखाने के लिए तैयार हों।
हमको हमारी देश सेवा का सदा अरमान हो।। हो दूर सारी ....
हो नौजवानों की कमी, जब मांग हो प्यारे देश को।
तो मातृवेदी पर सदा रखा हमारा प्राण हो।। हो दूर सारी ....
संसार का सिर मोर होकर, देश हमसे कह सके।
हे वीर बालक धन्य तुम मेरी असल सन्तान हो।। हो दूर सारी ....

9. हे शारदे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ ।
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।।
हे शारदे माँ ....
तू स्वर की देवी है, संगीत तुझ से है,
हर शब्द तेरा है गीत तुझ से।
हम हैं अकेले, हम हैं अधुरे,
तेरी शरण में हमें तार दे माँ।।
हे शारदे माँ ....
ऋषियों ने समझी है, मुनियों ने जानी ।
वेदों की भाषा, पुराणों की बानी ।।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें।
शिक्षा का हमको अधिकार दे माँ।।
हे शारदे माँ ....
तू श्वेतवर्णी, कमल पे विराजे ।
हाथों में वीणा, मुकुट सिर पे साजे।
मन से मिटावे अंधेरे हमारे ।
उजालों का हमको संसार दे माँ ।।
हे शारदे माँ ....
अज्ञानता से ....

10. हे मालिक तेरे बन्दे हम

हे मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले, बदी से टलें ताकि हंसते हुए निकले दम।।
ये अँधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर,
सुख का सूरज छिपा जा रहा।।
हो तेरी रोशनी में वो दम, तूं अमावस को कर दे पूनम।
नेकी पर चलें, ...
जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना।
वो बुराई करें, हम भलाई करें, नहीं बदले की हो भावना।।
बढ़ चले प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का यह भरम।
नेकी पर चलें, ...
बड़ा कमजोर है आदमी अभी लाखों हैं इसमें कमी।
पर तू जो खड़ा, है दयालू बड़ा तेरी कृपा से धरती थमी।।
दिया तुने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सब के गम।
नेकी पर चलें, ...

11. तुम्हीं हो माता

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
तुम्हीं हो साथी, सखा हमारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे।।
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया,तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
जो कल खिलेगें वे फुल हम है,तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।।
दया की दृष्टि सदा ही रखना,तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।

12. करते है चरण में वन्दन

करते हैं चरण में वंदन
तेरी जोत जलाए हरदम
तेरा दरबार निराला
लगता हैं हम को प्यारा
ये मैया तो ज्ञान की दाता है।
ये मैया तो भाग्य विधाता है।
ममता के मन्दिर की हो तुम सबसे प्यारी मुरत
रोम–रोम खिल जाए जब देखुँ तेरी सुरत।
ये फूल कमल तेरा आसन्न तेरा रूप बड़ा मन भावन।
लगता है हमको प्यारा
ये मैया तो ज्ञान की दाता हैं।
ये मैया तो भाग्य विधाता है।
तुम तो हो ज्ञान की देवी जो ज्ञान तु हम पे लुटाएं।
हाथों में वीणा लेकर वीणा मधूर बजाएं
जब –जब दुनिया में आए, तेरा ही आंचल पाएं
और गीत खुशी के गाएं।
ये मैया तो भाग्य विधाता है।

13.तू ही राम है

तू ही राम है तू रहीम है, तू करीम, कृष्ण, खुदा हुआ।।
तू ही वाहे गुरू तू यीशु मसीह,हर नाम में तू समा रहा।। **तू ही राम**
तेरी जात पाक कुरान में,तेरा दर्श वेद पुराण में।।
गुरू ग्रन्थ जी के बखान में,तू प्रकाश अपना दिखा रहा।। **तू ही राम**
अरदास है कहीं कीर्तन,कहीं रामधुन कहीं आहवन।।
विधि वेद का है ये सब रचन,तेरा भक्त तुझको बुला रहा।। **तू ही राम**

14. मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
यह विनती है पल–पल, क्षण–क्षण, भगवान तुम्हारे चरणों में,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे काँटो पर मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
लब पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे।।
मिलता है सच्चा सुख ....
यह विनती है पल–पल..
मिलता है सच्चा सुख ....

15. म्हारा घट में निपजे ज्ञान

म्हारा घट में निपजे ज्ञान, सरस्वती मां दे वरदान।। **म्हारा घट में ....**
सरस्वती मां दे वरदान, सरस्वती मां दे वरदान।। **म्हारा घट में ....**
हे माँ पहल्या मने सुधार,मैं सुधरूं सुधरे संसार।।
साक्षरता का ले आधार,सुधरे यो सगलो संसार।। **म्हारा घट में ....**
शिक्षा की सब ज्योति जलायें,अनपढ़ को हम गले लगायें।। म्हारा घट में
साक्षरता का साथ निभायें,जो सोये हैं उन्हें जगाये।। **म्हारा घट में ...**
सरस्वती मां दे वरदान, सरस्वती मां दे वरदान।।
म्हारा घट में निपजे ज्ञान, सरस्वती मां दे वरदान।। **म्हारा घट में ....**

16. ईश्वर तुझे हैं कहते

ईश्वर तुझे हैं कहते, भगवान है नाम तेरा।
हर शाख–शाख पर है, हरिओम नाम तेरा।।
आना तू मेरे घर पर, घर–घर बना के खेलें।
नन्हा सा घर है मेरा, उसमें मुकाम तेरा।।
ईश्वर तुझे हैं ....

खेतों का है तू स्वामी, बागों का तू है माली।
सारी जमीं है तेरी, हर आसमां है तेरा।।
ईश्वर तुझे हैं ....

वेदों में तू लिखा है, पुराणों में तू छिपा है।
गीता पुकारती है, प्रभु ओउम् नाम तेरा।।
ईश्वर तुझे हैं ....

17. शारदे मां अमर वर दे

शारदे माँ अमर वर दे, हृदय में मृदु ज्ञान भर दे।।
मैं ना जानूं गीत क्या है, भाव भाषा प्रीत क्या है।
सफलता की रीत क्या है,स्नेह अन्तर में छिपा है।
अब उसे उन्मुक्त कर दे।। शारदे मां अमर वर ....
.पास तेरे आ सकूँ माँ,राह तेरी पा सकूँ माँ।
सहज सुन्दर सौम्य स्वर दे, शारदे माँ अमर वर दे।।
शारदे माँ अमर वर ....

18. सरस्वती हम बच्चे तेरे

सरस्वती हम बच्चे तेरे ।
अब तो तुम मुस्करा दो मां ।।
हम गाएँ तुम बीन बजा दो ।
हम नाचे तुम ताल मिला दो ।
उतर हंस से आओ माँ ।।
सरस्वती हम ....
गिरते हैं तो हमें बचा लो
हँस कर अपने गले लगालो,
उतर हंस से आओ मां
सरस्वती हम ....
अँधकार को दूर भगाओ ।
ज्ञान ज्योति हमें दिखाओ ।
उत्तर हंस से आओ माँ ।।
सरस्वती हम..
पढ़ना लिखना हमें सीखा दो।
ज्ञान सागर हमें बना दो ।
उत्तर हंस से आओ माँ ।।
सरस्वती हम...

19. उतरो तम पथ पर

उतरो तम पथ पर ज्योति चरण
पद चिह्न बनें नखतावलियां ।
झूमें दिश दिश दीपावलियां।
जन शुभ युग मंगल किरणों की।
छवि माँग रहा तुझसे कण–कण।।
उतरो ....
अवनि अम्बर के अधरे।
मानव संस्कृति के सुमन खिले।
यह मानस लहरी भी करले।
पावन ज्योत्स्ना का पुण्य वरण।।
उतरो ....
तुम छिपे नहीं यमुना तट पर।
मोहन भरले मुरली का स्वर।
दो नवल रश्मि जग हो जिसमें ।
अणु–अणु आलोकित हो क्षण–क्षण।।
उतरो ....

20. वीणा वादिनी वर दे

वर दे वीणा वादिनी वर दे,प्रिय स्वतंत्र स्वर दे।
अभिद्य मंत्र नव,भारत में भर दे।
वीणा वादिनी वर दे,काट अन्ध उर के बन्धन स्तर।
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर,कलुष—भेद तम हर प्रकाश भर।
जग—मग जग कर दे,वीणा वादिनी वर दे।
नव गति नवलय ताल छंदनव,नवल कण्ठ नव जलद मद्रंख।
नव नभ के नव विहंग वृंद को,नव पर नव स्वर दे।
वीणा वादिनी वर दे,अभिद्य मंत्र नव।
भारत में भर दे,वीणा वादिनी वर दे।।

21. भगवान हमारा जीवन

भगवान हमारा जीवन संसार के लिए हो।
यह जिन्दगी हमारी उपकार के लिए हो।।
भगवान हमारा ....
तन मन वचन बन्धन से जग का सदा भला हो।
चाहे हमारी गर्दन तलवार के लिए हो।।
भगवान हमारा ....
उत्तम शुभ हो मेरा दुश्मन के लिवाले।
वह देखते ही कह दे तुम प्यार के लिए हो।।
भगवान हमारा ....
उद्देश्य को अधूरा, मर जाऊं पर न छोड़े।
पतवार बोद्ध कर दे मझधार के लिए हो।।
भगवान हमारा ....
यह जिन्दगी ....

22. मुझको नवल उत्थान दो

माँ शारदे वरदान दो, मुझको नवल उत्थान दो।
हो सत्य जीवन सारथी, तेरी करूँ नित आरती,
निज चरणों में स्थान दो। माँ शारदे वरदान दो.........
माँ शारदे हंसासिनी,वागीश वीणा वादिनी,
नव गति नव लय तान दो,माँ शारदे वरदान दो.........
मन बुद्धि हृदय पवित्र हो,मेरा महान चरित्र हो,
विद्या विनय का दान दो,माँ शारदे वरदान दो.........
यह विश्व ही परिवार हो, सब के लिए सम प्यार हो।
आदर्श लक्ष्य महान माँ शारदे वरदान दो.........

23. नमन तुम्हें हे मातु शारदे

नमन तुम्हें हे मातु शारदे! नमन तुम्हें।
मां तुम हो विद्या देवी, सकल विश्व की माता।
वाणी की पावन गंगा हो सात सुरों की ज्ञाता।।
नमन तुम्हें, हे मातु शारदे ....

वीणा पाणि हंस वाहिनी उर में ज्योति जगाओ।
संतापों में दग्ध हृदय में अमृत रस बरसाओ।।
नमन तुम्हें, हे मातु शारदे ....

अंतर की वीणा को स्वर दो, करूणा स्नेह बहाओ।
आशिषों के मंगल स्वर में, प्रेम सुधा बरसाओ।।
नमन तुम्हें, हे मातु शारदे ....

24. निर्बल के प्राण पुकार रहें

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।
श्वासों के स्वर झंकार रहे। जगदीश.................................
आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल चराचर में।
यह मधुर बोल गुजार रहे। जगदीश ....
जब दया दृष्टि हो जाती है, जलदी खेती हरियाली है।
इस आश पे जन उचार रहे। जगदीश ....
अब दुखों की चिन्ता नाहीं, विश्वास न जाए कभी मेरा।
टूटे ना लगाए टेर रहे। जगदीश ....
तुम हो करूणा के धाम सदा सेवक ही राधेश्याम सदा।
बस इतना सदा विचार रहे, जगदीश ....
निर्बल के प्राण..

25. मैनें सौंप दिया इस जीवन को

मैनें सौंप दिया इस जीवन को। भगवान तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।
बस मेरा निश्चय एक यही, एक बार तुम्हे पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं, दुनियां भर का , सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।

मैं जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तेरे चरणों का पुजारी बनूँ।
इस पुजक की इक–इक नस का हो तार तुम्हारे हाथों में।।
बस तुझ में मुझ में भेद यही।

26. कर्मवीर बनकर भारत का

कर्मवीर बनकर भारत का आज करू उत्थान
ऐसी शक्ति दो भगवान–2
माता– पिता की आज्ञा मानूँ गुरू में रूप तुम्हारा जानूँ
ऐसी शक्ति दो भगवान–2
माता–पिता गुरू के प्रति ऐसी शक्ति दो भगवान
कर्मवीर बनकर......................
लेकर राष्ट्र ध्वज निज कर में लहरा दूँ
इसको जग भर में ऐसी शक्ति दो भगवान–2
निज प्राणों की भेंट चढ़ाकर रखूँ इसका मान
ऐसी शक्ति............................
कर्मवीर बनकर......................
भारत माँ के कष्ट मिटाऊ भारत वर्ष अखण्ड
बनाऊ ऐसी शक्ति दो भगवान
कर्मवीर बनकर......................
ऐसी शक्ति............................

27. भगवान तुम्हारी बस्ती में

भगवान तुम्हारी बस्ती में कोई भी प्राणी सुखी नहीं
इक तोता सुखी इक मैना सुखी, जब डाल कटे तो वो भी दुःखी
भगवान तुम्हारी..........................
इक राजा सुखी इक रानी सुखी,जब राज हटे तो वो भी दुखी
भगवान तुम्हारी..........................
इक माता सुखी इक पिता सुखी,जब संतान नही ंतो वो भी दुखी
भगवान तुम्हारी..........................
इक गुरू सुखी, इक शिष्य सुखी,जब प्रेम टूटे तो वो भी दुःखी
भगवान तुम्हारी..........................
इक बालक सुखी, इक बालिका सुखी,जब स्कूल छूटे तो वो भी दुःखी
भगवान तुम्हारी............................

28. जरा वीणा बजा दो

जरा वीणा बजा दो मां सरस्वती हम द्वार तुम्हारे आए हैं।
मेरे हाथों में जल का लोटा हैं में तुझे नहलाने आई हूँ।

जरा वीणा.......................
मेरे हाथो में फूलों की माला है मैं तुझे पहनाने आई हूँ।

जरा वीणा.......................

मेरे हाथों में चन्दन की थाली है मैं तिलक लगाने आई हूँ।

जरा वीणा.......................
मेरे हाथों में लड्डू की थाली है मै भोग लगाने आई हूँ।

जरा वीणा.......................

29. गठ–गठ जीवन ज्योत जलाये

गठ–गठ जीवन ज्योत जलाए ज्योत जलाए,आओ सरस्वती मैया, करू बन्धना

दीपों की क्या गिनती करू में, दीपों से दीप जलाए करू में बन्धना।
गठ–गठ जीवन............................
आओ सरस्वती मैया......................
फुलों की क्या गिनती करू में, फुलों से फुल चढ़ाया करू में बन्धना।
गठ–गठ जीवन...............................
आओं संरस्वती मैया........................
रंग बिरगी चूनड़ ओडू हाथों में इकतारा, करू में वन्दना।
गठ–गठ जीवन...............................
आओं संरस्वती मैया........................
जब जब तेरी याद आये तब–तब ,तुझे पुकारा करूँ में वन्दना।
गठ–गठ जीवन...............................
आओं संरस्वती मैया........................

30. आजा मेरी हंस वाहिनी माँ

आजा मेरी हंस वाहिनी माँ, तुझे सेवक पुकारता है।

मैया तेरे मंदिर में एक बालक आया है।

बालक को विद्या दे दो माँ, वो तो सेवक तुम्हारा है।

मैया तेरे मंदिर में एक निर्धन आया

निर्धन को माया दे दो माँ, वो तो सेवक तुम्हारा है।

आजा मेरी...

मैया तेरे मंदिर में एक लगड़ा आया है।

लगड़े को टाँगे दे दों माँ, वो तो सेवक तुम्हारा है।

मैया तेरे मन्दिर में एक अन्धा आया हैं

अन्धे को आखे दे दो माँ, वो तो सेवक तुम्हारा है।

आजा मेरी...

मैया तेरे मन्दिर में एक बेहरा आया है।

बेहरे को काने दे दो माँ, वो तो सेवक तुम्हारा है।

आजा मेरी...

31. ईश्वर में ध्यान लगाए रखना

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।
आकाश में नहीं पाताल में नहीं, धरती पे मिलेंगें कभी न कभीं।

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।
माता में नही पिता में नहीं, गुरूओं में मिलेगें कभी न कभी।

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।
फुलों में नही पत्तियों में नहीं, कलियों में मिलेंगें कभी न कभी।

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।
गायों में नही बछड़ों में नहीं, गुवालों में मिलेंगें कभी न कभी।

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।
चंदा में नहीं सूरज में नहीं, तारों में मिलेगें कभी न कभी।

ईश्वर में ध्यान लगाये रखना, भगवान मिलेगें कभी न कभी।

32. फुलों से सजाकर

फूलों से सजाकर के मेरी माँ को नमन कर दो
हे माँ तेरे मन्दिर में एक बालक आया हैं,
बालक को शिक्षा दे दो मेरी माँ को नमन कर दो। फूलों से सजाकर........
हे माँ तेरे मन्दिर में एक भिखारी आया हैं।
भिखारी को भिक्षा दे दो मेरी माँ को नमन कर दो। फूलों से सजाकर.......
हे माँ तेरे मन्दिर में एक लंगड़ा आया हैं,
लंगड़े को टाँगे दे दो मेरी माँ को नमन कर दो। फूलों से सजाकर........
हे माँ तेरे मन्दिर में एक अन्धा आया हैं।
अन्धे को आँखे दे दो मेरी माँ को नमन कर दो।

फूलों से सजाकर..............
हे माँ तेरे मन्दिर.................

33. शुभ नाम प्रभु का साँचा

शुभ नाम प्रभु का साँचा। तन हाड़–चाम का ढ़ाँचा।।
तू अब तक रे नहीं जागा। हैं श्वास का कच्चा धागा।
यह टूट जाए तो क्या हो। कुछ सोचा, समझा जाँचा।।
जीवन की पुरानी गाड़ी। रथ वाला (मन) निपट अनाड़ी।।
सुनसान अंधेरा रस्ता पग–पग पर बना हैं खाँचा।
शुभ नाम प्रभु का साँचा। तन हाड़ चाम का ढ़ाँचा।।

34. मुँह फेर जिधर देखु

मुँह फेर जिधर देखु बस तू ही नजर आये
माँ छोड़ के घर तेरा में और किधर जाऊ।

गैरों ने तो ठुकराया अपने भी बिछुड़ गये हैं।
हम साथ चले जिनके, वें दूर निकल गये हैं।
तेरे रहम कर्म पर हूँ तू कैसे ठुकराये

मुँह फेर जिधर....................

माना कि मैं पापी हूँ पापों की सजा दे दो माँ।
बस इतनी सजा दे माँ मुझे मेरे खताओं की
तेरो रहम कर्म से तो पापी भी कतरायें

मुँह फेर जिधर....................

सूरज और चंदा को मन में उतारा हैं।
मस्तिष्क में अग्नि की प्रचंड ज्वाला हैं।
माँ मरना भी हो तो तेरे द्वार पर मर जायें

मुँह फेर जिधर....................

35. शरण में आयें हैं हम तुम्हारी,

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करों हे दयालु बाबा
सम्हालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु बाबा।
न हम में बल हैं, न ही शक्ति न हम में साधन न हैं भक्ति
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी दया करो हे दयालु बाबा।
तुम हो पिता हम हैं बालक, तुम हो स्वामी हम हैं सेवक
तुम हो ठाकुर हम हैं पुजारी, दया करो हे दयालु बाबा
अगर बुरे है तो नाथ तेरे, अगर भले हैं तो हम तुम्हारे
तुम्हारे होकर हम हैं दुःखी दया करो हे दयालु बाबा।
प्रदान कर दो महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान–भक्ति
फिर भी कहलाओगें ताप हारी, दया करो हे दयालु बाबा।
जब तुम्हारी होगी कृपा दृष्टि, जब तुम्हारी होगी दया दृष्टि
जब तुम होंगे न्यायकारी, दया करों हे दयालु बाबा।
हमें तो एक आस तुम्हारी, जब तक रहेगी साँस हमारी।
''बाबा'' एक शरण तुम्हारी, दया करों हे दयालु बाबा।

36. भारत वंदना

भारत भू की करें वंदना
यही हमारी माता है।
यही कर्म है,यही धर्म है
सबकी भाग्य–विधाता है।।
तुच्छ स्वार्थ से ऊपर उठकर
नव–नव मंगल कार्य करें।
मिल–जुलकर सब रहे प्रेम से
सबका ही उत्थान करें।।
जाति–पाँति के बंधन तोड़ें
वर्ग–भेद को चूर करें।
मिल–जुलकर सब बाँटे–खाएँ
मेरा–तेरा यह दूर करें।।

37. हे शारदे माँ!

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ!
हमें भी तो वीणा की झंकार दे माँ।।
हे शारदे.............

तू स्वर की देवी, वेदों की वाणी,
तू ज्ञानगंगा, ब्रह्मा ने मानी।
अँधेरा मिटाकर, उजाला लुटा दो,
हमें भी किरन का सुउपहार दे माँ।।
हे शारदे............

हम हैं अकिंचन खड़े द्वार तेरे,
श्रद्धा की माला लिये हाथ मेरे।
हम हैं भिखारी,हम हैं पुजारी,
हमें ज्ञान का भी, तू अधिकार दे माँ।।
हे शारदे...........

तन भी समर्पित,मन भी समर्पित,
सुमन अर्चना के चरण में समर्पित।
स्वीकार लो माँ, विमल भक्ति मेरी,
कृपा–कोर से तू हमें तार दे माँ।।
हे शारदे............

हमारे हृदय का कु–अज्ञान हर ले,
सत्यं शिवं सुन्दरं ज्ञान भर दे।
तीनों भुवन में सुयश गा सकूं मैं,
गिरा का मुझे भी अलंकार दे माँ।।
हे शारदे............

ऋषियों के तप का, मुनियों के जप का,
यज्ञों की आहुति का मर्म ' उपनिषद्' का।
सभी में तुम्हारी दया का सुफल है,
हमें भी गहन तत्व का सार दे माँ।।
हे शारदे.............

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ।
हमें भी तो वीणा की झंकार दे माँ।।
हे शारदे............

38. हे हंसवाहिनि! ज्ञानदायिनि!

हे हंसवाहिनि! ज्ञानदायिनि!
अम्ब! विमल मति दे, अम्ब! विमल मति दे।
जग सिरमौर बनाये भारत,
वह बल विक्रम दे, वह बल विक्रम दे।
हे हंसवाहिनि! ज्ञानदायिनि!
अम्ब! विमल मति दे, अम्ब! विमल मति दे।
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे,
संयम सत्य स्नेह का भर दे,
स्वाभिमान भर दे, स्वाभिमान भर दे।
हे हंसवाहिनि! ज्ञानदायिनि!
अम्ब! विमल मति दे, अम्ब! विमल मति दे।
लव, कुश, ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्राण हरें कम,
सीता, सावित्री, दुर्गा मां,
फिर घर घर भर दे, फिर घर घर भर दे।
हे हंसवाहिनि! ज्ञानदायिनि!
अम्ब! विमल मति दे, अम्ब! विमल मति दे।

39.दीनबन्धु! कृपासिंधु!

दीनबन्धु कृपा सिन्धु, कृपा– बिन्दु दो प्रभु
उस कृपा की ही बून्द से है बुद्धि ऐसी दो प्रभु ,
जिस तरफ देखूं उधर ही दरस हो श्रीराम का,
आँख भी खोलूं तो देखूं मुख कमल घनश्याम का। दीनबन्धु! पासिन्धु!.
आप ही में आ मिलूं प्रभु यह मुझे वरदान दो
विघितरंग समुद्र में जैसे मुझे भी स्थान दो। दीनबन्धु! कृपासिन्धु!.....
छूट प्यार दुःख सारे, क्षुद्र सीमा दूर हो,
द्वैत की दुविधा मिटे, आनंद में भरपूर हो, दीनबन्धु! कृपासिन्धु!..........
उस कृपा की ही बून्द से है बुद्धि ऐसी दो प्रभु ।।

40.हे प्रभो! आनंददाता

हे प्रभो! आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।
लीजिए हमको शरण में,हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्म–रक्षक, वीर– व्रतधारी बनें।।
कीजिए हम पर कृपा, ऐसी मेरे परमात्मा।
मोह–मद–मत्सर–रहित,होवे हमारी आत्मा।।
शत हमारी आयु हो प्रभो!लोक के उपकार में।
हाथ डालें हम कभी ना, भूलकर अपकार में।।

41.वह शक्ति हमें दो

वह शक्ति हमें दो दयानिधे!
कर्तव्य–मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा, पर उपकार में हम,
जगजीवन सफल बना जाएँ।।
वह शक्ति ....
जो है अटके–भूले–भटके,
उनको तारें, खुद तर जाएँ।
हम दीन–दुखी, निर्बल–बिचलों के,
सेवक बन संताप हरें।।
वह शक्ति ....
छल–दम्भ–द्वेष– पाखड–झूठ
अन्याय से, निसदिन दूर रहे ।
जिस देश–जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ।।
वह शक्ति ....

42. इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रास्तें पें हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
इतनी शक्ति हमें देना दाता................

दूर अज्ञान के हो अंधेरे तू हमें ज्ञान रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहे जितनी भी दे भली जिंदगी दे।।
बैर हो ना किसी का किसी से भावना मन में बदलें की हो ना।
हम चलें नेक रास्ते पें हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
इतनी शक्ति हमें देना दाता................

हम अंधेरे में है रोशनी में खो ना दे, खुद का ही दुश्मनी में
हम सजा पाए अपने किए की मौत भी हो तो सह ले खुशी से
कल जो गुजरा है फिर ना गुजरे आने वाला कल ऐसा होगा।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भुलकर भी कोई भूल हो ना।।
इतना शक्ति हमें देना दाता.................

हम ना सोचे हमें क्या मिला है, हम यह सोचे किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन भी बन जाए मधुबन
अपनी करूणा का जल तू बहा के कर दे पावन हर एक मन का
हम चलें नेक रास्ते पे हमसे भुलकर भी कोई भूल हो ना
इतना शक्ति हमें देना दाता.................

43. हमको मन की शक्ति देना

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हम को मन की शक्ति देना
भेदभाव अपने दिल से साफ कर सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ कर सकें
झूठ से बचे रहे, सुख का दम भरें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हम को मन की शक्ति देना
मुश्किलें पड़ें तो हम पें, इतना कर्म कर
साथ दे तो धर्म का, चलें तो धर्म पर,
खुद पें हौसला रहे, बदी से ना डरे
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हम को मन की शक्ति देना

44. वैष्णव जन तो तेने कहिए

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाणे रे
पर दुःख उपकार करे तोय, मन अभिमान न आणे रे।।
सकल लोक माँ सहुने बन्दे, निन्दा करे न केनी रे
वाच काच, मन निश्चल राखे, धन –धन जननी तेनी रें।।
समदृष्टि में तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे
जिहा थकि असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे।।
मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे
राम नाम शुं ताली लागी, सकल तिरथ तेना तनमारे ।।
वण लोभी ने कपट रहित दे, काम क्रोध नी माया रे
भणे नरसैयो तेनू दरशन करतां, कुल एकोतेर तार्या रें।।

45. ईश्वर अल्लाह तेरो नाम

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान्
सबको सन्मति दे भगवान, सारा जग तेरी संतान।।
इस धरती पर बसने वाले, सब हैं तेरी गोद के पाले
कोई नीच न कोई महान् सबको सन्मति दे भगवान।।
सबको सन्मति दे...................
जातों, नस्लों के बँटवारे, झूठ कहाँ ये तेरे प्यारे
तेरे लिये सब एक समान, सबको सन्मति दे भगवान।।

46 अल्लाह तेरो नाम

अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान
अल्लाह तेरो नाम...................
माँगों का सिन्दूर ना छूटे
माँ– बहनों की आंस न तूटे
देह बिना दाता भटके ना प्राण
सबको सन्मति दे...................
अल्लाह तेरो नाम...................
ओ सारे जग के रखवाले
निर्बल को बल देने वाले
बलवानों के दाता, बलवानों को दे दें ज्ञान
सबको सन्मति दे...................
अल्लाह तेरो नाम ईश्वर तेरो नाम

47 ए मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चले और, बदी से डरे,
ताकि हंसते हुए निकले दम।।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम.................
यह अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा,
हो रहा बेखबर कुछ, न आता नजर
सुख का सुरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम
तू अमावस करदे पूनम।।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम.................
जब जुल्मों का हो सामना, जब तू ही हमें थामना
वे बुराई करें, हम भलाई करें,
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे बैर का यह भरम।।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम.................
बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है
इसमें कमी, पर तू जो खड़ा है दयालु बडा,
तेरी कृपा से धरती थमी,
दिया तूने हमें जो जनम
तू ही झेलेगा हम सब के गम।।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम................

48. तू प्यार का सागर है

तू प्यार का सागर है, तेरी एक बून्द के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने, चले जाएंगे जहाँ से हम।।
घायल मन का पागल पंछी, उड़ने को बेकरार
पंख हैं कोमल, आँख है धुंधली,जाना है सागर पार।।
अब तू ही इसे समझा राह, भूले थे कहाँ से हम,
तू प्यार का सागर.....................
इधर झूम के गाये जिन्दगी, उधर है मौन खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी।।
कानों में जरा कह दें कि आये कौन दिशा से हम,
तू प्यार का सागर....................

49.उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है।।
उठ नींद से अँखियां खोल जरा
और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत की रीत नहीं
प्रभु जागत है तू सोवत है।।
जो काल करे सो आज कर ले
जो आज करे सो अब कर ले।
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया
अब पछताये क्या होवत है।।
नादान भुगत करनी अपनी
ओ पापी पाप चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस भरी
फिर सिस पकड़ क्यों रोवत है।।
उठ जाग मुसाफिर...................

50.राजस्थानी म्हारी भाषा

राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......
मां सारद रौ वरदान, म्हांनै दीन्यौ जग रौ ग्यान।
म्हारी मायड़ जीं नै दूध रै संग में प्याई हो।।
राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......
मनभाती सरितावां, रस रा मीठा झरणा।
अलंकार री ल्हैरां, छंद—छंद री पाळां।
सबद समंदर थारौ, इमरत मंथन हाळौ ।
अरथां रौ नीर अपारौ, प्रेमी डूब—डूब उच्चारौ।।
राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......
टोडरमल रा मुड़िया आंक, थारी महाजनी री बांक।
रासौ रचना थारी नाक, आखौ डिंगल राखै धाक।
थारी सैनाणी बेजोड़, पीथळ—पाथल री ना होड़।
थारा ब्यावला निराळा, थारा ख्याल बड़ा मतवाळा।।
राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......
राजा—रजवाड़ां री वाणी, सरसी बरस सात सौ ताणी।
समरथ है साहित्य अपार, ललक हुकांर और फूंकार।
मीरा भगती प्रेम समायौ, नटवर नागर रौ गुण गायौ।
ढोला—मारु रामू—चनणा, होग्या अमर प्रेम री गणना।।
राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......
मरूधरा रा पूतां बोलौ, विगतां री पुड़ता खोलौ।
हिवड़ा रा हेला स्हारौ, भाषा री नाव उबारौ।
यौ खून रंग्यौ रग बोलै, यौ मिनखपणै नै तोलै।
कर द्यौ पाछा बै काम, न भूलै मांडौ यूं चितराम।।
राजस्थानी म्हारी भाषा,सोवणी—मनमोवणी हो......

51. भगवन्! मदीयदेशे सुखिनो जनाः भवन्तु

भगवन्! मदीयदेशे सुखिनो जनाः भवन्तु,

मेधाविनश्च सर्वे गुणशालिनो भवन्तु।

विश्वेश! विश्वमूर्ते! करूणा तथा विधेया।

स्वाधीन भारतेऽस्मिन् मुदिताः सुखं वसन्तु।। भगवन्०।।

पूज्यस्वपूर्वजानां रीतिं प्रशस्तनीतिम्।

निजसंस्कृतिं पुराणीं सुधियो न विस्मरन्तु ।। भगवन्०।।

सर्वज्ञ! हे दयालो! करू भारते प्रसादम्।

गेहेषु गोरसानां सरितः पुनः सरन्तु।। भगवन्०।।

भवतु प्रभो! अस्मदीया भूमिः सदान्नपूर्णा।

स्वालम्बनस्य सर्वे पाठं पुनः पठन्तु।। भगवन्०।।

साहित्यसेवनेन विज्ञानवर्धनेन।

यशसा श्रिया लसन्तः समयं नराः नयन्तु।। भगवन्०।।

आढ्योऽथवा दरिद्रो देशः प्रियः पितेव।

चित्ते स्वदेशमानं नहि मानिनस्त्यजन्तु।। भगवन्०।।

विश्वम्भर! त्वमेव ननु विश्वपालकोऽसि।

त्वामेव भारतीयाः भूतिप्रदं नमन्तु।।

भगवन्! मदीयदेशे सुखिनो जनाः भवन्तु।

मेधाविनश्च सर्वे गुणशालिनो भवन्तु।।

52. भवतु भारतम्

शक्तिसम्भृतं युक्तिसम्भृतं

शक्ति–युक्तिसम्भृतं भवतु भारतम्।।

शस्त्रधारकं शास्त्रधारकं

शस्त्रशास्त्रधारकं भवतु भारतम्।।

रीतिसंस्कृतं नीतिसंस्कृतम्।

रीति–नीतिसंस्कृतं भवतु भारतम्।।

कर्मनैष्ठिकं धर्मनैष्ठिकं

कर्म–धर्मनैष्ठिकं भवतु भारतम्।।

भक्तिसाधकं मुक्तिसाधकं

भक्ति–मुक्तिसाधकं भवतु भारतम्।।

School Prayer in English

53. We shall overcome (by mahalia jackson)

We shall overcome, we shall overcome,
We shall overcome someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We shall overcome someday.
The lord will see us through, The Lord Will see us through,
The lord will see us through someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We shall overcome someday………
We're on to victory, We're on to victory,
We're on to victory someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We're on to victory someday………
We'll walk hand in hand, we'll walk hand in hand,
We'll walk hand in hand someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We'll walk hand in hand someday………
We are not afraid, we are not afraid,
We are not afraid today;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We are not afraid today………
The truth shall make us free, the truth shall make us free,
The truth shall make us free someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
The truth shall make us free someday………
We shall live in peace, we shall live in peace,
We shall live in peace someday;
Oh, deep in my heart, I do believe,
We shall live in peace someday………

54.Prayer for Our Motherland

Where The Mind Is Without Fear (by Rabindranath Tagore)

Where the mind is without fear and the is held high;
Where Knowledge is free;
Where the world has not been broken up into fragments
by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms towards
perfection;
Where the clear stream of reason has not lost its way
into the dreary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by thee into ever-widening
thought and action—

Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

55. All Things Bright and Beautiful

(Author: Ce-cil F. Al-ex-an-der, Hymns for Lit-tle Child-ren, 1848)

All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
Each little flower that opens, Each little bird that sings,
He made their glowing colors, He made their tiny wings.
All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
RefrainThe rich man in his castle, The poor man at his gate,
He made them, high or lowly, And ordered their estate.
All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
The purple headed mountains, The river running by,
The sunset and the morning That brightens up the sky.

All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
The cold wind in the winter, The pleasant summer sun,
The ripe fruits in the garden, He made them every one.
All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
The tall trees in the greenwood, The meadows where we play,
The rushes by the water, To gather every day.
All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.
He gave us eyes to see them, And lips that we might tell
How great is God Almighty, Who has made all things well.
All things bright and beautiful, All creatures great and small,
All things wise and wonderful: The Lord God made them all.

56. Thanksgiving Prayer for Children

Lord, thank you for the flowers and thank you for the trees

Thank you for my special friends and all the fun they bring

Thank you for the food I eat and thank you for my drink

But most of all I thank you for the way you love me

57. prayer for the new year

featuring the inspiring ancient celtic prayer
“God, bless to me the new day”,
as well as an Anglican prayer of dedication and
a modern prayer for the coming year.

6. ध्यान स्थिति (मंत्र)

गुरू–ध्यान

गुरूब्रह्मा, गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

सूर्य–ध्यान

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो।
सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।
अनन्त शक्ति मणिर्भूषणेन।
वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययम्।।

गायत्री–ध्यान

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात।।

ब्रह्मनाद–ध्यान

तीन बार ऊँ की ध्वनि।

प्रातः स्मरण–ध्यान

कराग्रे वसति लक्ष्मी। करमध्येच सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।।

दीप–ध्यान

दीप ज्योतिः परम ज्योतिः दीप ज्योतिः जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिः नमोऽस्तुते।।
शुभंकरोतु कल्याणं आरोग्य सुख सम्पदां।
द्वेष बुद्धि विनाशाय, आत्म ज्योतिः नमोऽस्तुत।।
आत्मज्योतिः प्रदीप्ताय, गुरू ज्योतिः नमोऽस्तुतते।
गुरू ज्योतिः प्रदीप्ताय, परम ज्योतिः नमोऽस्तुते।।

श्री लक्ष्मी–ध्यान

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरि प्रिये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं! दयानिधि।।

श्री हनुमत–ध्यान

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं, ज्ञानिनामग्र गण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपति वरदूतं वातजातं नमामि।।

7. झण्डा गीत

1. हिन्द देश के प्यारे झण्डे

हिन्द देश के प्यारे झण्डे उड़ो गगन में शान से
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में – 2
रंग हरा धरती हरियाली जिस पर फसलें लहराती।
केशरिया रंग वीरों का सुन शत्रु सेना घबराती।।
चक्र कहे बढ़ते ही जाओं बढ़ो जवानों शान से।
हिन्द देश के प्यारे झण्डे उड़ो गगन में शान से
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में।।
श्वेत सत्य का हैं प्रतीक जो हमको ऐसा बतलाये
सत्य से कदम ना डिगने पाये चाहे मुसीबत कैसी आये।
सत्य हमारा आभूषण है, पहनो इसको शान से
हिन्द देश के प्यारे झण्डे उड़ो गगन में शान से
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में।।
भारत मां के हर नर–नारी प्यार इसे हम करते है।
बूढ़े तो क्या बच्चे भी इसके खातिर मर मिटते हैं।।
यही तिरंगा प्यारा हमको, लगता अपनी जान से
हिन्द देश के प्यारे झण्डे उड़ो गगन में शान से
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में।।
हम सब मिलकर बाहर तक इसका मान बढ़ाये
शीश ना इसका झुकने पाये, जान भले ही जाये।
जय हिन्द भारत का नारा गुंजेगा संसार में,
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में।।
हिन्द देश के प्यारे झण्डे उड़ो गगन में शान से
तेरा शीश बुलन्द होगा, चन्दा संग आसमान में।।

2. हिन्द देश का प्यारा झण्डा

हिन्द देश का प्यारा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।।
केसरिया रंग भरने वाला, सदा सच्चाई है।
हरा रंग है हरी हमारी धरती की अंगड़ाई है।।
और चक्र यह बता रहा है, कदम कभी नहीं रूकेगा।
ऊँचा सदा.....................................
हिन्द देश का ....
नहीं चाहते हम दुनियां में अपना राज जमाना।
नहीं चाहते औरों के मुंह की रोटी खा जाना।।
सत्य न्याय के लिए हमारा, लहु सदा बहेगा।
ऊँचा सदा.......................................
हिन्द देश का.................................
हम कितने सुख, सपने लेकर, इसको लहराते हैं।
इस झण्डे पर मर–मिटने की कसम सभी खाते हैं।।
हिन्द देश का यही झण्डा घर–घर में फहरेगा।
ऊँचा सदा.......................................
हिन्द देश का ....

3. प्यारे तिरंगे तू है शान हमारी

प्यारे तिरंगे तू है शान हमारी, हम बली जायें, पर सर ना झुकायें।
जान तुझपे फिदा रे, जान तुझपे फिदा रे।
यारे तिरंगे ....
गांधी, आजाद और भगत सिंह ने बली चढ़ाई
कई गुमनाम शहीदों ने भी, तुझ पर बली चढ़ाई।
शीश कटा के प्राण चढ़ाये, ये तिरंगा प्राणों से प्यारा
प्यारे तिरंगे ....
जान तुझपे ....
सुभाष चन्द्र और भगतसिंह ने जान की बाजी लगाई
तेरे खातिर ये तिरंगा, वीरों ने शक्ति लगाई
जान लुटाकर तुझपर तिरंगा रे तिरंगा
प्यारे तिरंगे ....
जान तुझपे ....

4. ऐ तिरंगा, ऐ तिरंगा

ऐ तिरंगा, ऐ तिरंगा प्यारा लगे मेरे देश का, मेरे देश का।
तिरंगा मेरा प्यारा, वतन दुलारा।
इसे ऊँचा रखना कहीं भूल न जाना।। ऐ तिरंगा ....
इसके खातिर लाखों–लाखों शहीद हुए।
वीर भगत हंसते हुए फांसी पर चढ़े। ऐ तिरंगा ....
ऐसे में गांधी जी पीछे नहीं रहे।
वो भी अपने देश की खातिर मर–मिटे।।
गंगा–यमुना इस भारत की शान है।
ऊँचा तिरंगा इस भारत का गौरव है।
इसके तीनों रंग हमारी जान हैं।। ऐ तिरंगा ....

5. म्हाने ध्वज तिरंगो प्यारो लागे

म्हाने ध्वज तिरंगो प्यारो लागे ये मां।
आजादी पर म्हे बली जा स्यां।।
म्हाने ध्वज ....
तिरंगा रो केशरियो शहीदां रो रूप है।
ओ म्हे तो शहीदां न शीश नवास्यां ये मां।।
आजादी पर ....
म्हाने ध्वज ....
तिरंगा रो धोळो रंग एकता रो रूप है।
तिरंगा रो हरियो रंग, खुशहाली रो रूप है।
ओ म्हे तो हंस–हंस गीतड़ल्या गावां ये मां।।
आजादी पर ....
म्हाने ध्वज ....
तिरंगा रो चक्र प्रगति रो रूप है।
ओ म्हे तो दिन–दिन बढ़ता जावां ये मां।।
आजादी पर ....
म्हाने ध्वज ....

6. हिन्द देश रो झण्डो प्यारो लागे

हिन्द देश रो झण्डो प्यारो लागे ये माय।
झण्डा तो फहरावां, म्हे जा स्यां।।
केसरियो रंग वीरता रो सूचक ये माय।
वीरां री गाथा म्हे गा स्या ये माय।
धोळो–धोळो रंग गांधी जी री याद दिलावे ये माय।
शान्ति री स्थापना म्हे कर स्यां ये माय।।
हिन्द देश...
झण्डा तो ....
हरियो रंग धरती री अंगड़ायी ये माय।
समृद्धि राँ कारज म्हे करस्या ये माय।
म्हाने भारत रा वीर प्यारा लागे ये माय।
वीरां री बलिहारी म्हे जा स्यां ये माय।।
हिन्द देश...
झण्डा तो ....

7. ऊँचो, ऊँचो उड़े गगन में

ऊँचो, ऊँचो उड़े गगन में, प्यारो देश निशान जी।
आजादी रा रखवाला रो, ऊँचो उड़े निशान जी।।
तीन रंग से बण्यों तिरंगो, बीच चक्र यूं बिराजे है।
त्याग, प्रेम और खुशहाली से, सिंगारां से साजे रे।
मायड़ धरती री मरियादा, आन, बान और शान जी।।
आजादी रा ....
ऊँचो, ऊँचो ....
आगे बढ़ने करे उजाला, यूं देवे वरदान जो।
घोर अँधेरी काली राताँ, तूफानाँ में साथ जी।
भूल्या–भटक्याँ म्हे तो देख्या वीरां रो प्रकाश जी।।
आजादी रा ....
ऊँचो, ऊँचो ....
आज करोंड़ा माथा नवता, नवता जमता मान की।
तन–मन–धन से करां निछावर म्हे भारत की सन्तान जी।।
आजादी रा ....
ऊँचो, ऊँचो ....

8. कौमी तिरंगे झण्डे ऊंचे रहो

कौमी तिरंगे झण्डे ऊंचे रहो जहाँ पे।
हो तेरा सर बुलन्द, जो चाँद आसमां में।।
कौमी तिरंगे ....
तू मान है हमारा तू शान है हमारी।
तू जीत का निशां है, तू जान है हमारी।
हर एक के लब पर जारी हो ये दुआ।।
कौमी तिरंगे ....
हो तेरा सर ....
आकाश और जमीं पे हो तेरा बोलबाला।
झूके जाये तेरे आगे, हर ताज तख्त वाला।
कट कर भी नजर में तू अमन का निशां है।।
कौमी तिरंगे ....
हो तेरा सर ....
हो इस तरफ मुझ पर साया तेरा जहाँ पे।
मुस्ताफ बेनवा भी खुश हो के गा रहा है।
सिर पर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है।।
कौमी तिरंगे ....
हो तेरा सर ....

9. झण्डा ऊँचा रहे हमारा

विजय विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरसाने वाला, मातृ भूमि का तन–मन सारा।।
विजय विश्व ....
स्वतंत्रता के भीषण रन में, लड़कर जोश बढ़े छन–छन में।
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भय संकट सारा।।
विजय विश्व ....
इस झण्डे के नीचे निर्भय, ले स्वराज्य हम अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतत्रंता है ध्येय हमारा।।
विजय विश्व ....
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बली–बली जाओ।
एक साथ जन मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।।
विजय विश्व ....
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलायें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।।
विजय विश्व ....

10. मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा

मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा
बल बलिदान विजय का शाका, सखा सूरता निर्भयता का।
जनता की यह राजपताका, जन–जन की आंखों का तारा।।
मंगल मूर्ति ....
धरती की हरियाली है यह, सतपथ की उजियाली है यह।
बल विक्रम की लाली है यह, यह पौरूष, यह मान हमारा।।
मंगल मूर्ति ....
लहरे अचल हिमालय कर में, फैले हिन्द महासागर में।
नगर–नगर में, डगर–डगर में, गूंजे भेद गगन यह नारा।।
मंगल मूर्ति ....
इस पर न्योछावर तन–मन है, न्योछावर जीवन यौवन है।
यह सारे भारत का प्रण है, न्योछावर सर्वस्व हमारा।।
मंगल मूर्ति ....
इसमें गौरव गान भरा है, बल पौरूष बलिदान भरा है।
यौवन का अरमान भरा है, उगता हिन्दुस्तान हमारा।।
मंगल मूर्ति ....

11. झण्डा तिंरगा प्यारा

झण्डा तिरंगा प्यारा, नयनों को प्यारा लागे
कुछ लहराकर, कुछ बलखाकर आसमान में उड़ता है
पल में उड़ता, पल में रूकता कितनी अदा दिखाता है
इसमें नीला–नीला प्यारा–प्यारा चक्र कमाल का

ये नयनों को लगता हैं प्यारा।

केसरिया ये रंग इसका जन मानस में रचता है
हरा–हरा रंग इसका, जन–जन को हर्षाता है
इसका प्रखर श्वेत ये रंग सबको करता ये शांतरे
15 अगस्त और 26 जनवरी धूमधाम से आती हैं
जन–जन में उल्लास उमड़ता गीत इन्ही के गाते हैं
'शिव का गायन सुनकर सबके दिल में बहती रसधार रे
ये नयनों...
झण्डा..

8. देश भक्ति गीत

1. जहां डाल–डाल पर

जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा
वो भारत देश है मेरा, ...
जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पग–पग लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा, ...
जहाँ डाल–डाल ....
यह धरती जहाँ ऋषि मुनि जपते हरि नाम की माला।
जहाँ हर एक बालक मोहन है और राधा हर एक बाला।
जहाँ सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना डेरा।।
वो भारत देश है मेरा, ...
जहाँ डाल–डाल ....
अलबेलों की इस धरती के त्योहार भी हैं अलबेले।
कहीं दिवाली की जगमग है, कहीं होली के मेले।
जहाँ राग रंग और खुशहाली का चारों ओर है घेरा।।
वो भारत देश है मेरा, ...
जहाँ डाल–डाल ....
जहाँ आसमान से बातें करते मन्दिर और शिवालय।
किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न डाले ताला।
जहाँ प्रेम की बंशी, बजाते आये शाम–सवेरा।।
वो भारत देश है मेरा, ...
जहाँ डाल–डाल ....

2. चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है।।
चन्दन है ....
जिसके सैनिक समर भूमि में गाया करते गीता हैं।
उसी खेत में हल के नीचे खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श यहां पर परमेश्वर का धाम है।।
हर बाला ....
चन्दन है ....
जहाँ कर्म से भाग्य बदलता श्रम निष्ठा कल्याणी है।
त्याग और तप की गाथाऐं, गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान यहाँ का गंगा जल सा निर्मल है, अभिराम है।।
हर बाला ....
चन्दन है ....
मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर और हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ मां प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती सांझ है।।
हर बाला ....
चन्दन है ....

3. कर चले हम फिदा

कर चले हम फिदा जाने तन साथियो।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।।
कर चले ....
सांस थमती गई, नब्ज जमती गई।
फिर भी बढ़ते कदम नां रूकने दिया।
कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं।
मरते—मरते रहा बागपन साथियो।।
अब तुम्हारे .... कर चले ....
जिन्दा रहने के मौसम बहुत हैं मगर।
जान देने की रस्म रोज आती नहीं।
हुस्न और इश्क दोनों का रूतबा ना कर।
यह जवानी जो खून में नहाती नहीं।
अब धरती बनी है, दुल्हन साथियो।।
अब तुम्हारे .... कर चले ....
राह कुर्बानियों की ना विरान हो।
तुम सजाते रहना, नये काफिले,
फतह का जश्न के बाद हो।
जिन्दगी मौत से मिल रही है गले।
बांध लो अपने सर पे कफन साथियो।।
अब तुम्हारे .... कर चले ....

4. अब जाग उठे हैं हम

अब जाग उठे हैं हम, कुछ करके दिखा देंगे।
ए मां तेरे चरणों में आकाश झूका देंगे।।
अब जाग ....
ए मां ....
आंसू न बहा माता, मोती न लुटा माता।
हम तेरे पसीने पर, माँ खून अपना बहा देंगे।।
अब जाग ....
ए मां ....
अब होश में आये हैं, अब जोश में आये हैं।
अब उठ बैठे हैं हम, तूफान मचा देंगे।।
अब जाग ....
ए मां ....
सदियों की गुलामी को, हम सबने मिटाया है।
दुनियां के लुटेरों को, दुनियां से मिटा देंगे।।
अब जाग ....
ए मां ....

5. चित्रकार तू चित्र बना दे

चित्रकार तू चित्र बना दे, उन सैनिक मतवालों का।
मातृ भूमि हित बली वेदी, पर शीश चढ़ाने वालों का।।
चित्रकार तू ....
जौहर की ज्वाला को जगा दे, आस लगा दे प्राणों में।
नूतन शक्ति जोश जगा दे, भारत के दीवानों में।।
दुश्मन के पेंटन टैंक और जेट जलाने वालों का।
मातृ भूमि ....
चित्रकार तू ....
वीर सुभाष, महाराणा और छत्रपति शिवाजी का।
झाँसी वाली रानी और चुड़ावत क्षत्राणी का।।
कटा दिया सिर देश के खातिर जोश बढ़ाने वालों का।
मातृ भूमि ....
चित्रकार तू ....
चित्र बना केसरिया वेशी, आर्य वीर ललनाओं का।
चूड़ी वाले कमल करों में, आज पुनः तलवारों का।।
स्वतंत्रता की रक्षा खातिर, कदम बढ़ाने वालों का।
मातृ भूमि ....
चित्रकार तू ....

6. हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं।
रंग, रूप, वेश भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली।
प्यारे–प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।।
हिन्द देश ....
रंग रूप ....
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी।
गा रही तराना, बुलबुल राग मगर एक है।।
हिन्द देश ....
रंग रूप ....
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी।
जा के मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।।
हिन्द देश ....
रंग रूप ....

7. उठो साथियो समय नहीं है।

उठो साथियो समय नहीं है, ये शोभा, शृंगार का।
आज चुकाना है, ऋण हमको अपनी मां के प्यार का।।
उठो साथियो ....
बच्चे–बच्चे के हाथों में हिम्मत का हथियार दो।
जो दुश्मन चढ़कर आया है, उसको बढ़कर मार दो।
यह समय नहीं अब फूलों का, अंगारों का घर है।।
उठो साथियो ....
आज चुकाना है ....
सबसे बढ़कर शक्ति समय की आज तुम्हारे पास है।
तुम्हे खुन से अपना लिखना, आज नया इतिहास है।
लेखनियों को अस्त्र बना लो, समय नहीं अब हार का।।
उठो साथियो ....
आज चुकाना है ....
प्राण हथेली पर रखकर चलना है मैदान में।
फरक नहीं आने देना है, देश धरम की शान में।
सबसे आगे एक प्रश्न है, सीमा के बलिदान का।।
उठो साथियो ....
आज चुकाना है ....

8.सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुले हैं उसकी यह गुलिस्तां हमारा
गुरबत में ही अगर हम रहते हैं दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा
परबत हो, सबसे ऊंचा हम साया आसमाँ का
वह सन्तरी हमारा, वह पासवां हमारा...........
गोदी में खेलती हैं जिसकी हजारों नदियाँ
गुलशन हैं जिनके दम से रश्के जिनां हमारा
ऐ आबे रोदे गंगा! वह दिन हैं याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा..........
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा
यूनाना मिश्री सब रूमा मिट गए जहाँ से
अब तक मगर हैं बाकी नामोनिशां हमारा....
कुछ बात हैं कि हस्ति मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा हैं दुश्मन दौरे जहाँ हमारा
इकवाल कोई मरहम अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा......

9. जो शहीद हुए हैं उनकी

जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करों कुर्बानी
ऐ मेरे वतन के लोगों तुम खूब लगाओ नारा
ये शुभ दिन हैं हम सबका,लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर वीरो ने प्राण गवाए
कुछ याद उन्हे भी कर लो, जो लोट कर घर न आए
ऐ मेरे वतन के लोगो,जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी ऐ,
जब घायल हुआ हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी
जब तक थी साँस लड़े बस फिर अपनी लाश बिछा दी
हो गए वतन पर निछावर वो वीर थे कितनी गुमानी
जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी।।
जब देश में भी दीवाली वो खेल रहे थे होली।
जब हम बैठे थे घरों में वो झेल रहे थे गोली
ये धन्य जवान वो अपने थी धन्य वो उनकी जवानी
जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी।।
शेरों की तरह झपटे थे भारत के बहादुर बेटे
इस मुल्क की लाज बचाके मर गए बर्फ पर लेटे
संगीन पर धरकर माथा सो गये वीर बलिदानी
जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी
कोई सिख कोई जाट मराठा, कोई गोरखा कोई मदरासी
सरहद पर मरने वाला हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर वह खून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी।
थी खून से लथपथ काया फिर गिर गये होश गंवा के
जब अन्त समय आया तो कह गये कि हम मरते हैं।
खुश रहना ऐ देश के प्यारों अब हम तो सफर करते हैं।
तस्वीर नयन में खींचो क्या लोग थे वे अभिमानी
जो शहीद हुये हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी।।

10. हम भारत के भरत

हम भारत के भरत, खेलते शेरों की सन्तान से।
कोई देश नहीं दुनियॉ में, बढ़कर हिन्दुस्तान से।।
इस मिट्टी में पैदा होना, बड़े गर्व की बात है।
साहस और वीरता अपने, पुरखों की सौगात है।।
बड़ी–बड़ी ज्वालाओं से कम, नहीं यहाँ चिनगारियाँ
काँटे पहले, फूल बाद में, देती हैं फुलवारियाँ।।
कभी दहकते, कभी महकते, जीते–मरते शान से।
कोई देश नहीं दुनियाँ में, बढकर हिन्दुस्तान से।।
कूद समर में आगे आए, जब भी हम ललकारने।
उँगली दाँतो तले दबाई, अचरज से संसार ने।।
सदियों से बनते आए हैं, हम पन्ने इतिहास के।
त्याग और बलिदान हमारे व्रत हैं बारह मास के।।
जब भी निकला हीरा निकला, यहाँ किसी भी खान से
कोई देश नहीं दुनियाँ में, बढकर हिन्दुस्तान से।
यह धरती जो माँ है अपनी, हमें जान से प्यारी है।।
हर बालक के जिम्मे इसकी, चौकस पहरेदारी है।।
बोलो–मेहनत खूब करेंगे, कठिन परीक्षा आई है।
माँ का दूध पिया जो है, सौगन्ध उसी की खाई है।।
इसी उम्र में परिचय पा लें, हम श्रम से, बलिदान से।
कोई देश नहीं दुनियाँ में, बढ़कर हिन्दुस्तान से।।

11.हम हिन्दुस्तानी

छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी
नए दौर में लिखेंगे मिलकर नई कहानी हम हिन्दुस्तानी–2
आज पुरानी जंजीरों को तोड़ चुके हैं
क्या देखें उस मंजिल को जो छोड़ चुके हैं
चांद के दर पर जा पहुँचा है आज जमाना
नये जगत से हम भी नाता जोड़ चुके हैं
नया खून है नई उमंगे, अब है नई जवानी हम हम हिन्दुस्तानी–2
हमको कितने ताजमहल हैं और बनाने
कितने ही अजन्ता हमको और सजाने
अभी पलटना है रूख दरियाओं का
कितने पर्वत राहों से हैं आज हटाने
नया खून है, नई उमंगें, अब है नई जवानी हम हिन्दुस्तानी–2
आओ मेहनत को अपना ईमान बनाए
अपने हाथों से अपना भगवान बनाए
राम की इस धरती को गौतम की भूमि को
सपनों से भी प्यारा हिन्दुस्तान बनाएँ
नया खून है, नई उमंगे, अब है नई जवानी हम हिन्दुस्तानी–2
दाग गुलामी का धोया हैं जान लुटा के
दीप जलाए है कितने ही दीप बुझा के
ली हैं आजादी तो इस आजादी को
रखना होगा हर दुश्मन से आज बचा के
नया खून है नई उमंगें अब है नई जवानी हम हिन्दुस्तानी–2
हर जर्रा हैं मोती आँख उठा कर देखों
मिट्‌टी में सोना हैं हाथ बढ़ाकर देखों
सोने की यह गंगा है चाँदी की जमुना
चाहो तो पत्थर से धान उगाकर देखों
नया खून हैं, नई उमंगें, अब है नई जवानी
हम हिन्दुस्तानी–2

12. भारत हमको प्यारा

भारत हमको प्यारा, ये प्यारा देश हमारा
हम सबको प्रणों से प्यारा.....
पढ़ें–लिखें कुछ नाम कमाएं, भारत को ऊंचा चमकाएं।
त्याग, तपस्या का प्रण लेकर, न्योछावर तन–मन–धन सारा।
भारत हमको प्यारा, ये प्यारा देश हमारा, हम सभी को प्राणों से प्यारा।
भारत हमको, जान से प्यारा है, सारे जग में सबसे न्यारा है।
शान है इसकी अजब निराली, चारों तरफ यहां फैली खुशहाली.....
शांति–एकता का यहां समन्वय, रोशन करता जग को सारा।

13. आजादी

आजादी के पर्व को, नए सोच से मनाएं,
भूल गए हैं जिनको, उनका कर्ज चुकाएं
देश के लिए, त्याग और बलिदान,
देने वालों को याद करो, आजादी के परवानो को अब तो प्रणाम करो
समय आ गया है, भय मुक्त समाज बनाने का
भष्ट्राचार मिटाने का,अपना फर्ज निभाने का
आने वाली पीढी को निरंतर
नयी राह–दिखाने का जो भूल हुई है हमसे,
उसको नहीं दोहराना है
पिछले पापों को,अब तो धो डालो,
अब तक जो किया नहीं अब तो कर डालो
देश को फिर से सोने की चिड़िया बना लो

14.भारत प्यारा देश हमारा

भारत प्यारा देश हमारा
सब देशों से न्यारा
गोद में इसके अनगिनत नदियाँ बहती हैं
गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों कहती हैं
उनका ये मिलन कहा जाता संगम
प्रयाग तीर्थ राज में बहती त्रिवेणी धारा,
सिर पर तेरे खड़ा हिमालय कहलाता वो ताज,
चरणों को धोता सागर रखता मां की लाज,
केरल है हरा, कर्नाटक चंदन से भरा,
कश्मीर महके केसर की भीनी खुशबू से सारा।
नील गगन भी हंस रहा खुश होकर आज,
आजादी के दिवस परसर्वत्र बज रहे साज,
आई शुभ घड़ी लाई, खुशियों की लड़ी,
गाएं हम सब मिलकर भारत तुझ पर नाज।
भारत प्यारा देश हमारा
सब देशों से न्यारा।

9 स्वागत गीत

1. हम चकोर हो निरख रहे

हम चकोर हो निरख रहे हैं, मुख, मंयक, महान्।
आओ जी आपका स्वागत है श्रीमान् – 2
खिल गई दिल की कली कि आप पधारें हैं।
हम पर आज बहुत उपकार तुम्हारे हैं।
आज खुशी से नाच उठे हैं, हम लेंगे तुमसे ज्ञान।
हम चकोर हो निरख रहे हैं, मुख, मंयक, महान्।
आओ जी आपका स्वागत है श्रीमान् – 2
जब तक गंगा जमुना में है, तब तक है भूचाल रहे।
जब तक रोशन रहे आपका गौरव और गुणगान रहे।
राहों में हम फूल बिछाये करें दिलों से प्यार।
हम चकोर हो निरख रहे हैं, मुख, मंयक, महान्।
आओ जी आपका स्वागत है श्रीमान् – 2
अभिवादन हम बच्चों का स्वीकार करें।
मुख्य अतिथि बन करके उपकार करें।
अपने जीवन में ढ़ालेंगे आपके उच्च विचार।
हम चकोर हो निरख रहे हैं, मुख, मंयक, महान्।
आओ जी आपका स्वागत है श्रीमान् – 2

2. स्वागत है श्रीमान् आपका

स्वागत है श्रीमान् आपका – 3

तन मन धन सबकुछ अर्पण है, पुलकित सब यहां प्रांगण है।
किया निहाल आपने हमको, किस विध सत्कार करें हम आपका।
स्वागत है श्रीमान् आपका ....
आप हमारी शाला में पधारे विकसित नव पल्लव हरसाये।
वेद मंत्र नहीं जानते, किस विध अर्पण करें आपका।
स्वागत है श्रीमान् आपका ....
अहो भाग्य हैं आज हमारे, आज यहां श्रीमान पधारे।
शत–शत मस्तक नम होता है शाला का, लेने आशीर्वाद आपका।
स्वागत है श्रीमान् आपका ....

3. म्हे करां थारी मनुहार

म्हे करां थारी मनुहार, प्यारा पावणियां।
बाटडळी जोवां म्हे थारी, सुणले आज पुकार प्यारा पावणियां।।
म्हे करां ....
फूलां रो म्हे हार बणायो, थारे गळे में म्हे पहनायो।
सुरत थारी लागे प्यारी, थारो रूप रंगलो भावे।
पावणियां रूप रंगीलो भावे।।
म्हे करां ....
बाटड़ळी ....
आज म्हांको मान बढ़ायो, आज पधारिया सा।
प्यारा पावणियां
म्हे करां ....
बाटड़ळी ....

4. म्हे स्वागत थांको करां

म्हे स्वागत थांको करां सा, प्यारा मेहमान – 2
प्यारा मेहमान ....
म्हे स्वागत ....
आज शुभ दिन शुभ घड़ी आयी, सगळां का मन में भायी।
आ जनता हर्षित हो गई, ओ प्यारा मेहमान।
प्यारा मेहमान ....
म्हे स्वागत ....
म्हे मंगल हार पहनावां, म्हे बल–बल थां पर जावां।
म्हे खुशियां आज मनांवा सा,
प्यारा मेहमान ....
म्हे स्वागत ....
शेखावाटी खाचरियावास में सरस सुहाती सा।
डिंगल प्यारी लागे सा प्यारा मेहमान।
प्यारा मेहमान ....
म्हे स्वागत ....

5. रूनक–झुनक म्हारी पायल बाजे

रूनक–झुनक म्हारी पायल बाजे, आये अतिथि द्वार स्वागत करते हैं।
मंगलमय म्हे गीत सुणावां, पावणियां रो मान बढ़ावां।
घणी करां मनवार, स्वागत करते हैं। रूनक–झुनक ....
निर्मल जल से पगल्या धोवां, माथे पर थांके तिलक लगावां।
गले फूल रो हार स्वागत करते हैं। रूनक–झुनक ....
शुभ दिन म्हारो ऐसो आयो, नील गगन में झण्डो छायो
दीपक आरती उतार स्वागत करते हैं।
रूनक–झुनक ....

6. आपके आ जाने से आई है बहार।

स्वागत करते हैं श्रीमान् आपका, स्वागत करते हैं श्रीमान् आपका।
आपके आ जाने से आई–आई है बहार, देखो सारी शाला में।।
स्वागत है ....
कुमकुम कुसुम की माला बनायें, कर कमलों से गले में पहनायें।
आपके सम्मान से आयी है बहार, देखो सारी शाला में।।
स्वागत है ....
हाथ जोड़ हम विनती गायें, आशीर्वाद आपका पायें।
आपके वरदान से आई–आई है बहार, देखो सारी शाला में।।
स्वागत है ....
स्कूलों को हम मिशन बनायें, जागृति सब जन में लायें।
आपके गुणगान से आई–आई है बहार, देखो सारी शाला में।।
स्वागत है ....

10 प्रेरक प्रसंग

1. मौसी की मनुहार

एक चूहा बिल से बाहर आने के लिए बार–बार झाँक रहा था। बिल्ली को देखकर वह बाहर नहीं आ रहा था। बिल्ली उसकी ताक में बैठी थी। जब काफी देर तक चूहा बिल से बाहर नहीं आया तो बिल्ली ने उससे कहा कि –

इस बिल केरा उन्दरा, उस बिल में आ जाय।
लाख टका द्यूं रोकड़ा, बैठ्यो–बैठ्यो खाय।।

हे चूहे यदि तू मेरे सामने इस बिल से निकल कर उस बिल में आ जाये तो मैं तुझे एक लाख टका (रूपया) दूंगी। छोटे से प्रलोभन में भी आदमी उलझ जाता है। यह तो बहुत बड़ा लालच था। पर चूहे ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा कि –

भू थोड़ी भाड़ो घणों, जीवन जोखां माय।
बीच में ही गटको हुवे, कह मौसी कुण खाय।।

हे बिल्ली मौसी ईनाम देने के लिए कहा है, पर तुम मुझे बीच में ही खा जाओगी, यह मैं जानता हूँ फिर वह धन किस काम आयेगा।

2. ताते नीचे नैन

अब्दुल रहीम खान खाना अकबर के नवरत्नों मे से एक थे। वे बड़े माने हुए कवि होने के साथ–साथ बड़े दानवीर भी थे। उनके द्वार पर आया कोई भी याचक खाली हाथ नहीं लौटता था। रहीम दान लेने वाले को कभी नहीं देखते थे, क्योंकि वे हमेशा नीचे नजर रखकर दान देते थे। विनम्रता का भाव रहीम में कूट–कूट कर भरा था। अहंकार उनके पास भी नहीं फटकता था। ऐसी विनम्र दानवीरता को देखकर कवि गंग ने उसकी प्रशंसा करते हुए उनसे प्रश्न किया –

सीखे कहां नवाब जू, ऐसी देनी देन।
ज्यों–ज्यों कर ऊंचे करो, त्यों–त्यों नीचे नैन।

हे कविराज हाथ ऊपर रखकर भी नैन झुकाये क्यों रहते हो।
रहीम ने बड़ी विनम्रता पूर्वक जवाब दिया –

देनहार कोऊ और है, देत रहत दिन–रैन।
लोग भ्रम हम पे धरें, ताते नीचे नैन।।

महाशय देने वाला तो ऊपर वाला यानि अल्लाह–ईश्वर है, जो रात–दिन देने के लिए भेजता रहता है। मैं तो मात्र निमित हूँ, जिसके माध्यम से वह दान दिलवा रहा है, पर लोग यह कहते नहीं थकते कि मैं दान दे रहा हूँ। अतः इस झूंठी प्रशंसा के कारण मेरे नेत्र मारे लाज के झुके रहते हैं। देनहार की प्रशंसा न कर लोग मेरी झूंठी प्रशंसा करते हैं। इसलिए लाज से मेरी आंखे झुकी रहती हैं।

3. चार सवाल

राजा भोज की सभा में कुछ विद्वान इक्कठे हुए। राजा ने उनके सामने चार सवाल रखे।

1. सबसे विश्वसनीय मित्र कौन है?
2. सर्वश्रेष्ठ प्रकाश कौनसा है?
3. दूध किसका सबसे अच्छा है?
4. सबसे अच्छा राजा कौन है?

एक कवि ने समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए। निवेदन किया –

भाई सरीखो भट्ट नहीं, तेज न सूर्य समान।
दूध गाय सम को नहिं, भूप न भोज समान।।

यानि भाई के जैसा भरोसेमंद साथी और कोई नहीं है, सूर्य के समान कोई दूसरा प्रकाश नहीं है। दूध गाय का सर्वश्रेष्ठ है तथा राजाओं में सर्वश्रेष्ठ राजा भोज आप हैं ही। सभी उपस्थित लोगों ने इस समाधान की बड़ी प्रशंसा की। एक बुजुर्ग कवि ने कहा कि मैं इस उत्तर से सहमत नहीं हूँ। इस पर लोगों ने कहा यदि ऐसा सुन्दर

समाधान भी आपको उचित नहीं लग रहा है तो आप इससे श्रेष्ठ समाधान प्रस्तुत करें। इस बात पर उस वृद्ध कवि ने अपना समाधान दिया — भुजा सरीखो भट्ट नहीं, तेज न नैत्र समान।

दूध मात सम को नहीं, भूप न इन्द्र समान।।

यानि सबसे विश्वस्त साथी अपना स्वयं का बाहुबल है क्योकि भाई तो धोखा भी दे सकता है। सूर्य दस गुना प्रकाश करे पर यदि नेत्र ज्योति नहीं है तो वह तेज, वह प्रकाश किस काम का। इसलिए सर्वश्रेष्ठ तेज तो आँख की रोशनी है। मां के दूध सा असरकारी दूध और कोई नहीं हो सकता राजाओं में तो श्रेष्ठ इन्द्र राजा है जो सारी दुनियां में बरसते हैं, और प्राणी मात्र को जल प्रदान कर जीवन देते हैं।

4. राजा का सवाल

राजा भोज एक बार घोड़े पर सवार होकर घूमने निकले। शहर पार किया ही था कि एक बुढ़िया जिसकी कमर झुकी थी एवं लाठी के सहारे नीचे देखकर चल रही थी, अचानक राजा भोज के घोड़े के सामने आ गई। राजा भोज ने बुढ़िया से पूछा —

कांई गांठ सूं गिर पड़ियो, किणरो काढ़े खोज।

क्यों झुक चाले डोकरी, पूछे राजा भोज।।

बुढ़िया महाराज भोज से इस सहानुभूति रहित व्यंग्य से तिलमिला गई एवं उत्तर दिया —

म्हासूं तो थामें गई, उणरो काढ़ू खोज।

धास्यूं पण जासी परी, सुणरे राजा भोज।।

बुढ़िया ने करारा जवाब देते हुए कहा — हे राजा भोज, मैं उस जवानी को खोज रही हूं जो मेरे में थी और अब मेरे से आप में चली गई है। यह पक्का है कि यह चंचल जवानी आपको भी छोड़कर जाने वाली है। हे धारा नरेश यह जवानी किसी की टिककर नहीं रहती और जाकर कभी वापस नहीं आती जो आने के बाद जाता नहीं है एवं जाता है तो प्राणों को साथ लेकर ही जाता है।

5. शर्तिया ईलाज

एक नगर में एक राजा राज करता था। वह बड़ा न्यायप्रिय था। उसकी प्रजा सुखी थी। लेकिन राजा रानी दुखी थे। क्योंकि उनके कोई सन्तान नहीं थी। उसी शहर में एक किसान और एक ठग रहते थे। दोनों पड़ौसी थे। किसान गुजर–बसर के लिए खेती पर निर्भर था। ठग अपनी चालाकी के बल पर जीवित था। वह हरेक व्यक्ति को धोखा देने की कोशिश करता था। हर मौके पर कोई ना कोई चाल जरूर चलता उसके पड़ोसी किसान को ठग का यह धन्धा पसन्द नहीं था। ठग का ख्याल था कि किसान मूर्ख है उसे धोखा देना और ठगना आसान होगा।

लेकिन किसान गहरी सूझ–बूझ वाला था। एक दिन की बात हैं दोनों साथ–साथ बैठे थे ठग उसे एक ऐसे आदमी की कहानी सुनाने लगा जो हरेक व्यक्ति के मन की बात जान लेता था। किसान ने कहा यह कोई मुश्किल बात नहीं, मैं भी तुम्हारे मन में छिपी बातें और इच्छाएँ जान सकता हूँ। ठग ने कहा चलो शर्त हो जाये मैं कहता हूँ कि तुम ऐसा कभी नहीं कर सकते किसान बोला, हम बहुत बड़ी शर्त रखेंगे क्योंकि यह एक मुश्किल काम है। ठग को अपनी अक्ल पर बहुत भरोसा था। उसने किसान के खेत और उसमें खड़ी फसल के मुकाबले अपनी पूरी दौलत की शर्त रखी। किसान तुरन्त तैयार हो गया। ठग ने कहा बताओ मेरे मन में क्या इच्छा छीपी हुई है, किसान बोला भाई यह बात मैं यहां नहीं बता सकता। क्योंकि मैं जानता हूं तुम अपनी बात से फिसल जाओगे और हारने पर भी शर्त की रकम नहीं दोगे। दोनों ने तय किया कि हम राजा के पास चलें और उनके सामने अपने मन की बात बताये वे दोनों राजदरबार में पहुंचे और राजा से प्रार्थना की कि वह उनके मामले को निपटा दें। राजा अपनी प्रजा के लिए पिता की तरह था वह तुरन्त इसके लिए तैयार हो गया। इसके बाद किसान ने कुछ ऐसा दिखाया जैसे वह अपने पड़ौसी के विचार पढ़ रहा हो। फिर बोला हुजूर इनकी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि बहुत

जल्दी राजसिंहासन का कोई वारिस जन्म ले। यह सुन ठग की स्थिति बड़ी विचित्र हो गई, अगर वह इस बात से मना करता है तो इससे वह राजद्रोही समझा जायेगा और उसको या तो देश निकाला मिलेगा या फिर फांसी की सजा। अगर वह किसान की बात को ठीक बताता है तो उसे अपनी सारी दौलत से हाथ धोना पड़ेगा। काफी सोच विचार के बाद उसने किसान की बात को ही सच कहने का फैसला किया। बोला हुजूर किसान ने सच ही कहा है। इस प्रकार किसान ने शर्त जीत ली। ठग की ठगाई का शर्तिया ईलाज कर दिया। किसान को ठग की सारी दौलत मिल गई और ठग को ऐसा सबक मिला कि वह भविष्य में किसी को ठगने का साहस भी नहीं जुटा पाया।

6. टूटे छप्पर के नीचे चैन की नींद

दो संन्यासी थे, एक वृद्ध और एक युवा। दोनों साथ साथ रहते थे। एक दिन महिनों बाद वे अपने मूल स्थान पर पहुंचे जो एक साधारण सी झोंपड़ी थी। किन्तु जब दोनों झोंपड़ी में पहुंचे तो देखा कि उस छप्पर को भी आँधी ओर हवा ने उड़ा कर न जाने कहाँ पटक दिया यह देख युवा संन्यासी बड़बड़ाने लगा अब हम प्रभु पर क्या विश्वास करें । जो लोग सदैव छल फरेब में लगे रहते हैं उनके मकान सुरक्षित रहते हैं। एक हम हैं कि रात–दिन प्रभु के नाम की माला जपते हैं और उसने हमारा छप्पर ही उड़ा दिया।

वृद्ध संन्यासी ने कहा दुखी क्यों हो रहे हो ? छप्पर उड़ जाने पर भी आधी झोपड़ी पर तो छत है भगवान को धन्यवाद दो कि उसने आधी झोपड़ी को तो ढ़क रखा है।

आँधी इसे भी नष्ट कर सकती थी किन्तु भगवान ने हमारे भक्ति भाव के कारण ही आधा भाग बचा लिया। युवा संन्यासी, वृद्ध संन्यासी की बात नहीं समझ सका। वृद्ध संन्यासी तो लेटते ही निद्रा मग्न हो गया, किन्तु युवा संन्यासी को नींद नहीं आयी। सुबह हो गई और वृद्ध संन्यासी जाग उठा। उसने प्रभु को नमस्कार करते हुए कहा वाह प्रभु आज खुले आकाश के नीचे सुखद नींद आयी। काश! यह छप्पर बहुत पहले ही उड़

गया होता। यह सुनकर युवा संन्यासी झुंझलाकर बोला एक तो उसने दुख दिया उपर से धन्यवाद। वृद्ध सन्यासी ने हँसकर कहा तुम निराश हो गये इसलिए रात भर दुखी रहे। मैं प्रसन्न ही रहा इसलिए सुख की नींद सोया। संदेश यह है कि निराशा दुखदायी होती है। प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहकर ही हम ईश्वर के समीप पहुँच सकते हैं। यह काम किसी भी प्रार्थना से अधिक शक्तिशाली है।

7. व्यापारी की पत्नी

एक नगर में एक व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी सुंदर थी। एक दिन पति–पत्नी अपने रिश्तेदारों से मिलने दूसरे गांव जा रहे थे। सफर की दूरी कम होने से वे दोनों पैदल ही चल दिये। मार्ग में एक गाड़ीवान किसान ने व्यापारी की पत्नी को देखा तो उसके मन में पाप का सांप जग गया। वह व्यापारी से बोला महाशय आप कहां जायेंगे ? व्यापारी ने गांव का नाम बता दिया। किसान गांव का नाम सुनकर बोला मैं भी उसी गांव में जा रहा हूँ। आप अपनी पत्नी को मेरी गाड़ी में बिठाना चाहें तो बिठा दें। व्यापारी ने अपनी पत्नी को गाड़ी में बिठाकर खुद पैदल चल दिया। किसान ने गाड़ी में जुते बैलों को तेज दौड़ाना शुरू कर दिया व्यापारी गाड़ी के पीछे–पीछे भागने लगा। मार्ग में किसान ने उसकी पत्नी को अपनी बातों के जाल में फंसाकर अपने वश में कर लिया। जब वे उस गांव के निकट पहुँचे तो व्यापारी ने किसान को आवाज दी भाई ! ठहर जाओ, हमारा गांव आ गया है, पत्नी को उतार दो। भाई ! हमारा गांव तो आगे है और यह स्त्री मेरी पत्नी है। यह सुनकर व्यापारी दौड़कर गाड़ीवान के पास पहुँच चिल्लाने लगा, कि यह गाड़ी वाला मेरी पत्नी को नहीं उतार रहा है। व्यापारी की बात सुनकर आसपास के राहगीर खड़े हो गये लेकिन कोई फैसला नहीं कर सका कि वह स्त्री किसकी पत्नी है। इसलिए वे दोनो राजा के दरबार में पहुँचे। राजा ने उन दोनों की बातें सुनकर मंत्री से इस बात का निर्णय करने को कहा, मंत्री ने उस स्त्री को अपने पास बुलाया– क्या बात है औरत चुप रही वह कुछ नहीं बोली।

मंत्री उलझन में फंस गया। थोड़ी देर सोचने के बाद उसने उस औरत को स्याही की दवात देकर कहा इसमें पानी डालकर ले आओ। मंत्री की यह बात सुनकर औरत खड़ी हुई और दवात में पानी डालकर ले आयी। मंत्री ने दवात की स्याही लेकर एक कागज पर दो–चार शब्द लिखकर देखे। स्याही में पानी सही अनुपात में डाला गया था। मंत्री ने व्यापारी से कहा तुम अपनी पत्नी को ले जाओ। यह स्त्री तुम्हारी है। उसके बाद किसान को झूंठ बोलने और गलत आचरण करने पर सजा दी। यह देखकर राजा ने मंत्री से पूछा तुम्हे यह कैसे पता चला कि वह औरत व्यापारी की है ? मंत्री बोला राजन ! मैंने उस औरत से दवात में पानी डालने को कहा, उसने उतना ही पानी डाला जितना स्याही के लिए जरूरी था। इससे मुझे पता चल गया कि वह औरत किसान की नहीं है। व्यापारी स्याही में पानी अवश्य डलवाता होगा। उसे स्याही में पानी डालने की आदत थी। अतः स्याही में जितने पानी की जरूरत थी वह उतना पानी ही डालकर लाई। यदि वह किसान की स्त्री होती तो अनाड़ीपन से कम या अधिक मात्रा में पानी भर लाती। राजा ने मंत्री की चतुराई की तारीफ की और सही–सही न्याय करने के लिए पुरस्कृत किया।

8. उपासना

एक बार बादशाह अकबर राज्य के दौरे पर थे। दिन में नमाज का वक्त होने पर उन्होंने जाये–नमाज बिछाया और नमाज पढ़ने लगे उसी समय एक स्त्री उनके पास से गुजरी और जाये–नमाज पर पैर रखती हुई आगे चली गई। बादशाह ने यह सब देख लिया । उन्हें गुस्सा तो बहुत आया, किन्तु नमाज पढ़ते रहने के कारण कुछ बोल नहीं सके। नमाज पूरी होने के बाद बादशाह आगे चलने की तैयारी कर ही रहे थे कि वही औरत उन्हें अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। जब वह बादशाह के पास पहुँची तो उन्होंने उस औरत से कहा कि उसे देखकर चलना चाहिए। स्त्री ने हाथ जोड़कर कहा माफ करें बादशाह सलामत !

मुझे किसी से खबर मिली थी कि मेरे परदेश गये हुए पति घर लौट रहे हैं, सुनते ही मैं पागल की तरह उनकी अगवानी करने चल पड़ी। मेरा ध्यान मेरे पति में था। मुझे यह मालूम ही नहीं कि मैनें जाये–नमाज पर पैर रख दिया था। अगर ऐसा हुआ है तो इस गलती के लिए माफी मांगती हूं, लेकिन, मैं आपसे एक सवाल जरूर करना चाहूंगी। आप तो उस समय मालिक का ध्यान कर रहे थे फिर आपने मुझे जाये–नमाज पर पैर रखते कैसे देख लिया। इसका मतलब आपका नमाज में ध्यान नहीं था। आपकी उपासना में तन्मयता नहीं थी। अगर आप मालिक के ध्यान में डूबकर नमाज पढ़ रहे थे तो आपने मुझे अपराध करते कैसे देख लिया। बादशाह ने भी यह अनुभव किया कि स्त्री का कहना सही है। इबादत के समय केवल मालिक का ही ध्यान होना चाहिए। अगर नमाज के समय भी मालिक से जुड़ाव नहीं होगा तो फिर कब होगा।

9. सच्चे उत्तर

राजाओं या नेताओं को चापलूसों के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। चापलूस भटकाते हैं। इसके बजाय आम इन्सानों से जुड़ना चाहिए। एक बार की बात है जंगल में घूमते समय एक राजा को उसके मंत्री ने पाँच ऐसे उत्तर दिये थे जो पास ही मौजूद एक गड़रिये को बुरे लगे थे। उसने अपने हाव–भाव से नाराजगी जताई। राजा चतुर था उसने गड़रिये से पूछा तुम क्या सही मानते हो ? गड़रिये ने जवाब दिया आपके मंत्री नें आपको खुश करने के लिए जवाब दिये हैं। आपका पहला सवाल था – किसकी रोशनी सबसे अच्छी है ? मेरा जवाब है आंख की रोशनी अच्छी, क्योकि अगर वह नहीं हो, तो सूर्य की रोशनी का क्या अर्थ ? जहां तक दूध की बात है, तो मां का दूध सबसे अच्छा। जिसने मां का दूध नहीं पीया, उसके लिए गौ का दूध क्या करेगा ? तीसरा सवाल यह कि पुत्र किसका अच्छा ? तो पुत्र तो अपना ही अच्छा, राजा का पुत्र हमारे किस काम का ? चौथा सवाल कि बल किसका अच्छा ? मंत्री का जवाब था कि बल भाई का अच्छा।

परन्तु वास्तव में बल अपनी भुजा का बल सबसे अच्छा, क्योंकि अकेले में जब कोई शत्रु मिल जाये, वहां भाई का बल किस काम आयेगा ? फूल किसका अच्छा ? मंत्री का जवाब था कि फूल गुलाब का अच्छा,लेकिन वास्तव में फूल कपास का सबसे अच्छा होता है। गुलाब का फूल तो बड़े लोगों के नाज–नखरे में काम आता है, लेकिन कपास का फूल तो अमीर और गरीब सबके तन को ढ़कने का माध्यम बनता है। अतः वही सबसे अच्छा है। जवाब सुनकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ उसने गड़रिये को खूब ईनाम दिया।

10. सत्य और सुन्दर

राजा वीर भद्र काना था। एक दिन उसने सोचा क्यों न मैं अपना एक सुन्दर सा चित्र बनवाऊं। उसने राज्य में घोषणा करवा दी कि राजा का चित्र बनाने के लिए सभी उच्च कोटि के चित्रकार महल में आमंत्रित हैं। जो सर्वश्रेष्ठ चित्र बनायेगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा। अगले दिन महल में सभी चित्रकार एकत्रित हो गये। चित्रकारों ने बहुत लगन से चित्र बनाये, राजा को दिखाने और अन्तिम निर्णय के लिए तीन चित्र चुन लिये। उनमें से पहला चित्र बहुत सुन्दर था, पर उसमें राजा की दोनों आंखे बनी हुई थी। चित्र देखकर राजा ने कहा यह चित्र सुन्दर तो है लेकिन सत्य नहीं, क्योंकि मैं तो एक ही आंख से देख सकता हूँ। दूसरे चित्र में राजा को काना दिखाया गया था, उसे देखकर राजा ने कहा चित्र सत्य तो है लेकिन सुन्दर नहीं है। एक आंख में मैं बहुत बुरा दिख रहा हूँ। अब राजा ने तीसरा चित्र देखा इस चित्र में वह जंगल में शिकार कर रहा था सामने शेर था और राजा तीर लिए शेर पर निशाना लगाने की मुद्रा में था इसलिए उसकी एक आंख बंद नजर आ रही थी। इस चित्र को देखकर राजा ने चित्रकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि चित्रकार बहुत चतुर है। इस चित्र में उसने सत्य और सुन्दरता दोनों को साथ–साथ प्रस्तुत किया है। जीवन को सिर्फ यथार्थ रूप में या कल्पना रूप में देखना गलत है। वह दोनों का मिला–जुला रूप है। तीसरे चित्रकार ने जीवन को इसी रूप में देखा और प्रस्तुत किया है। राजा ने उसकी कला और समझदारी के लिए उसे पुरस्कृत किया।

11. मीठी वाणी

एक तरूण व्यक्ति एक किसान के घर गया। किसान की मां मौजूद थी। तरूण ने उसे कहा धान के दाने मेरे पास हैं क्या घूघरी बना देंगी ? बूढ़ी मां घूघरी बनाने के लिए तैयार हो गई। तरूण ने पास ही बहुत छोटे बाड़े में खड़ी भैस की प्रशंसा की। फिर पूछा भैस बाहर क्यों नहीं निकलती है ? बूढ़ी मां ने जवाब दिया, नजर न लग जाये इसलिए, तरूण ने बिना सोचे–समझे प्रश्न किया, अगर भैंस मर जाये, तो बाड़े से कैसे निकालोगी ? बूढ़ी मां को क्रोध आया, लेकिन तरूण को मेहमान समझकर कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद बूढ़ी मां एक स्त्री के साथ पानी लेकर आयी। तरूण ने पूछा यह कौन है ? मां ने जवाब दिया बहू है। तरूण ने पूछा पुत्र कहां है ? जवाब मिला, शाम को घर आता है। तरूण ने फिर मूर्खता का परिचय दिया। यदि पुत्र की गमी का समाचार आ जाये तो ? यह अमंगल वाणी सुनकर बूढ़ी मां के क्रोध की सीमा न रही। वह पानी का घड़ा तरूण के ऊपर पटकने के लिए तैयार हो गयी, किन्तु मेहमान होने का ध्यान करके रूक गई। कपड़े में घूघरी दे कर उस युवक को तत्काल वहां से विदा कर दिया। रास्ते में घूघरी का पानी टपकते देख किसी ने पूछा – यह क्या झर रहा है ? तो जवाब मिला, जिभ्या का रस झरे, बोल्यां बिना नही सरे।

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि वाणी ऐसी होनी चाहिए, जो दूसरों को अच्छी लगे जिससे मित्रों की संख्या में वृद्धि हो। वाणी ऐसी कदापि नहीं होनी चाहिए, जिससे दूसरों को बुरा लगे और शत्रुओं की संख्या बढ़े। बिना विचारे बोली गई वाणी बेसुरी होती है।

12. एक सेर धान

एक नगर में अत्यन्त समृद्ध सेठ जानकी दास रहता था। उसके एक रूपवती नाम की बेटी थी। वह विवाह योग्य हो चुकी थी। उसने अपने विवाह के लिए एक शर्त रखी कि जो युवक कीचड़ से भरे तालाब में डुबकी लगाने के बाद एक गिलास पानी से अपने शरीर को साफ कर लेगा वह उसी से विवाह करेगी। एक भी युवक इस शर्त पर खरा नहीं उतर सका। यह देखकर सेठ को रूपवती के विवाह की चिन्ता सताने लगी। एक दिन मोहन नामक साधारण युवक इस शर्त को पूरी करने के लिए आया। उसने कीचड़ से भरे तालाब में डुबकी लगाई और धूप में खड़ा हो गया। थोड़ी ही देर बाद कीचड़ सूख कर महिन धूल में परिवर्तित हो गया। उसने रगड़कर कीचड़ को अपने शरीर से उतार दिया और एक गिलास पानी से हाथ–मुंह साफ कर लिये । उसकी बुद्धिमानी देखकर रूपवती ने उससे विवाह करने की स्वीकृति दे दी। परन्तु मोहन ने कहा रूपवती को भी मेरी एक शर्त पूरी करनी होगी। यदि वह उसमें सफल होती है तभी मैं उससे विवाह करूंगा। मोहन ने उससे एक सेर धान देते हुए कहा कि क्या तुम इस धान से मुझे छप्पन भोग बनाकर खिला सकती हो ? रूपवती ने कहा हां, लेकिन इसके लिए मुझे एक वर्ष का समय चाहिए। एक वर्ष बीतने के बाद मोहन रूपवती के पास पहुंचा, रूपवती ने उसके सामने छप्पन भोग परोसे यह देखकर मोहन ने पूछा कि एक सेर धान से तुमने इतने सारे पकवान कैसे बनवाये ? रूपवती ने कहा, मैनें एक सेर धान की बुवाई करवा दी। फसल होने पर उसे बेच दी और पकवान बनाने का सामान खरीद लिया। बस, उसी से यह पकवान बनाये हैं। रूपवती की चतुराई देखकर मोहन ने भी विवाह के लिए हाँ कर दी और खुशी–खुशी दोनों का विवाह हो गया।

13. अन्तिम इच्छा

राजा चन्द्रसेन के दरबार में तोल नामक कवि था। उसकी कविताऐं राजा का मन मोह लेती थी। इसलिए राजा उसे बहुत पसंद करता था। यह बात अन्य दरबारियों को अच्छी नहीं लगती थी। वे राजा को तोल के खिलाफ भड़काने का प्रयास करते लेकिन हर बार विफल रहते। एक दिन सभी दरबारियों ने मिलकर तोल पर अंगूठी चुराने का आरोप लगाया। यह सुनकर राजा तोल से चिड़ गया और उसे सजा देने की ठान ली। उसने तोल को तुरन्त दरबार में बुलाया और सच–झूठ का फैसला करने के लिए उसे भूखे मगरमच्छों के तालाब में फिंकवाने का फैसला किया। राजा का मानना था कि यदि अपराधी निर्दोष है तो मगरमच्छ उसे नही खाऐगें। अपनी सजा सुनकर तोल कांप उठा। राजा ने उससे पूछा क्या तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है ? अन्तिम ईच्छा की बात सुनते ही तोल को अपनी जान बचाने का मौका मिल गया। उसने कहा महाराज, मैं मरने से पहले एक बिल्ली को पुचकारना चाहता हूं। उसकी अजीब सी अन्तिम ईच्छा सुनकर सभी दरबारी हंसने लगे। उन्होंने सोचा मौत के भय से बेचारा पागल हो गया। थोड़ी देर बाद एक बिल्ली को लाया गया। तोल ने तुरन्त उस बिल्ली को मगरमच्छों से भरे तालाब में फेंक दिया। भूखे मगरमच्छों ने छलांग लगाई और बिल्ली का अता–पता भी नहीं चला यह देखकर तोल ने कहा कि महाराज, यदि तालाब में फिकवाने से पता चलता है कि व्यक्ति निर्दोष है या दोषी, तो भला इस बिल्ली ने क्या अपराध किया था ? भूखे मगरमच्छों के सामने आप किसी भी प्राणी को फैंक दीजिए वे उसे खा जायेंगे। तोल की बात सुनकर राजा समझ गया कि वह कितनी बड़ी गलती करने जा रहा था। उसने तुरन्त तोल की सजा माफ कर दी। उसको ढ़ेरों ईनाम दिये गये और असली अपराधियों का पता करके सजा दी गई। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी बचने की राह निकाली जा सकती है।

14. भाग्य का भोजन

एक नगर था, नगर में एक व्यक्ति फेरी लगाकर सामान बेचा करता और अपने बच्चों को पेट भरता उसका नाम सुजान था। सुजान हमेशा कहता था कि वह अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की खाता था किसी की कृपा की नहीं। बात राजा तक पहुंची राजा ने उसकी परीक्षा लेने की ठानी। राजा ने सुजान को द्वारपाल बना दिया। दिनभर पहरेदारी करने के बाद शाम होते–होते सुजान को अपने बच्चों के भोजन की फिक्र सताने लगी। उसने पास में पड़ी लकड़ी की एक टहनी को छीला ओर उसे तलवार की जगह म्यान में रख लिया। तलवार बेचकर उसने अपने बच्चों के खाने का प्रबन्ध किया।

राजा को यह बात पता चल गई। दूसरे दिन राजा ने उस दरवाजे का निरीक्षण किया। जहां सुजान पहरेदारी के लिए तैनात था। राजा ने अकारण ही एक सेवक को जोर से डांट लगाई और सुजान से कहा कि इस सेवक का अपराध अक्षम्य है अपनी तलवार निकालो ओर इसका सिर धड़ से अलग कर दो। सुजान मन ही मन घबराया लेकिन उसने चतुराई से काम लिया और आसमान की और मुंह करते हुए बोला, अगर यह सेवक बेकसूर है तो मेरी तलवार लकड़ी की हो जाय। उसने म्यांन में से तुरन्त तलवार खींच ली लकड़ी की तलवार देखकर सभी दरबारी इसे ईश्वरीय करामात समझ कर अचम्भित रह गये। राजा को सब पता था। सुजान की चतुराई से प्रसन्न होकर राजा ने कहा वाकई हम अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की ही खाते हैं। किसी की कृपा की नहीं।

15. क्या बोले ये पंछी

एक राजा था, उसके महल के आंगन में नीम का पेड़ था। रोज एक पंछी उस पेड़ पर आकर बैठता और चारों पहर अलग–अलग बातें कहता। पहले पहर में कहता किस मुख दूध पिलाऊं ? दूसरे पहर में कहता ऐसो कहूं न दीख। तीसरे पहर में कहता – अब हम करबू का और चौथे पहर में सब विद्वान मर जायें कहता। राजा रोज उसकी बातें सुनकर सोच में पड़ जाता लेकिन उसे उन बातों का अर्थ समझ नहीं आता। एक दिन उसने राजपुरोहित को बुलाया और पक्षी द्वारा कही गई सारी बातें बताकर उनका अर्थ पूछा। पुरोहित ने थोड़ा समय मांगा और अपने घर लौट आया। जब वह घर पहुंचा तो बहुत परेशान था। उसे देखकर पुरोहित की पत्नी ने परेशानी का कारण पूछा। पुरोहित ने पक्षी के प्रश्न कह सुनाये। प्रश्न सुनकर वह बोली, बस इतनी सी बात मैं राजा को सभी प्रश्नों के जवाब दे सकती हूँ। कल मैं आपके साथ राजदरबार चलूंगी। दूसरे दिन पुरोहित के साथ उसकी पत्नी भी राजदरबार में पहुंची।

राजा ने पहले प्रश्न किस मुख दूध पिलाऊं का अर्थ पूछा, पुरोहित की पत्नी ने कहा महाराज यह पक्षी आधी बात बोलता है पूरी बात इस प्रकार है – लंका में रावण भयो, बीस भुजा दस शीश, माता ओ की जा कहे, किस मुख दूध पिलाऊं। यानी लंका में रावण ने जन्म लिया उसकी बीस भुजाऐं और दस शीश हैं यह देखकर उसकी माता कहती है कि मैं उसे कौनसे मुख से दूध पिलाऊं। राजा ने दूसरा प्रश्न पूछा – ऐसो कहूं न दीख। पुरोहित की पत्नी ने बताया, घर जम्ब नव दीप बिना चिन्ता को आदमी ऐसो कहूं न दीख। चारों दिशाओं पृथ्वी नव खण्ड सभी छान डालो पर बिना चिन्ता का आदमी नहीं मिलेगा। राजा ने तीसरा प्रश्न पूछा, अब हम करबू का, पुरोहित की पत्नी बोली – पांच वर्ष की कन्या साठे दई ब्याह, बैठी करम बिसूरती, अब हम करबू का। पांच वर्ष की कन्या का ब्याह साठ वर्ष के बूढ़े से करवा दें तो वह अपनी किस्मत को कोसती हुई यही कहेगी कि अब मैं क्या करूं।

चौथा प्रश्न था, सब विद्वान मर जायें, पुरोहित की पत्नी ने कहा विश्वा संगत जो करें, सुरा मांस जो खाये, बिना सपरे जो भोजन करे, वे सब विद्वान मर जायें। जो विद्वान पर स्त्री की संगति करे, सुरा और मांस का सेवन करे और बिना स्नान किये भोजन करे, ऐसे विद्वान का मर जाना ही उचित है।

राजा प्रश्नों के उत्तर सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने पुरोहित की पत्नी की बुद्धि को सराहा और खूब सारा धन–दौलत देकर उसे विदा किया।

11 बाल गीत

1. नटखट बंदर

बड़े बाग से बन्दर मामा, ले आये एक केला।
सोचा सिर्फ मैं ही खाऊँगा इस केले को अकेला।।
कोई इसको छीन नहीं ले, लटक गये वे डाल पर।
केले के मिठास की खुशियां, चमकी उनके गाल पर।।
डाल पे लटके केला लेकर, सबको लगे दिखाने।
पेड़ के बिल से निकली चिंटियां, बाहर खाना खाने।।
हाथ पे काटा सुई चुभोई, बन्दर जी चिल्लाये।
ऐसे गिरे डाल से नीचे, फिर वे उठ न पाये।।
खाई कसम उन्होंने कि फिर ऐसा नहीं करेंगे।
जब भी कोई चीज खायेंगे, सबका ध्यान रखेंगे।।

2. चलो जंगल

आओ चलें जंगल की ओर, करते पंछी जहां पर शोर।
हाथी शेर, गीदड़, बंदर, रहते हैं जंगल के अन्दर।।
मोर, हिरण, खरगोश प्यारे, करते हैं निवेदन सारे।
गेंडा, भालू, लोमड़ी, सुअर, बारहसिंगा, चीता, बब्बर।।
सागवान, बांस, नीम, आम, महुआ, बेर वृक्ष तमाम।
पेड़, पशु–पक्षी और चारा, समेटे हुए हैं वन हमारा।।
जंगल जहां घने होते हैं, बादल वहां खूब बरसते हैं।
एक–एक पेड़ लगायें सब जन, हरा भरा हम बनायें वन।।

3. पेड़

बस्ती के श्रृंगार पेड़ हैं, जीवन के आधार पेड़ हैं।
पेड़ हमें छाया देते हैं, स्वयं शीत–गर्मी सहते हैं।।
बीना मुकुट के राजा हैं ये, जंगल के परिवार पेड़ हैं।
पंछी के परिवार घर बार पेड़ हैं, जहां पेड़ हैं शीतलता है।।
शीतलता से मेघ बरसते हैं, सूखी धरती हरियाती है।
ताल तलैया सारे भरते हैं, धरती के उपहार पेड़ हैं।।
खुशहाली के द्वार पेड़ हैं, सदस्य बनाते श्रम हर लेते हैं।
हमें फूल फल मेवे देते हैं, करते हैं सम्पन्न सभी को।।
पर न किसी से कुछ भी लेते, करते नित उपकार पेड़ हैं।
जहां पेड़ हैं वहां पानी हैं, सेवा के अवतार पेड़ हैं।।

4.स्वच्छता संबंधी बाल गीत

उठो सवेरे रगड़ नहाओ,
ईश विनय कर शीश झुकाओ।
रोज बड़ो के छूओ पैर,
कभी किसी से करो न बैर।
पढ़ो पाठ फिर करो कलेवा,
बढ़िया काम बड़ो की सेवा।
करो गृह कार्य स्वच्छ सुन्दर पूरा,
समय पर जाकर स्कूल।
भविष्य बनाओ सुनहरा,
पढ़–लिखकर अच्छे इंसान बनो।
हो शिक्षित, देश–प्रदेश का भला करो,

5. ऊँट चला

ऊँट चला भाई ऊँट चला,
हिलता–डुलता ऊँट चला
इतना ऊँचा ऊँट चला,
ऊँट चला भाई ऊँट चला,
ऊँची गर्दन ऊँची पीठ,
पीठ उठाये ऊँट चला,
ढालू है तो होने दो,
बोझ ऊँट को ढ़ोने दो,
नहीं फंसेगा बालू में,
बालू में भी ऊँट चला,
जब थककर बैठेगा ऊँट,
किस करवट बैठेगा ऊँट,

बता सकेगा कौन भला,
ऊँट चला भाई ऊँट चला।
ऊँट बडे तुम उट–पटांग,
उट–पटांग भाई उट–पटांग,
गर्दन लम्बी पूंछ जरासी,
आंखे छोटी दांत बड़े–बड़े
उबड़–खाबड़ पीठ तेरी,
ऊँघते रहते अक्सर खड़े–खड़े
बंधी गद्दियां हैं पैरों में,
छः फिट लम्बी तेरी टांग,
ऊँट बड़े तुम उट–पटांग।।
सारा हुलिया बेढंगा है,
शीशा देखो कभी अगर,
लौट–पोट खुद हो जाओगे,
होगी अकड़ रफूचक्कर,
चाल तुम्हारी ऐसी जैसे,
चलता कोई पीकर भांग,
ऊँट बड़े तुम उट–पटांग।।

6. खट्टे अंगूर

एक लोमड़ी भूखी प्यासी,
चली ढूढ़ने खाना,
दिनभर घूमी इधर–उधर,
पर मिला न उसको दाना,
एक बाग में चलते चलते,
निकल गई वह जंगल में दूर,
देखा उसने लटक रहे हैं,
बड़े–बड़े अंगूर, पके–पके अंगूर देखकर,
मूंह में आया पानी,
उछल–उछल कर लगी पकड़ने,
उन्हें लोमड़ी महारानी,
मगर बड़ी ऊंचाई पर थे, अंगूरों के गुच्छे,
मीठे–मीठे प्यारे–प्यारे मोतियों जैसे अच्छे,
मगर वह उनको पकड़ न पाई, हो गई थककर चूर,
जाते–जाते बोली जोर से, खट्टे होते हैं अंगूर।।

7. कबूतर

गुटूर गूं भाई गुटूर गूं,
गुमसुम होकर बैठे क्यों,
गुटूर गूं भाई गुटूर गूं,
अभी तो दाना चुगना है,
उड़कर नभ को छूना है,
बिल्ली से डर लगता क्यों,
गुटूर गूं भाई गुटूर गूं,
तिनका तिनका लाना है,
अपना नीड़ बसाना है,
आँधी से मन डरता क्यों,
गुटूर गूं भाई गुटूर गूं,
दिनभर क्या तुम करते हो ?
नाच–नाच मन हरते हो,
चिट्टी लेकर भागे क्यों ?
गुटूर गूं भाई गुटूर गूं,
आओं गीत सुनायेंगे,
सबका मन बहलायेंगे,
कुऐं के अन्दर बैठे क्यों,
गुटूर गूं भाई गुटूर गूं।

8. स्वर गीत

अ – अनार के दाने खावो।
आ– आम को चूंसते जाओ।
इ – इमली की चटक खटाई।
ई – ईख से बने मिठाई।
उ – उल्लू को मार भगाओ।
ऊ – ऊँट पर तुम चढ़ शहर जाओ।
ए – एडी पर बजन सम्भालो।
ऐ – ऐनक आंखो पर लगालो।
ओ – ओंखली में कोटो धान।
औ – औरत भारत की शान।
अं – अंगूर का प्यारा गुच्छा।
अः – अहा–अहा कितना अच्छा।

9. गिनती गीत

एक – बड़े राजा का बेटी।
दो – दिन से बिस्तर पर लेटी।
तीन – डॉक्टर देखने आये।
चार – दवा की पुड़िया लाये।
पांच – मिनट में देख दी दवाई।
छः – दिन तक चली दवाई।
सात – सहेली मिलने आई।
आठ – आठ फूल साथ में लाई।
नौ – दिन में कुछ ताकत आई।
दस – दस तक गिनती हुई भाई।

10. जवानी से बुढ़ापे की गिनती

10 X 1 = 10 = मन पर नहीं बस।
10 X 2 = 20 = घणी आव रीस।
10 X 3 = 30 = मन्दी पड़ी रीस।
10 X 4 = 40 = गळे पड़ी पंजाळीस।
10 X 5 = 50 = रीस का हो जाये नास।
10 X 6 = 60 = हाथ में ले लो लाठ।
10 X 7 = 70 = कान हो जाये पत्थर।
10 X 8 = 80 = मुंह पर फैर लो कस्सी।
10 X 9 = 90 = कोई बात नहीं फब।
10 X 10 = 100 = रो और पो।

11.फूल की महिमा

चाहे बहे हवा मतवाली, फूल हमेशा मुस्काता।
चाहे बहे हवा लू वाली, फूल हमेशा मुस्काता।
पत्तों की गोदी में रहकर, फूल हमेशा मुस्काता।
काँटों की नोकों को सहकर, फूल हमेशा मुस्काता।
ऊपर रह डाली पर खिलकर, फूल हमेशा मुस्काता।
नीचे टपक धूल में मिलकर फूल हमेशा मुस्काता।
रोना नहीं फूल को आता, फूल हमेशा मुस्काता।
इसीलिए वह सबको भाता फूल हमेशा मुस्काता।.

12. जिन्दगी का क, ख, ग

(क) कहना मानो	(ख) खूश रहो
(ग) गुस्सा मत करो	(घ) घर को साफ रखो
(च) चुस्त रहो	(छ) छुआछूत मत करो
(ज) जिज्ञासु बनें रहो	(झ) झूठ मत बोलो
(ट) टी.वी. कम देखो	(ठ) ठेस मत पहुँचाओं
(ड) डरो मत	(ढ) ढोंग मत करो
(त) तंग मत करो	(थ) थोड़ा बोलो
(द) दुसरों के प्रति प्रेम रखो	(ध) धर्म का आदर करो
(न) न्याय करो	(प) पाप से घृणा करो
(फ) फल की चिंता मत करो	(ब) बड़ों का आदर करो
(म) मैत्रीपूर्ण व्यवहार करो	(य) युद्ध मत करो
(र) रूढ़िवादियों से दूर रहो	(ल) लड़ो मत
(व) वक्त की रफ्तार से चलो	(श) शिष्टाचार का पालन करो
(ष) षडयंत्र मत करो	(स) सत्य बोलो
(ह) हथियार बनो	(क्ष) क्षमा करो
(त्र) त्रुटि का अभ्यास करो	(ज्ञ) ज्ञान प्राप्त करो

13. विद्यार्थी के लिए सबसे बड़ी सात बातें

1. विद्यार्थी का मन्दिर – विद्यालय
2. विद्यार्थी का भगवान – अध्यापक
3. विद्यार्थी का सबसे बड़ा धन – पुस्तक
4. विद्यार्थी की कूँजी – मित्र
5. विद्यार्थी का सबसे बड़ा बल – आत्मविश्वास
6. विद्यार्थी का सबसे बड़ा हथियार – कलम
7. विद्यार्थी का सबसे बड़ा दुश्मन – आलस्य

14. वर्तमान में अंग्रेजी के 26 अक्षरों का बदला हुआ स्वरूप

A - एप्पल
B- ब्लूटूथ
C– चैट
D– डाउनलोड
E– ई–मेल
F– फेसबुक
G– गूगल
H– हैवलेट पैकार्ड
I– आई–फोन
J– जावा
K– किंग्सटन
L– लैपटॉप
M– मैसेंजर
N– नीरो
O– ऑरकुट
P– पिकासा
Q– क्विकहील
R– रैम
S– सर्वर
T– ट्विटर
U– यूएसबी
V– विस्टा
W– वाई–फाई
X– एक्सपी
Y– यू–ट्यूब
Z– जॉरपिया

15. विराम चिह्न (Punctuation)

1. पूर्ण विराम	Full stop	. ।
2. अल्प विराम	Comma	,
3. अर्ध विराम	Semi Colon	;
4. प्रश्न सूचक	Interrogative	?
5. विस्मयादि बोधक	Exclamation	!
6. संक्षेप चिह्न लाघव	Abbreviation	0
7. उद्धरण चिह्न	Inverted Commas	“ “ ‘ ‘
8. कोष्ठक	Brackets	( ) { } [ ]
9. योजक चिह्न	Hyphex	-
10. निर्देशक (रखिका)	Dash	_
11. विवरण चिह्न	Colon	:-

12 यथा नाम तथा गुण

1. - PRINCIPAL

(i) - Progressive - प्राचार्य में विकासोन्मुखी भाव उतना ही आवश्यक है जितना कि जीवन में आगे उन्नति के लिए स्वयं में ललक होती है। विकासकारी भावों के अभाव में वह व्यक्ति संस्था को शिखर पर पहुंचाने में असमर्थ होगा।

(ii) - Resourceful - प्राचार्य में अपने दम–खम से आवश्यक साधन जुटाने की क्षमता होनी चाहिए।

(iii) - Intelligent - प्राचार्य में अपने पद को साकार करने की बुद्धिमत्ता, चतुराई, विद्वता एवं सुबोधता के गुण होने चाहिए।

(iv) - Noble - प्राचार्य व्यवहार, रहन–सहन एवं आचारण में भद्र होना चाहिए।

(v) - Courageous - किसी भी प्रिय–अप्रिय बात एवं कटुसत्य को स्वीकारने एवं आवश्यक तथ्य व्यवहार में लाने का साहस होना ही चाहिए।

(vi) - Innovative - नया परिवर्तन, नव अनुसंधान करने की क्षमता तथा नयी खोज स्वीकारने का साहस होना चाहिए।

(vii) - Polite - हर मायने में सच्चाई पर समाज, विद्यालय, शिक्षकों एवं छात्रों के प्रति नम्र होना चाहिए।

(viii) - Active - स्वयं सक्रिय हो, हर कार्य को करने का होसला रखे।

(ix) - Loyal - अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति आस्थावान होना अतिआवश्यक है।

2. - HEADMASTER

(i) - Handsome by head & heart - प्रधानाध्यापक ह्रदय एवं मस्तिष्क से सुन्दर तथा सुविचारित होना चाहिए।

(ii) - Encyclopaedia of Knowledge - ज्ञान विज्ञान व संस्कृति का ज्ञानकोष होना चाहिए।

(iii) - Affectionate to all humanity - ह्रदय में समस्त मानव जाति के प्रति स्नेह, लगाव की भावना होनी चाहिए।

(iv) - Democratic attitude - नजरिया सदैव प्रजातांत्रिक होना चाहिए। एक सफल प्रजातांत्रिक नायक के गुण होने चाहिए।

(v) - Mastery on subjects - विद्यालय के विषयों को अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

(vi) - Already prepare to control any situation - संस्था प्रधान में किसी भी परिस्थिति से सामना करने की उसे नियंत्रण में लेने की पूर्ण एवं पूर्व तैयारी होनी आवश्यक है।

(vii) - Strategic - परिस्थितियों से निपटने हेतु व्यूह रचना का सामर्थ्य आवश्यक गुण है।

(viii) - Tolerance of others views - प्रधानाध्यापक में समाज शिक्षकों एवं छात्रों के मतों को सहन करने व स्वीकारने का गुण आवश्यक है।

(ix) - Energetic - विद्यालय के प्रत्येक क्रियाकलाप के लिए उत्साह, उमंग एवं प्रबल ईच्छा शक्ति होनी चाहिए।

(x) - Reasonable attitude towards life - जीवन के प्रति सकारात्मक एवं समयानुकूल सोच होना आवश्यक है।

3. - TEACHER

(i) - Tolerant - शिक्षक में सहनशीलता का गुण आवश्यक है।

(ii) - Effective - शिक्षक व्यवहार एवं आचरण में अमिट छाप छोड़ने वाला होना चाहिए।

(iii) - Able - शिक्षक हर कार्य जो विद्यालय हित का हो उसको करने की तमन्ना एवं क्षमता रखने वाला होना चाहिए।

(iv) - Co-operative - शिक्षक सहयोगी होना चाहिए, उसमें सहयोग की तीव्र उत्कंण्ठा होनी चाहिए।

(v) - Honest - शिक्षक विद्यालय समाज एवं राष्ट्र के प्रति ईमानदार होना चाहिए।

(vi) - Enthusiastic - शिक्षक नई चीज सिखाने एवं सिखने की लालसा वाला होना चाहिए।

(vii) - Reasonalbe Attitude towards society & nation शिक्षक राष्ट्र निर्माता है अतः शिक्षक का समाज एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक नजरिया होना अति आवश्यक है।

4. - STUDENT

(i) - Sincere - छात्र में सच्चे, यथार्थ, वास्तविक एवं लगनशील व्यक्ति के गुण होने चाहिए।

(ii) - Trustworthy - छात्र में अपने से बड़ों व गुरूजनों में विश्वास की भावना होनी चाहिए।

(iii) - Upright - छात्र हमेशा सरल स्वभावी, सत्यवादी एवं निष्ठावान होना चाहिए। निरंतर उन्नती करने का भाव उसमें आवश्यक है।

(iv) - Disciplined - छात्र का जीवन अनुशासित एवं संयमित होना चाहिए।

(v) - Energetic - छात्र में पढ़ाई एवं सहपाठ्य गतिविधियों में भाग लेने की उमंग, उत्साह एवं स्वप्रेरणा अवश्य होनी चाहिए।

(vi) - Noble - छात्र का आचरण सभ्यता की परिधि में होना चाहिए।

(vii) - Thoughtful - छात्र को विचारशील, चिन्तन एवं मनन वाला होना चाहिए।

5. 'शिक्षा' शब्दः एक दिव्य अर्थ (नरेश कुमार जेदिया)

शिक्षा–सम्बन्धी नीति वचनों में तथा ईश्वरीय वाणी से शिक्षा और जीवन के सम्बन्ध में जो व्यावहारिक सत्य व्यक्त हुआ हैं, वह अंग्रेजी भाषा के EDUCATION –इन नौ वर्णों द्वारा भी अभिव्यक्त किया जा सकता हैं। EDUCATION का सूक्ष्मार्थ या दिव्यार्थ इस प्रकार हैं–

1- E :- ETIQUETTE – शिष्टाचार–सुशिक्षित मानव नम्रता, मधुरता से युक्त, माता–पिता तथा शिक्षकों से नम्रतापूर्ण और अपने से छोटों के प्रति भी सदा शिष्टाचारयुक्त आचरण करना।

2- D :- DISCIPLINE –अनुशासन–विनम्रतापूर्ण अनुशासन से अलंकृत।

3- U :- UNIVERSAL BROTHERHOOD – विश्व–बन्धुत्व – विश्व में भिन्न–भिन्न देश, लोग तथा धर्म हैं, परन्तु सभी एक परमपिता की सन्तान हैं और परस्पर बन्धु हैं। देश, धर्म, सम्प्रदाय, जाति एवं क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर विश्व बन्धुत्व की भावना सब में स्वतः ही समाहित हैं।

4- C :- CREATIVITY – रचनात्मकता या सृजनात्मकता जिस प्रकर एक कलाकार एवं शिल्पी पत्थर में अपनी भावना एवं कल्पना भर कर उसे मूर्त रूप देता हैं, उसे जीवन्त करने का प्रयास करता हैं, उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त मानव में भी निकृष्ठ से श्रेष्ठ बनाने की सृजनात्मक शक्ति का गुण आ जाताहैं।

5- A :- AWARNESS – जागृति–सच्ची एवं सार्थक शिक्षा आत्म रूपी दीपक को प्रज्वलित करती हैं, यही वास्तविक जागृति हैं।

6- T :- TRANSFORMATION – रूपान्तरण–शिक्षा से मानव का मनोपरिवर्तन हो जाता हैं। वह एक उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिक बन जाता हैं तथा उसकी आसुरी वृत्तियों का दैविय वृतियों में रूपान्तरण हो जाता हैं।

7- I :- INTEGRITY – एकात्मकता– जिस प्रकार सूरजमुखी का फूल सदैव अपने जीवनदाता सूर्य की ओर उन्मुख रहता हैं, उसी प्रकार शिक्षा द्वारा शरीर में निवास करती हुई बुद्धि परमपिता से एकात्मक भाव प्राप्त करने में लगी रहती हैं।

8- O :- OPTIMISM – आशावादिता– सुशिक्षित मानव जीवन के प्रति सदैव आशावादी रहता हैं।

9- N :- NOBILITY – सज्जनता– शिक्षा से मानव में सज्जनता एवं सौम्यता का गुण विकसित होता हैं। वह असहाय का सहायक, पीड़ितों का रक्षक बनकर अपनी शिक्षा को सार्थक बनाता हैं।

6. शिक्षक का धर्म

शिक्षक स्पष्टवादी हो, चाटुकार नहीं।
शिक्षक मृदुभाषी हो, कटुवादी नहीं।
शिक्षक स्वाभिमानी हो, अभिमानी नहीं।
शिक्षक न्यायप्रिय हो, अन्यायी नहीं।
शिक्षक सदाग्रही हो, जिद्दी नहीं।
शिक्षक उदार हो, लोभी नहीं।
शिक्षक प्रगतिशील हो, रूढ़िवादी नहीं।
शिक्षक आत्मनिरीक्षक हो, छिद्रान्वेषी नहीं।
शिक्षक संकल्पशील हो, अस्थिरमति नहीं।
शिक्षक खुली पुस्तक हो, गुप्त दस्तावेज नहीं।
शिक्षक शाला का पुजारी हो, अधिनायक नहीं।
शिक्षक महान, मानव हो, साधरण मानव नहीं।

7.जीवन क्या है?

जीवन एक चुनौती है, उसका सामना कीजिए।
जीवन एक सफर है, उसे पूरा कीजिए।
जीवन एक कर्तव्य है, उसका पालन कीजिए।
जीवन एक समस्या है, उसको सुलझाये।
जीवन एक संघर्ष है, उसका सामना कीजिए।
जीवन एक वरदान है, उसको धारण कीजिए।
जीवन एक अवसर है, उसका सदुपयोग कीजिए।
जीवन एक कला है, उसे दर्शाइए।
जीवन एक खेल है, उसे खेलिए।
जीवन एक पुस्तक है, उसका अध्ययन कीजिए।
जीवन एक आशीर्वाद है, उसे ग्रहण कीजिए।
जीवन एक प्रेम है, उसे प्राप्त कीजिए।
जीवन एक सपना है, उसे पूरा कीजिए।

13 भारतीय काल चक्र (सर्वेश शर्मा)

भारत की गौरवशाली सभ्यता एवं संस्कृति में सम्वत का विशेष महत्त्व है। शोभन नाम का विक्रमी संवत प्रारम्भ हुआ है। किंवदन्ती के अनुसार विक्रमी संवत का आरम्भ भारत के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने किया। नर्मदा के उत्तर में इस वर्ष का आरम्भ चैत्र मास से तथा गुजरात में कार्तिक मास से माना जाता है। विक्रमी संवत का आरम्भ 14 मार्च 58 ई.पू. 11 घण्टे, 37 मिनिट व 32 सैकण्ड से हुआ था। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान के प्रारम्भ में संकल्प के समय में संवत्, मास, तिथि, नक्षत्र आदि का उच्चारण किया जाता है।

1. वर्तमान में निम्न संवत् प्रचलित हैं :–

(1) सृष्टि संवत्

(2) विक्रम संवत्

(3) शक संवत्

(4) दयानन्द संवत्

(5) नानक संवत्

(6) महावीर संवत्

(7) बौद्ध संवत्

(8) कलियुग संवत्

(9) कल्प संवत्

2. पंचांग

हिन्दू काल गणना पंचांग के आधार पर की जाती है। यह भारतीयों की सोच का जीवन्त उदाहरण है।

3. सौर वर्ष : 12

राशियों के कुल परिभ्रमण काल को सौर वर्ष करते हैं। यह 12 महिनों का होता है।

4. अयन : 2

एक वर्ष में दो अयन होते हैं। उत्तरायन एवं दक्षिणायन। प्रत्येक की अवधि 6–6 माह की होती है। एक अयन में तीन ऋतु आती हैं।

5. सौर मास

सूर्य की एक राशि के परिभ्रमण को सौर मास कहते हैं। इसकी अवधि अमूमन 30 दिन होती है। जिस राशि पर सूर्य होता है। उसे उस राशि की सक्रांति कहते हैं।

जैसे सूर्य मकर राशि में हो तो मकर सक्रांति।

6. तिथि : 15

एक दिन को तिथि कहा जाता है।

जैसे – प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या/पूर्णिमा।

7. पक्ष : 2

एक माह में दो पक्ष होते हैं। शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष। इन दोनों ही पक्षों में 15–15 दिन होते हैं। कृष्ण पक्ष में 1 से 14 तिथि के बाद अमावस्या व शुक्ल पक्ष में 1 से 14 तिथि के बाद पूर्णिमा आती है।

8. वार : 7

एक सप्ताह में सात वार होते हैं। रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार/बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

9. ऋतु : 6 –

ग्रीष्म	–	जून से अगस्त
वर्षा	–	अगस्त से अक्टूबर
शरद	–	अक्टूबर से दिसम्बर
हेमन्त	–	दिसम्बर से फरवरी
शिशिर	–	फरवरी से अप्रेल
बसन्त	–	अप्रेल से जून

10. नक्षत्र : 27

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, जेष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती तथा एक अन्य अभिजीत को भी नक्षत्र की संज्ञा दी गई है।

11. योग : 27

सूर्य–चन्द्रमा की विशेष दूरी की स्थितियों को योग कहते हैं।

विषकुम्भ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यातिपात, वरियान, परिघ, शिव, सिंह, साध्य, शुभ, शुकल, ब्रह्मा, इन्द्र और वैधृति

12. कारण : 11

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनी, चतुष्पाद, नाग और किस्तुघ्ना।

13. राशि : 12

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन।

14.स्काउट

1.स्काउट गाइड नियम

1. स्काउट/गाइड विश्वसनीय होता है /होती है।
2. स्काउट/गाइड वफादार होता है/ होती है।
3. स्काउट/गाइड सबका/सबकी मित्र एवं प्रत्येक दूसरे स्काउट/गाइड का भाई/ की बहिन होता है/ होती है।
4. स्काउट/गाइड विनम्र होता है/ होती है।
5. स्काउट/गाइड पशु–पक्षियों का /की मित्र और प्रकृति–प्रेमी होता है/होती है।
6. स्काउट/गाइड अनुशासनशील होता है/ होती है और सार्वजनिक सम्पति की रक्षा करने में सहायता करता है/करती है।
7. स्काउट/गाइड साहसी होता है/ होती है।
8. स्काउट/गाइड मितव्ययी होता है/ होती है।
9. स्काउट/गाइड मन, वचन और कर्म से शुद्ध होता है/होती है।

2.प्रतिज्ञा

मैं मर्यादापूर्वक प्रतिज्ञा कारता हूँ/ करती हूँ कि मैं यथाशक्ति

1. ईश्वर और अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करूँगा/करूँगी।
2. दूसरों की सहायता करूँगा/करूँगी, और
3. स्काउट/गाइड नियम का पालन करूँगा/करूँगी।

विशेष – प्रतिज्ञा में 'ईश्वर' शब्द के स्थान पर 'धर्म' शब्द प्रयुक्त किया जा सकता है।

3. स्काउट/गाइड प्रार्थना व झण्डा गीत

प्रत्येक स्काउट/गाइड से आशा की जाती है कि उसे स्काउट/गाइड प्रार्थना तथा विभिन्न झण्डों के गीत केवल स्मरण ही न हों अपितु वह उन्हें सही तरीके तथा लय के साथ गा भी सके। ध्यान रहे कि इन्हें गाते समय उसे सावधान की स्थिति में रहना है। प्रार्थना के रचयिता श्री वीरदेव वीर (पंजाब प्रान्त के पूर्व एस.ओ.सी.) थे।

नोट–स्काउट/गाइड प्रार्थना को 90 सैकण्ड में गाया जाना चाहिए।

4. स्काउट/गाइड प्रार्थना

दयाकर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में, शुद्धता देना।।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अंधेरे दिल में आ करके, परम ज्योति जगा देना।।
बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुलकर, प्रभु, रहना सिखा देना।।
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा व सेवक चर बना देना।।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभु हमको सिखा देना।।
दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में, शुद्धता देना।।

5. स्काउट/गाइड झण्डा/ध्वज गीत

स्काउट/गाइड झण्डा–गीत की रचना देहरादून निवासी श्री दयाशंकर भट्ट ने की थी। झण्डा फहरा चुकने तथा सैल्यूट करने के तुरन्त बाद इसकी प्रारम्भिक सात पंक्तियों को ही सावधान की स्थिति में खड़े होकर 45 सैकण्ड की अवधि में गाया जाता है।

भारत स्काउट गाइड झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
नीला रंग, गगन सा विस्तृत, भ्रातृभाव फैलाता,
त्रिदल कमल नित तीन प्रतिज्ञाओं की याद दिलाता,
और चक्र कहता है प्रतिपल आगे कदम बढ़ेगा।
ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
भारत स्काउट गाइड झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।।
ये चौबीसों अरे चक्र के, हमसे प्रतिपल कहते,
सावधान चौबीसों घण्टे, हममें हैं बल भरते।
तत्पर सदा रहें सेवा में, जीवन सफल बनेगा,

ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
परहित रक्षा में हम जीवन, हँस–हँस दे दें अपना,
इस झण्डे पर मर मिटने का है, सुखदाई सपना।
सेवा का पथदर्शक झण्डा, घर–घर में फहरेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
भारत स्काउट गाइड झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।

27 राष्ट्र ध्वज से संबंधित तथ्य

1. गणतंत्र दिवस 2002 से प्रत्येक भारतीय रोजाना अपने घर/कार्यालय संस्थान पर बिना किसी प्रतिबन्ध के राष्ट्रीय झण्डा फहरा सकता है।
2. सबसे बड़े आकार का राष्ट्र ध्वज 6300 मिलीमीटर लंबा एवं 4200 मि.मी. चौड़ा है। सबसे छोटे आकार का ध्वज 150 मि.मी. लंबा और 100 मि.मी. चौड़ा है।
3. इण्डिया गेट, नई दिल्ली 'प्रिंसेज पार्क' में सार्वजनिक रूप से राष्ट्र ध्वज तिरंगा 15 अगस्त 1947 को फहराया गया । संयोग से ध्वज फहराते समय वर्षा हुई और गगन मण्डल पर इन्द्रधनुष दिखाई दिया इस बात का विशेष उल्लेख लार्ड माउण्टबेटन द्वारा क्राऊन को भेजे जाने वाले 17वें प्रतिवेदन में दिनाँक 16 अगस्त 1947 को किया गया।
4. पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा लाल किला, नई दिल्ली पर पहली बार राष्ट्र ध्वज शनिवार 16 अगस्त 1947 को फहराया गया, न कि 15 अगस्त 47 को जैसे आम धारणा हैं।
5. 15 अगस्त 1948 से प्रतिवर्ष प्रधानमंत्री द्वारा स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण किया जाता है।
6. स्वाधीनता के चौबीस वर्ष तक राष्ट्रपति भवन पर तिरंगा प्रदर्शित नहीं किया जाता था । उसके स्थान पर राष्ट्रपति का अपना निजी ध्वज फहराया जाता था।
7. राजा–महाराजाओं के प्रीवियर्स समाप्त होने के उपरान्त 15 अगस्त 1971 से राष्ट्रपति भवन पर तिरंगा फहराया जाना प्रारंभ हुआ।

8. यदि राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति नई दिल्ली से बाहर हैं तो उनके आवास पर तिरंगा नहीं फहराया जाता है। यही स्थिति राज्यों के राज्यपाल के संदर्भ में है। यदि राज्यपाल अपने राज्य की राजधानी में नहीं है तो राजभवन/राजनिवास पर तिरंगा नहीं होगा।
9. अप्रैल 1984 में प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा अन्तरिक्ष में तिरंगा लेकर गए।
10. 9 जनवरी 1982 में प्रथम एंटार्कटिका खोज यात्रा के दौरान 'दक्षिण गंगोत्री' पर तिरंगा फहराया गया ।
11. विश्व जल यात्रा के दौरान 28 सितम्बर 1985 को तिरंगा ले जाया गया और लगभग 30 हजार 'नॉटिकल माईल' की 470 दिन की यात्रा के बाद सफल वापसी हुई।
12. राजस्थान उच्च न्यायालय के ज्ञानप्रकाश कामरा बनाम संघ सरकार व अन्य 1991 के निर्णयानुसार राष्ट्रध्वज का विज्ञापन के रूप में उपयोग निषिद्ध हुआ।
13. ध्वज को ध्वज स्तंभ पर (सूर्योदय पर) तेजी से फहराया जाता है, तथा धीरे–धीरे (सूर्यास्त पर) नीचे उतारा जाता है।
14. यदि ध्वज को दो इमारतों के मध्य ऊर्ध्वाकार फहराया जाए तो केसरिया पट्टी पूर्व अथवा उत्तर दिशा की और होगी।
15. राजकीय और राष्ट्रीय तथा सैनिक बलों के सम्मान युक्त अंत्येष्टि के अवसरों पर झण्डे को कब्र में नहीं दफनाया जाएगा और न ही चिता में जलाया जाएगा।
16. कटे–फटे और अनुपयोगी राष्ट्रध्वज को सम्मानपूर्वक एकान्त में जमीन में गाड़कर/जलाकर ध्वज का निपटारा किया जाएगा।
17. ध्वज संहिता –2002 की धारा IX के उपबन्ध 3.44 के अनुसार मोटरकारों पर राष्ट्रीय झण्डा लगाने का विशेषाधिकार अति गणमान्य व्यक्तियों को ही है, जिनमें राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, उपराज्यपाल आदि आते हैं।कोई भी प्रशासनिक अधिकारी अपनी मोटरकार पर ध्वज प्रदर्शित करने हेतु अधिकृत नहीं है।

18. यदि दो संस्थानों/देशों के झंडे एक समय पर प्रदर्शित करने हैं तो हमारा तिरंगा दांईं ओर रहेगा, लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ (यूएनओ) का ध्वज तिरंगे के दाईं अथवा बाईं ओर फहराया जा सकता है।

19. एक से अधिक राष्ट्रों के ध्वज फहराते समय सभी ध्वज स्तंभ एक समान ऊंचाई के होंगे। एक स्तंभ पर एक ध्वज फहराएगा।

20. कागज द्वारा निर्मित राष्ट्रीय ध्वज तथा खादी निर्मित झंडे का महत्त्व एक समान हैं।

21. जान बूझकर ध्वज की केसरिया पट्टी नीचे की और (धरती की और देखते हुए) रखकर झंडा फहराया राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971 के तहत दण्डनीय है।

22. देश में जम्मू और कश्मीर ही एक मात्र ऐसा राज्य है जहां तिरंगे के साथ उस राज्य का अपना ध्वज भी राजकीय इमारतों तथा राष्ट्रीय समारोह के दौरान प्रदर्शित किया जाता है।

23. राष्ट्रपति भवन तथा लाल किले पर फहराए जाने वाले राष्ट्र ध्वज का आकार 3600 X 2400 मि.मी. अर्थात 12′ X 8′ है।

24. दिल्ली स्थित राजपथ पर प्रत्येक गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान भारत के राष्ट्रपति द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है। दिल्ली स्थित लाल किले की प्राचीर पर प्रत्येक स्वाधीनता दिवस पर भारत के प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। वे ध्वज खादी सिल्क से निर्मित होते हैं ।

25. टेबल फ्लैग (150 X 100 मि.मी. आकार) खादी सिल्क द्वारा निर्मित होता है । कार पर प्रयुक्त झंडे का आकार 225 X 150 मि.मी. है। उक्त दोनों ध्वज दो परतों में होते हैं।

26. वर्ष 2007 के दौरान आयोजित विश्व कप क्रिकेट मैच के दौरान मंदिरा बेदी द्वारा पहनी गई साड़ी पर भारत का तिरंगा अंकित था जो कि घुटने पर (कमर से नीचे) आ रहा था। दर्शकों द्वारा आपत्ति करने पर मंदिरा बेदी द्वारा साड़ी बदल ली गई।

16. राष्ट्रीय चिह्न का महत्व

चार शेरों वाले (परन्तु सामने से देखने पर केवल तीन शेर ही दिखाई देते हैं, चौथा शेर पीछे की ओर होने के कारण दृष्टि से ओझल रहता हैं।) इस राष्ट्रीय–चिह्न को भारत की सरकार द्वारा 26 जनवरी, 1950 को स्वीकार किया गया था। यह चिह्न सारनाथ (बनारस के निकट) में आशोक की लाट से लिया गया है। शेरों के निचे वाली चौड़ी पट्टी के मध्य में 'अशोक के चक्र' को भारतीय 'धर्म चक्र' के रूप में चित्रित किया गया है। चक्र के दाँयी ओर घोड़ा तथा बाँयी ओर साँड है। दाँयी तथा बाँयी ओर अन्त वाले छोरों पर भी चक्रों की रूप रेखाएँ बनी दिखाई देती हैं। चौड़ी पट्टी के निचे की ओर 'मुण्डक उपनिषद' से लिया गया देवनागरी लिपि में अलग से 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है जिसका अर्थ है 'सत्य की ही विजय होती है।' यही 'सत्यमेव जयते' भारतीय सरकार का आदर्श वाक्य है।

17.राष्ट्रीय–एकता

भारत में राट्रीय एकता की अपनी अलग एक अनोखी पहिचान है। भारत विश्व के उन कुछ गौरवशाली देशों में से एक है जहाँ बहुधर्मी, बहुभाषी व बहुजातीय लोगों के रहते हुए भी सभी एक–दूसरे के धर्म, भाषा आदि का आदर करते हुए आपसी स्नेह व भाई–चारा बनाए हुए हैं तथा सब एक ही राष्ट्रीयता लिए हुए हैं। यहाँ विभिन्न विचारों के राजनैतिक दल होते हुए भी भारत की एकता में कोई बाधक नहीं हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं के होते हुए भी सम्पूर्ण भारत एक है और वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्राचीन विरासत को अपने हृदय में संजोए हुए है। भारत के विषय में कहा जा सकता है–'अनेकता में एकता, भारत की विशेषता'। भारत में इतनी विभिन्नताएँ होते हुए भी सभी 'राष्ट्रीय एकता' के प्रेम–सूत्र में बन्ध कर 'एक' है। भारत की इसी विशेषता के कारण सभी अपने–अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र हैं, सभी को सम्मान अधिकार प्राप्त हैं।

राष्ट्रीय एकता का महत्व

भारत जैसा कोई देश जब प्रान्तों, जनपदों (जिलों), तहसीलों तथा गाँवों में दूर–दूर तक फैला हुआ हो और प्रत्येक कदम पर विभिन्न वर्गों, धर्मों, सम्प्रदायों, भाषाओं, जातियों, बोलियों तथा विचारों में बँटा हो और जहाँ संविधान में प्रत्येक को सम्मान रूप से स्वतंत्रता प्राप्त हो तो उनमें आपस में किसी भी बात पर मतैक्य होना असम्भव सा हो जाता है। जाति, धर्म एवं संस्कृति के आधार पर आपस में कुछ तनाव उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। इन्हीं विपरीत परिस्थितियों के कारण जब भी देश विघटन के कगार पर पहुँचता है तो हमारी यहीं राष्ट्रीय–एकता ऐसे समय में देश की रक्षा करती है। देश का हर वासी एक जुट होकर देश पर अपनी कुर्बानी देकर इस राष्ट्रीय–एकता के इस कथन को सार्थक करता है–

'जहाँ तक आपस की आँच, वे हैं सौ, हम केवल पाँच'।
यदि करे कोई दूसरा जाँच, गिने तो हम हैं एक सौ पाँच।

जिस देश में विभिन्न प्रकार की नदियों का बहता जल सागर में जाकर एकाकार हो जाता है, जिस प्रकार विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लोग भिन्न–भिन्न मतों के होकर भी मानव–सेवा एवं ईश्वर की सेवा में एकाकार हो जाते हैं, जिस प्रकार यहाँ के मैदानी, रेगिस्तानी तथा पर्वतीय भू–भाग अलग–अलग होते हुए भी देश की सीमा में अपने स्वयं के अस्तित्व को भुलाकर एक रूप (भारत) हो जाते हैं, उस देश के लोग भी विपत्ति तथा आवश्यकता के समय अपने–अपने भेदभाव भुलाकर देश–सेवा तथा देश–रक्षा में एक हो जाते हैं। इस समय उनका दृष्टिकोण 'मैं' से हटकर 'हम' पर केन्द्रित हो जाता है तथा देश–प्रेम व राष्ट्रीय एकता के सागर में जाकर सभी एकाकार और एक स्वरूप हो जाते हैं। हिन्दी के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है–

'भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।'

अतः किसी भी देश के चहुँमुखी विकास के लिए 'राष्ट्रीय एकता' का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

18. राष्ट्रीय प्रतीक

1.	राष्ट्र ध्वज	—	तिरंगा
2.	राष्ट्र गीत	—	वंदे मातरम्
3.	राष्ट्र वाक्य	—	सत्यमेव जयते
4.	राष्ट्रगान	—	जन गण मन
5.	राष्ट्र भाषा	—	हिन्दी
6.	राष्ट्र चिह्न	—	अशोक स्तम्भ
7.	राष्ट्र मंत्र	—	ओउ्म (ॐ)
8.	राष्ट्रीय पक्षी	—	मयूर
9.	राष्ट्रीय पशु	—	बाघ
10.	राष्ट्रीय फल	—	आम
11.	राष्ट्रीय फूल	—	कमल
12.	राष्ट्रीय वृक्ष	—	वट वृक्ष
13.	राष्ट्रीय पुरस्कार	—	भारत रत्न
14.	राष्ट्रीय खेल	—	हॉकी
15.	राष्ट्रीय ग्रंथ	—	गीता
16.	राष्ट्रीय नदी	—	गंगा
17.	राष्ट्रीय पर्वत	—	हिमालय
18.	राष्ट्रीय योजना	—	पंचवर्षीय योजना
19.	राष्ट्रीय लिपि	—	देव नागरी
20.	राष्ट्रीय जल पक्षी	—	हंस
21.	राष्ट्रीय पंचाग	—	शक संवत
22.	राष्ट्रीय संवतसर	—	विक्रम संवत
23.	राष्ट्रीय मुद्रा	—	रुपया

24. राष्ट्रीय जलीय जीव – डॉल्फिन
25. राष्ट्रीय पोषाक – जोधपुरी कोट पेंट
26. राष्ट्रीय मिठाई – जलेबी
27. राष्ट्रीयता – भारतीय
28. राष्ट्रीय दस्तावेज – श्वेत पत्र
29. राष्ट्रीय अभिवादन – नमस्कार
30. राष्ट्रीय नारा – श्रमैव जयते
31. राष्ट्रीय सर्वोच्च पुरूकार – भारत रत्न
32. राष्ट्रीय ध्वज गीत – हिन्द देश का प्यारा झण्डा
33. राष्ट्रीय पर्व – 26 जनवरी, 15 अगस्त एवं 2 अक्टूबर
34. राष्ट्र पिता – महात्मा गांधी
35. राष्ट्रीय नाम (भारत देश के नाम) – जम्बूद्वीप, भारतवर्ष, आर्यावृत, हिन्दुस्तान और इंडिया
36. राष्ट्रीय पेय – चाय
37. भारत का राष्ट्रीय अवतार – भारत माता, भारत अम्बा

19. अनमोल वचन

1. बिना माल के व्यापार, ज्ञान के बिना बहस ।
   और अक्ल बिना हुकूमत नहीं चलती ।।
2. अज्ञानी व्यक्ति किसी चीज का मूल्य तभी ।
   समझ पाता है, जब वह उसे खो चुका होता है ।।
3. हर कामयाब आदमी के पीछे ।
   एक अचरज से भरी महिला होती है ।।
4. जहाँ जितने ज्यादा कानून होते है ।
   उतने ही ज्यादा अपराधी होते है ।।
5. मीलों लम्बी दूरी एक कदम उठाने से ही शुरू होती है।
6. कभी–कभी लोग बड़ी अच्छी राय रखते है, पर उससे वे खुद सहमत नहीं होते ।
7. वही ताकतवर होता है, जिसकी कोई कमजोरी नहीं होती ।
   और वहीं कमजोर होता है, जिसकी कोई ताकत नहीं होती।
8. उधार पैसा हमेशा आशावादियों से लो, वे इसकी वापसी के लिए पीछे नहीं पड़ते ।
9. कई लोग भागने में असमर्थ होने के कारण बहादुर बन जाते हैं।
10. चवन्नी की बात पर हजार रूपये का गुस्सा करना फायदे का सौदा नहीं।
11. कर्ज शब्द उसकी जुबान पर आता है, जिसकी जेब में पैसा होता है।
12. हो चुकी घटनाओं को स्वीकार करना ही किसी दुर्भाग्य के परिणामों से उभरने का पहला कदम है।
13. जो चिन्ता से लड़ना नहीं जानते, वे जवानी में ही मर जाते है।
14. मन की शांति बुरे को स्वीकार करने से आती है।

15. महान लोग सामान्य व्यक्ति होते हैं, जिनमें असामान्य संकल्प होता है।
16. खोज में सबसे बड़ी बाधा अज्ञान नहीं बल्कि ज्ञान का भ्रम है ।
17. किसी भी नौकरी का कोई भविष्य नहीं होता, भविष्य तो उस आदमी का होता है, जो नौकरी कर रहा है।
18. जरूरतों को पूरा किया जा सकता है, लालच को नहीं ।
19. बड़े लोग लगातार सुनते हैं, छोटे लोग लगातार बोलते हैं।
20. क्रोध के प्रत्येक दस मिनट से आप छः सौ सैकण्ड की प्रसन्नता खो देते हैं।
21. अगर आप अपने चरित्र का ध्यान रखेगें, तो आपकी प्रतिष्ठा अपना ध्यान खुद रख लेगी।
22. होशियार लोग लताओं की तरह झुककर परिस्थितियों का सामना करते है, पेड़ की तरह प्रतिरोध नहीं करते।
23. कोई व्यक्ति तब तक स्वतन्त्र नहीं है, जब तक कि वह स्वयं का स्वामी न हो।
24. यथार्थ वादी जानते हैं कि वे कहाँ जा रहें हैं, स्वप्नदर्शी वहाँ पहले ही पहुँच चुके हैं।
25. आग सोने को परखती है। जीवन में चुनौतियाँ और विपत्तियाँ महान लोगों का इम्तिहान लेकर उन्हें परखती हैं।
26. अगर आप साहसी हैं, तो अपने दिल की बात सुनें और डरपोक हैं तो दिमाग की।
27. प्रत्येक व्यक्ति वह करता है, जो वह पसंद करता है, न कि वह जो कि वास्तव में किया जाना चाहिए ।
28. किसी विचार को इसलिए दूर मत फेंको क्योंकि वह असम्भव है, उसे एक अवसर दो।

29. स्वीकार करना ही किसी दुर्भाग्य के परिणामों से उबरने का पहला कदम है।

30. जीवन का महत्त्व दिनों की लम्बाई में नहीं, बल्कि उनके उपयोग में है, जो हमने किया।

31. अज्ञानता के प्रति सचेत होना ही ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम है।

32. निर्दोष तरीके से कुछ न करने से बेहतर है कि दोषपूर्ण तरीके से ही सही, कुछ कर्म तो किया जाए।

33. असली प्रतियोगिता हमेशा दो बातों के बीच होती है, कि आपने क्या किया है और आप क्या करने में सक्षम हैं।

34. संघर्ष करने वाले लोग मुश्किल समय में शिखर पर पहुँचते हैं।

35. कृतज्ञता की अपेक्षा करना दुःखों को न्योता देना है।

36. जो आपको पसंद नहीं उसके बारे में सोचने में एक मिनट भी बरबाद मत करो।

37. दुःखी रहने का रहस्य यह है कि चिन्ता करने की फुर्सत हो कि आप सुखी हैं, या नहीं ।

38. दुश्मन के लिए नफरत की आग को इतना तेज मत करो, कि खुद भी उसमें जल जाओ।

39. यदि विवेक संपन्न हो तो युवावस्था ही जीवन का श्रेष्ठतम समय है ।

40. अनुचित आलोचना दरअसल छुपी हुई, प्रंशसा होती है।

41. सैर–सपाटा यादों में ही ज्यादा मजा देता है।

42. दिमाग ज्यादा खुला रखोगे तो दूसरों के लिए इसमें फिजूल बातें डालने का रास्ता भी खुला रहेगा।

43. उन पर भरोसा करो जो सच को खोज रहे हैं और उन पर शक करो जिन्होंने इसे खोज लिया है।

44. वही गाने मीठे होते हैं जिनमें दुःख दर्द भरा होता है।
45. अक्सर लोग उसकी तारीफ करते हैं जिसे वे ठीक से समझते भी नहीं हैं।
46. दो चीजों का कोई ओर छोर नहीं – ब्रह्मांड और मूर्खता ।
47. किस्मत एक गलत फहमी है, जिस पर नादान भरोसा करते हैं और मूर्ख उसके पीछे भागते हैं।
48. संसार में ऐसे अपराध कम हैं, जिन्हें हम चाहकर भी माफ नहीं कर सकते ।
49. प्रार्थना करो कि कामयाबी इतनी तेजी से न आये कि उसे सहेज न सकें ।
50. भविष्य में कम्प्यूटर आदमी की तरह भले न सोचे आदमी कम्प्यूटर की तरह सोचने लगेगा ।
51. जहाँ उम्मीद की कोई किरण नहीं बची हो, वहाँ डर भी खत्म हो जाता है ।
52. हमेशा सच बोलोगे तो यह ध्यान नहीं रखना पड़ेगा कि कल क्या बोला था ।
53. एक सच्चा ह्रदय सारे संसार की विलक्षण शक्तियों से अधिक मूल्यवान है।
54. युवा लोग कायदे जानते है, बुजुर्ग उनके अपवाद ।
55. पहले आदमी के दास होने का खतरा था, अब रोबोट बनने का।
56. जिस तरह आग से आग नहीं बुझती उसी तरह पाप से पाप खत्म नहीं हो सकता।
57. हँसना सबसे आसान और सस्ती औषधी है।
58. अक्सर अपनी भूलों व गलतियों को अनुभव का नाम दे दिया जाता है।
59. धन के लिए शादी मत करो, क्योंकि यह उससे सस्ते में मिल जायेगा ।

60. पूरी कोशिश करने के बाद चिन्ता छोड़ दो और खुश रहो ।
61. बुद्धि के लिए अध्ययन उतना ही आवश्यक है जितना देह के लिए व्यायाम ।
62. समुद्र जैसी गंभीरता और गहराई वाला ही श्रेष्ठ पुरूष है।
63. जीवन में अवसर चूक जाना सबसे बड़ी हानि हैं।
64. कुछ लोग अच्छे अवसर खोकर ही महान बनते हैं।
65. आलोचनाओं को खारिज करने से पहले उन पर आत्म मंथन जरूर करें ।
66. असफलताएँ सफलता के रास्ते बताती हैं।
67. कार्य की संतुष्टि ही व्यक्ति को कुशल बनाती है।
68. ज्ञान प्राप्त करने में उम्र कभी बाधक नहीं बनती है।
69. जब एक व्यक्ति कोई काम करने में असमर्थता जताता है तो तुरन्त दूसरा तैयार हो जाता है, दुनियाँ कितनी तेज है।
70. जो क्रोध करता है वह स्वंय अपने अनिष्ठ का निर्माण करता है।
71. सच नग्न होता है, इसलिए आदमी उसे ढ़क देता है।
72. जब दुश्मन गलती कर रहा हो, तो उसमें दखल मत दो।
73. ज्ञानी कुछ न होते हुए भी प्रसन्न रहता है, जबकि अज्ञानी सब प्रकार से समृद्ध होते हुए भी चिंतित रहता है।
74. हम अच्छे आदमी को चुनना चाहते हैं, पर वह उम्मीद्वार ही नहीं होता।
75. जानबुझकर अनजान बने रहने से बुरा कुछ भी नहीं है।
76. आखिर में, हमें, अपने, दुश्मन के शब्द नहीं दोस्तों का मौन याद रखना चाहिए।
77. खाली बैठना तो सब को अच्छा लगता है, पर उसके परिणाम किसी को नहीं ।

78. बादशाह की दोस्ती और बच्चे की प्यारी बातें भरोसे के काबिल नहीं होती ।

79. आदर्शवादी व्यक्ति को यह भले न पता हो कि वह कहाँ जा रहा है पर यह जरूर पता होता है कि वह सही रास्ते पर चल रहा है ।

80. भेद छिपाना है तो चुप रहना ही बेहत्तर है ।

81. पत्थर दिल होने से बड़ा कोई अवगुण यदि है तो वह कमजोर दिमाग का होना ।

82. बुरे जन प्रतिनिधियों का चुनाव वे अच्छे नागरिक करते है जो वोट नहीं देते ।

83. हमेशा सही काम करो इससे कुछ लोगों को सुतंष्टि मिलेगी वही कुछ लोग चकित रह जाएगें ।

84. किसी खोखले विचार की खूबसूरती से भयावह कुछ भी नहीं है।

85. जल्दी ऊब जाने वाले व्यक्ति यदि सो नहीं रहे हों तो घातक साबित होते हैं।

86. यदि आप गाँठ खोल नहीं सकते तो उसे काटें भी नहीं ।

87. लड़ने से ज्यादा लड़ाई से बचने के लिए बहादुरी की जरूरत होती है।

88. जब घटनाओं को सुधार नहीं सको तो उन्हे उनके हाल पर छोड़ दो।

89. खुद को देखना है तो दुश्मन के आइने से देखो ।

90. कुछ खुशबू हमेशा उस हाथ में रह जाती हैं, जो आपको गुलाब देता है।

91. सपने आपकी चर्म उपलब्धियों के ब्लू प्रिन्ट है, इन्हे अपनी आत्मा में शिशु की तरह सहेज कर रखें।

92. हर आदमी हर दिन कुछ क्षणों के लिए मूर्ख होता है, समझदारी इसी में है कि बढ़ने न दिया जाये।

93. हम हमेशा यह सोचते हैं कि हमारे पास क्या नहीं है, पर शायद ही कभी सोचते कि हमारे पास कितना कुछ है।

94. हारने का विचार भी मन में लाओगे तो निश्चित ही हार जाओगे।

95. स्वर्ग और नरक और कहीं नहीं वरन आपके दिमाग में स्थित हैं, आप जहाँ चाहे वहाँ खुद को रख सकते हैं।

96. जो होता है उससे किसी इंसान को उतनी चोट नहीं पहुँचती जितनी कि उस घटना के बारे में विचार करने से पहुँचती है।

97. दुनियाँ में हर बिमारी का इलाज है या फिर नहीं है, अगर है तो उसे ढूँढने की कोशिश करो नहीं है तो परवाह मत करो।

98. अमीरी और गरीबी दोनों चक्रवद्धि ब्याज की तरह बढ़ती हैं।

99. योग्यता सिर्फ यह नापती है कि लोग क्या कर सकते हैं वह यह नहीं बताती कि लोग क्या करेंगे।

100. किसी चीज की कीमत जानना जितना आसान है उसका मूल्य समझना उतना ही मुश्किल है।

101. कोई व्यक्ति जिस हद तक जोखिम से बचना चाहता है, उसी हद तक वह डरा हुआ होता है।

102. त्याग का मतलब है अपने प्रियजनों के सुखद भविष्य के लिए निवेश करना जैसे हीरा रोशनी के सामने चमक उठता है, ठीक वैसे ही मनुष्य पुस्तकों के सम्पर्क में आकर ज्ञानपुंज बनता है।

103. बुद्धिमान व्यक्ति पैसे को दिल में नहीं दिमाग में रखता है।

104. किसी व्यक्ति का चरित्र नापना हो तो उसे सत्ता सौप दो।

105. जो खुद पर हँसना नहीं जानता उस पर लोग हँसते हैं।

106. सफर चाहे छोटा हो, या बड़ा शुरूआत तो पहले कदम से ही होती है।

107. जब तक नीतिगत युद्ध से काम चले, आमने सामने की लड़ाई शुरू करना मूर्खता है।

108. दुर्भाग्य उन्हें नहीं छलता जिन्हें सौभाग्य धोखा नहीं देता ।

109. कमजोर दुश्मन से दोस्ती कर लेना घातक है, क्योंकि ताकतवर हो जाने पर वह बदल भी सकता है।

110. जो हम सोचते हैं वह कभी–कभी होता है, जो नहीं सोचते वह अक्सर होता है।

111. बुरे लोगों से लड़ते वक्त सतर्क रहिये जीत की चाह में कहीं आप खुद भी बुरे न बन जायें।

112. जीभ वह हथियार है जो लगातार इस्तेमाल होते रहने से तेज हो जाती है।

113. दूसरे की योग्यता को स्वीकार कर लेना सबसे बड़ी योग्यता है।

114. जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है।

115. जीवन उस सतत् प्रक्रिया का नाम है जिससे हम तय करते रहते है कि अगले ही पल हमें क्या करना है।

116. असफलता नहीं बल्कि लक्ष्य का घटिया होना अपराध है।

117. पश्चाताप वह कर है जिसे आलसी लोग अपने आलस्य के एवज में चुकाते हैं।

118. बच्चे बड़ों की बातें सुनने में जितने लापरवाह होते हैं उनके कृत्यों का अनुसरण करने में उतने ही सचेत होते हैं।

119. मतभेद ऐसा प्लेट फार्म है जहाँ राजनीति पनाह दे पाती है।

120. विज्ञान की व्यथा यह है कि श्रेष्ठतम आविष्कारों के भयावह परिणाम हो सकते हैं।

121. कहीं न कहीं कुछ न कुछ अनपेक्षित आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, यही जीवन का सत्य है।

122. जो मित्र बनाना नहीं जानता, उसके दुश्मन भी नहीं होते ।

123. शिक्षा की जड़े भल्ले ही कड़वी हो, परन्तु उसके फल मीठे ही होगे।

124. सामने से लड़ने वाले दुश्मन घात लगाने वालों से कम खतरनाक है।
125. एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुलता है, पर हम अक्सर बंद दरवाजे को देखकर ही हार मान लेते हैं।
126. सौजन्य वह आवरण है जिससे कई पापों को ढका जा सकता है।
127. युद्ध इतना महत्त्वपूर्ण मसला है कि इसे सिर्फ योद्धाओं के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता।
128. अवसर के पूँछ नहीं होती सामने से निकल गया फिर आप उसे पीछे से नहीं पकड़ सकते।
129. स्वयं को बेईमानदार बनायें, तभी आप सुनिश्चित कर सकेगें कि दुनियाँ में कम से कम एक बेइमान कम हुआ है।
130. यदि तुम भविष्य के बारे में नहीं सोचते हो तो इसका मतलब है कि तुम्हारा कोई भविष्य नहीं ।
131. इस जीवन में कुछ भी सुनिश्चित नहीं सिवाय मौत व टैक्स के ।
132. सुधार से ज्यादा सरल आलोचना करना है।
133. जौखिम व्यापार की पहली, दूसरी व तीसरी शर्त है।
134. बेहत्तर प्रदर्शन करने के लिए अच्छे समय का इन्तजार मत करो, अभी से प्रयास करो।
135. किसी का चरित्र न जान पाओ तो उसके दोस्तों पर नजर डालो।
136. समय कम होने की शिकायत वही लोग करते हैं जो इसे नष्ट करते हैं।
137. संभावना और डर हमेशा एक दूसरे के आगे पीछे चलते हैं।
138. जब जरूरत हो तब ना कहने की ताकत ही असली स्वतंत्रता है।
139. आत्म स्वीकृति की अपेक्षा, आत्म बलिदान ज्यादा सरल है।
140. वह व्यक्ति सबसे अमीर है जिसकी खुशियाँ सबसे सस्ती है।

141. प्रतिष्ठा रूपी गुब्बारे में जब आप स्वयं हवा भरने लगते हैं तो वह फूट जाता है।

142. यथार्थ जानते हुए भी मनुष्य आँखों की अपेक्षा कानों पर ज्यादा भरोसा करता है ।

143. प्यार और भय एक दूसरे के दुश्मन हैं, एक को देखकर दूसरा लुप्त हो जाता है।

144. शब्द वास्तव में विचार हैं, जिन पर स्याही की बूँद गिरती है तो वे हजारों लाखों लोगों तक पहुँच जाते हैं।

145. प्रशंसा अच्छे को, और अच्छा तथा बुरे, को और बुरा इंसान बना देती हैं।

146. राजनीति शायद एक मात्र ऐसा पेशा है, जिसके लिए पहले से कोई तैयारी नहीं करनी पड़ती ।

147. सफलता उन्हे ही ज्यादा मीठी प्रतीत होती है, जो कभी सफल नहीं हो पाये हैं।

148. पानी ऐसा शब्द है जिसके सौ पर्याय है।

149. जीवन की शुरूआती असफलताऐं व्यावहारिक रूप से लाभप्रद ही होती हैं।

150. गंभीरता व नवाचार में छत्तीस का आँकड़ा है जहाँ गम्भीरता प्रवेश करती है नवाचार चुपके से बाहर चला जाता है।

151. यदि आपके पास विचार हैं तो समर्थकों की चिंता न करें वे मिल जायेगें।

152. अच्छा नेता जानता है कि कब परम्पराओं का हवाला देते हुए बच निकलना है और कब उनसे पीछा छुड़ाना है।

153. हार यतीम बच्चे की तरह होती है जबकि जीत को अनचाहे ही कई स्वयंभू पिता मिल जाते है।

154. जीत उपेक्षा, उलाहना और संघर्ष की सीढ़ियां चढ़ने के बाद ही हासिल होती है।

155. महान व्यक्ति वह है जो आपके अन्दर भी महान बनने का जज्बा जगाये।

156. ऐसा कोई युग कभी नहीं रहा जिसमें अतीत का गुणगान और वर्तमान पर विलाप न किया गया हो ।

157. जिन्दगी को नरक नहीं बनाना चाहते हो तो न किसी से अपेक्षा करो न उपेक्षा पर ध्यान दो।

158. हम जो हैं, वही बने रहकर, वह नहीं बन सकते जो कि हम बनना चाहते हैं।

159. यह मानव स्वभाव ही है कि जो गलतियों से सबक लेता है उदाहरणों से नहीं ।

160. ईश्वर द्वारा प्रति पल रची जा रही सृष्टि का लेखा जोखा ही इतिहास है।

161. कोई व्यक्ति सही मायने में वयस्क तब होता है जब वह यह स्वीकार करने लगे कि वह गलत भी हो सकता है।

162. शत्रु को तलासने के लिए ज्यादा दूर जाने की बजाय खुद के भीतर झांकिए वह मिल जाएगा।

163. किसी निर्दोष को दण्डित करने से बेहत्तर है कि एक दोषी व्यक्ति को बख्श देने का जोखिम उठाना।

164. नींव में सबसे नीचे का पत्थर ही सबसे मजबूत होता है।

165. हर व्यक्ति को ऐसे आदमी की तलाश होती है जो उसके बारे में सब कुछ जानता हो।

166. थकने की लम्बी और दुरूह प्रक्रिया का नाम ही जीवन है।

167. पड़ौसी के घर में आग लगाना तब बुद्धिमानी नहीं जब आपका घर उससे सटा हो।

168. जिस समाज में बुरे लोग नहीं रहते वहाँ अच्छे वकील भी नहीं हो सकते ।

169. सफलता खुशियों की कुंजी नहीं है, बल्कि खुश रहना सफलता का मूलमंत्र है।

170. प्यार और बुद्धिमानी दोनों एक साथ संभव नहीं हैं।

171. हर एक मिनट जब आप नाराज होते हैं, तो आप खुशी के साठ सैकण्ड खो देते हैं।

172. सहिष्णु बनना है तो दुश्मन से बेहत्तर अध्यापक कोई नही हो सकता।

173. गरीबी अभिशाप भले हो पर आदमी को यह जितना सिखाती है शायद कोई दूसरा नहीं।

174. जिन गलतियों पर हम शर्मसार नही होते वही आगे चलकर अपराध बन जाती हैं।

175. सोचकर देखिए आप छोटे मकान में भी उतने ही आराम से रह सकते हैं, जितना बड़े मकान में।

176. जब मामला दौलत से जुड़ा हो तो सलाह यही है कि किसी पर भरोसा मत कीजिए।

177. जीवन की खूबसूरत चीजें आपके करीब ही हैं, चाहे वह सांस लेने के लिए हवा हो या देखने के लिए रोशनी।

178. प्रतिशोध के मुकाबले खुशामद हमेशा मंहगी पड़ती है।

179. सत्य जितना शक्तिशाली होता है उतना खतरनाक भी।

180. सबसे बड़ी मूर्खता आप रोजाना एक जैसा काम करे और अलग –अलग परिणामों की उम्मीद करें।

181. दुश्मनों से सीखना भी फायदेमंद होता है, जबकि दोस्तो को सिखाना भी घातक हो सकता है।

182. जानकारी रखना ज्ञान व उसका इस्तेमाल करना बुद्धिमानी है।

183. समस्याएँ होना गलत नहीं है, समस्याओं को समस्या समझना गलत है।

184. लड़ाई में रणनीति बनाकर कुशलतापूर्वक पीछे हटना भी अपने आप में एक जीत है।

185. धोखे बाज प्यार में सिर्फ मजा देखते हैं जबकि भरोसेमंद लोग इसकी त्रासदी।

186. यदि सुखी रहना चाहते हैं, तो जिस बात पर विश्वास करते हैं उसी पर अमल भी करें।

187. विचारवान व्यक्तियों का मुट्ठी भर समूह ही सारी दुनिया को उलट–पलट कर सकता है।

188. बोलना और अच्छा बोलना, दो अलग–अलग बाते हैं।

189. गलतियों के सबक न लेने वालों के लिए सफलता के दरवाजे कभी नहीं खुलते।

190. व्यक्ति किस मुकाम पर पहुँचा इसमें महत्त्वपूर्ण यह है कि उसने वहाँ तक पहुँचने के लिए किन बाधाओं को तय किया।

191. किसी वस्तु की कीमत उसकी चमक से नहीं उसके प्रति चाहत से तय होती है।

192. अच्छी शुरूआत से ही आधा कार्यपूर्ण हो जाता है।

193. क्षमा ज्ञान का आभूषण है।

194. उज्ज्वल भविष्य के लिए सुसंस्कारों का सिंचन आवश्यक है।

195. कटु वचन से प्रेम समाप्त हो जाता है।

196. कहो वही जो तुम कर सको।

197. कठिनाइयाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं।

198. ज्ञान ही शक्ति है।

199. महान् कार्य करने के लिए आत्म विश्वास रखो।

200. परिश्रम असंभव को भी सम्भव बना देता है।

201. संगठन में अपार शक्ति है।

202. अहंकार व्यक्ति का शत्रु है।

203. दूसरों को क्षमा करो खुद को नहीं।

204. आलस्य दरिद्रता का मूल है।

205. अवसर के माथे पर बाल होते हैं, पर वह पीछे से गंजा होता है।

206. मुस्कराता चेहरा स्वागत को आमंत्रित करता है।

207. जो बिन विचारे कार्य करता है वह पछताता है।

208. ज्ञान मस्तिक का पोषण है, नशा नरक का द्वार है, क्रोध क्षण भर का पागलपन है, घमण्ड घर का दरवाजा है, निराशा मूर्खो का निष्कर्ष है।

209. जीने की कला कठिनाइयों को खत्म करना नही बल्कि उन्हें पारकर आगे बढ़ते रहना है।

210. हार जाना एक अस्थायी स्थिति है जबकि हार स्वीकार कर लेना एक स्थायी स्थिति है।

211. लक्ष्यहीन ताकत अपने बोझ से ही ढ़ह जाती है।

212. जीवन का अर्थ ही क्या रह जायेगा यदि हममें सतत प्रयत्न करने का साहस न हो।

213. लोकतंत्र की बुराइयों को खत्म करने का एक ही तरीका है और अधिक लोकतंत्र लागू करना।

214. युद्ध में सबसे पहले सच्चाई की मौत होती है।

215. भाषा से ज्यादा विचारों की मौखिकता महत्तवपूर्ण है।

216. जिन्दगी में यदि दुःसाहस और रोमांच नहीं तो समझो कुछ भी नही।

217. चुप रहने का कोई भी बेहतरीन मौका मत गवाओ।

218. जो जितना महान् होता है, वह उतना ही अबूझ भी होता है।

219. हम उन चीजों के बारे में कम बात करते हैं, जिन पर सबसे ज्यादा सोचते हैं।

220. हम हवा का रूख नहीं बदल सकते पर अपनी नाव तो दुरूस्त कर सकते हैं।

221. काम करने वाले नहीं, बल्कि काम की चिंता करने वाले हिम्मत हार जाते है।

222. कोई मनुष्य इतना धनी नहीं होता कि अपना अतीत खरीद सके।

223. सफलता असफलता का फैसला मन की वृत्तियाँ करती हैं।

224. एक मिनट की देरी की बजाय एक घंटे पहले पहुँचना अच्छा है।

225. कर्म के बिना विचार खाली पुलाव से अधिक कुछ नहीं ।

226. अच्छा समय सभी पुराने घाव भर देता है।

227. हमारे लक्ष्य निर्धारित करते हैं कि, हम क्या बनने जा रहे हैं।

228. अवगुण नौका में छेद के समान होते हैं।

229. बुरी खबर लाने वाले को कोई पसन्द नहीं करता ।

230. नाकामी का एक बड़ा कारण है, बढ़े कदम पीछे खींच लेना ।

231. किसी भी इंसान की पहचान उसके जवाब से नही बल्कि उसके सवाल से होती है।

232. हमेशा सफल रहने वाले लोग दोषारोपण नही करते, वे दूसरों की गलतियाँ, कमियाँ गिनाकर उन्हे नीचा दिखाने की कोशिश नही करते हैं।

233. हमेशा कामयाब रहने वाला व्यक्ति हर वक्त समस्या का समाधान जल्दी और सही समय पर कर लेता है।

234. विपरीत सोच वाले लोगों से भी एक हद तक ही बैठ–ऊठ रखें ऐसा करने से आप दृढ़ शक्तिवान बनेगें।

235. जिन व्यक्तियों को खुश रहने की आदत होती है, वे हर व्यक्ति के दिल पर राज करते हैं।

236. कार्य को बिना मानसिक परेशानी से हल करने की कोशिश करें ताकि कठिन मुकाम को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होवे।

237. हमेशा सफल रहने वाले लोग धैर्यवान, खुश मिजाज व्यवहारशील एवं परवाहहीन होते हैं।

238. पछतावा, पश्च्याताप करना यदि सकारात्मक है तो वो भविष्य में आपकी कामयाबी व सफलता की ओर बढ़ा सकता है।

239. कमजोर करने वाली वस्तुओं से दूर रहें।

240. अपनी लापरवाही और आलस को दूर करके होश के साथ कार्य करें।

241. खुद पर हद से ज्यादा ध्यान लगाना खुशी और सफलता दोनों में बाधा है।

242. कोई भी कार्य को सरलता से करना सीखें। इससे आप दूसरों के मन को भी जीत सकेगें और कामयाबी हासिल करेगें।

243. व्यक्ति अपना गुस्सा, क्रोध, लोभ, लालच और मोह में यदि सयंम बरते तो सफल होने में कोई बाधा नही आयेगी।

244. यदि व्यक्ति को कामयाब होना है तो किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए।

245. व्यक्ति 40 साल तक चाहे खाने के लिए जीता है लेकिन ध्यान रखे 40 के बाद सिर्फ जीने के लिए खाएं, क्योंकि 40 साल के बाद बुढ़ापा शुरू हो जाता है, अतः 40 के बाद व्यक्ति को अपने यथार्थ और परमार्थ के लिए जीना शुरू कर देना चाहिए, किसी स्त्री के पति बन जाओ तो इधर–उधर मुंह मारना छोड़ दो, बच्चों के बाप बन जाओ, तो बचपन के सब खेल छोड़ दो, दादाजी बन जाओ तो, दादागिरी करना छोड़ दो और परदादा बन जाओ तो दुनियाँ को ही छोड़ दो।

246. यदि व्यक्ति अपनी औरत (पत्नी) के अलावा सभी औरतों को माता और बहिन के रूप में देखे तो वह सफलता के मुख्य बिन्दु पर पहुँच सकता है।

247. यदि व्यक्ति दोस्त से दोस्ती रूपयों के लिए नही करता है तो वह दोस्ती के साथ कामयाबी हासिल कर सकता है।

248. व्यक्ति अपना लक्ष्य निश्चित रखता है तो वह जरूर सफलता प्राप्त कर सकता है।

249. व्यक्ति हमेशा गरीब, असहाय, बेसहारा, दुःखी, पीड़ित, अनाथ बच्चों आदि व्यक्तियों का सहयोग करके चलेगा तो अपने जीवन में कामयाब हो सकता है।

250. व्यक्ति को अगर ज्ञान प्राप्त करना हो तो चाहे ज्ञान बाँटने वाला निम्न कुल में जन्म लिया हुआ महान् व्यक्ति हो उससे भी ज्ञान अर्जित कर लेना चाहिए।

251. व्यक्ति को सफल होना है तो अपने मन मस्तिक की एवं धन सम्बन्धित बातें अपने पुत्र व पत्नी से छिपाकर रखनी चाहिए।

252. व्यक्ति को सफल होना है तो लताओं की तरह झुककर विद्वान लोगों का सम्मान करना चाहिए।

253. व्यक्ति अगर कामयाबी चाहता है तो वह दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं की कद्र करना सीखें।

254. आपका सच्चा मित्र वह है जो आपके भीतर छिपे सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालता है।

255. सफलता प्राप्त करनी है तो लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जी जान लगा दो।

256. श्रेष्ठता का अर्थ सफल होने से नहीं बल्कि सफलता की आदत बना लेने से है।

257. मेहनत और हिम्मत ने हर युग में चमत्कार कर दिखाया है।

258. योग्यता और अवसर आपकी तकदीर गढ़ने में कच्चे माल की भूमिका निभाते है।

259. आंशका कम और उम्मीद ज्यादा रखो, नफरत कम और प्यार ज्यादा करो, सब अच्छी चीजें आपकी होंगी।

260. सफल समझौता वह है जिसमें दोनो ही पक्षों को विश्वास हो जाए कि समझौते का असली फायदा उन्हें ही मिला है।

261. भाग्योदय भरपूर अवसर मिलने से नही बल्कि मिले हुए अवसरों का भरपूर लाभ उठाने से होता है।

262. दूसरों से मुकाबला करने के बजाय स्वयं से प्रतिस्पर्द्धा करे और अपने को बेहतर बनाएँ। आप अवश्य सफल हो जायेंगे।

263. घर को सुन्दर और मस्तिक को उर्वर बनाएँ रखने के लिए निरंतर प्रयत्न करते रहना जरूरी है।

264. जो शिक्षक बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करता, वह दरसल मूर्ख लुहार की तरह ठण्डे लोहे पर हथौड़े मारता रहता है।

265. कार्य कुशलता तभी आयेगी जब आप कार्य में आनन्द अनुभव करेंगे।

266. कुशलतापूर्वक किसी की बात को सुनना अकेलेपन और वाचालता का सबसे बढ़िया इलाज है।

267. अनुशासित इच्छा शक्ति को कोई ताकत नहीं रोक सकती।

268. सुबह की सैर पूरे दिन को खूबसूरत बना देती है।

269. कौड़ियों में निवेश कर करोड़ों में कमाना चाहते है तो व्यवहार को मीठा बनाइए ।

270. तरक्की के लिए विचारवान होना जरूरी है आपको पता होना चाहिए कि आप क्या और क्यों कर रहे है।

271. समृद्धि में दोस्त हमें जानते हैं, लेकिन अभावो में हम दोस्तों को जान पाते है।

272. अधूरे काम की कसक से ज्यादा उत्साहवर्धक कुछ नहीं।

273. कुछ लोगों को कुछ समय के लिए बेवकूफ बनाना मुमकिन है, पर सभी लोगों को हमेशा के लिए मूर्ख बना पाना नामुमकिन है।

274. अधिकतर लोग अवसर का लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि यह दबे पांव आता है और चुपचाप चला जाता है।

275. बचपन और बुढ़ापे के बीच का जो वक्त पल–पल सिकुड़ता जाता है, वही जवानी है।

276. भले लोगों के लिए कानून की जरूरत नहीं होती जबकि बुरे लोगों के लिए कोई कानून असरदार नहीं होता।

277. एक व्यक्ति की मौत त्रासदी होती है और हजारों लोगों की मौत आंकड़ा।

278. ईंधन से जैसे आग धधकती है वैसे ही ज्यादा सोचने से चिन्ता।

279. लोगों के पास शक्ति की नहीं, इच्छाशक्ति की कमी होती है।

280. किसी भी युग में सफलता प्राप्त करने के लिए ईमानदारी और मेहनत के अलावा कोई विकल्प नहीं।

281. अंहकार की हर विजय अन्ततः पराजय ही है।

282. जो नारी पिता की भली बेटी नहीं है, वह किसी की भली पत्नी शायद ही बन सके।

283. बिना धोखा खाए दोस्त और खुदगर्ज में भेद करना नामुमकिन है।

284. मनुष्य के अस्तित्व का निर्माण उसके मस्तिष्क की कार्यशाला में होता है।

285. उचित समय व उचित अवसर पर बोला गया शब्द इतिहास बन जाता है।

286. आशावादी हर कठिनाई में मौका देखता है निराशावादी हर मौके में कठिनाई देखता है।

287. एक साथ बहुत कुछ करने की प्रतिज्ञा करने वाला कभी कुछ नही कर पाता।

288. खाली दिमाग को खुले दिमाग में बदलना ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

289. राजनीति बिना रक्तपात का युद्ध है जबकि युद्ध एक रक्तरंजित राजनीति ।

290. यदि आप सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के इच्छुक है तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करें।

291. आन्दोलनों से घृणा उत्पन्न होती है सुलह नहीं।

292. पढ़े हुए को अमल में लाना ही उन्नति का उपाय है।

293. हर संकट में पुनर्जन्म का एक अवसर सामने आता है।

294. जिससे एक अक्षर भी सीखा हो उसका आदर करो।

295. जहाँ अज्ञान है वहीं अंहकार हो सकता है और जहाँ अंहकार है वहीं अज्ञान की सम्भावना होती है।

296. किसी भी काम को सफलतापूर्वक करने के लिए इच्छाशक्ति का होना सबसे जरूरी है।

297. बुद्धिजीवी समस्याओं को हल करते है जबकि मेधावी समस्याओं को पैदा ही नहीं होने देते।

298. कठोरता एक कमजोर आदमी की झूँठी ताकत है।

299. जिसे भविष्य का भय नहीं वही वर्तमान का आनंद ले सकता है।

300. मनुष्य का शरीर रथ व बुद्धि सारथी है, इन्द्रियाँ इसके घोड़े हैं, चतुर पुरूष घोड़ों को काबू में रख सुखपूर्वक यात्रा करता है।

20 सफलता के रामबाण मंत्र

1. बाधाएं कब बांध सकी, आगे बढ़ने वालों को।
   विपदाएं कब रोक सकी हैं, मरकर जीने वालों को।।
2. कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं हो सकता।
   एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो आसमान में सुराख हो सकता है।।
3. अगर फलक को जिद है बिजलियाँ गिराने की।
   तो हमें भी जिद है वहीं आशियाँ बनाने की ।।
4. उम्मीद वक्त का सबसे बड़ा सहारा है।
   हौसला अगर हो, तो हर मौज में किनारा है।।
5. तू एक दिन भी जी, मगर तू ताज बनकर जी।
   अटल विश्वास बनकर जी, अमर युग–गान बनकर जी।।
6. खुद अपने ऊबरने की करता नहीं जो कोशिश ।
   उस डूबने वाले पर हँसता है किनारा भी।।
7. खुद ही को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर लिखने से पहले, खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है।।
8. चाँद सूरज के जो हो खुद मोहताज भीख मांगो न उनसे।
   उजालो की, बन्द आंखो से भी ऐसा काम करो, आँख खुल जाएँ, आँखो वालो की।।
9. जुस्तजू हो तो सफर खत्म कहाँ होता है।
   यूं तो हर मोड़ पर मंजिल का गुमां होता है।।
10. जिसने इंसानियत सीख ली, जीने का अधिकार उसी को।
    जो कांटो के पथ पर आया फूलों का उपहार उसी को।।
11. भटको न अपने पथ से तो सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
    तुम भी ऊंचे उठ सकते हो, छू सकते हो नभ के तारे ।।

12. तिनके चुन–चुन महल बनाया लोग कहे घर मेरा।
ना घर मेरा ना घर तेरा, दुनियाँ रैन बसेरा।।

13. बदली है जमाने की हवा, तुम भी बदल जाओ।
हाथ आ नहीं सकता, गया वक्त संभल जाओ।।

14. मौजे कभी तो हारेंगी, तेरे यकीन से।
साहिल पे रोज एक घरौंदा बना के देख।।

15. लक्ष्य न ओझल होने पाए कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे कदम चुमेंगी, आज नहीं तो कल।।

16. मुश्किले दिल के इरादे आजमाती हैं।
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती है।
हौंसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर।
ठोकरें इन्सान को चलना सीखाती है।।

17. इस कर्म भूमि में फल के लिए, परिश्रम सभी को करना पड़ता है। ईश्वर सिर्फ लकीरें देता है, रंग हमको ही भरना पड़ता है।।

18. होकर मायूस ना यूँ शाम से ढलते रहिए, जिन्दगी और है सूरज से निकलते रहिए। देता नहीं कोई साथ तो क्या गम है, हमेशा हौंसलों का दामन थाम के चलते रहिए।

19. बुझी शमां फिर से जल सकती है, आँधी तुफाँ में कश्ती संकट से उबर सकती है। हौंसला ना हार मायूस ना हो इरादे ना बदल तकदीर तेरी किसी भी वक्त बदल सकती है।।

20. हैं अंधेरे बहुत तुम सितारे बनो, डूबतों के लिए तुम किनारे बनो। इस जमाने में हैं बेसहारा बहुत तुम सहारे न लो, बस सहारा बनों।।

21. गम की अंधेरी रात में दिल को न बेकरार कर।
सुबह जरूर आयेगी, सुबह का इन्तजार कर ।।

22. जग में जब तू आया था, जग हँसा तू रोया था।
बसर कर जिन्दगी ऐसी, सब रोएँ तू हँसता जा ।।

23. ज्ञान आपको मंजिल तक पहुँचाने में मदद करता है।
बशर्ते कि आपको अपनी मंजिल का पता हो।।

24. मोती समुद्र के किनारे पर नहीं मिलते। अगर आपको मोती पाना है, तो आपको समुद्र में गोता लगाना होगा।

25. ये कदम तुम उठा लो, खुदा की कसम।
हमको अपना बना लो, खुदा की कसम ।।

26. बागबां मेहरबां है सरे गुलिस्तां में ।
आशियाना बना लो, खुदा की कसम ।।

27. चाक दिल सीना तो होगा नही।
तीर बेशक चला लो खुदा की कसम।।

28. ना तुम्हारे हुए, और न होगें कभी।
उनसे दामन बचा लो खुदा की कसम।।

29. अश्क गुल न सही, चन्द कांटे सही।
अपना गुलशन सजा लो, खुदा की कसम।।

30. आईना क्यों न दूँ कि तमाशा कहे जिसे।
ऐसा कहाँ से लाऊँ कि तुमसा कहे जिसे।।

31. मेरी खाक में हर तमन्ना मिलाकर ।
न इस तरह जाओ निगाहें चुराकर ।।

32. यही मुझको डर है कि झोंके हवा के।
न ले जायें ये चार तिनके उड़ाके।।

33. तमाशा कहीं अपनी बरबादियो का ।
कोई देख सकता है क्या आजमा कर।।

34. दे सके जो सहारा शबे गम तुम्हें।
पास उसको बुला लो खुदा की कसम ।।

35. बोल तुझे जन्म दिन पर क्या भेंट दूँ, दोस्ती चाहिए या जान वार दूँ। स्कूटर मोपेड या फिर फरारी कार दूँ, इतने से काम चलेगा या दो चार गप और मार दूँ।

36. बहारों के मंजर बंवडर नजर आते हैं, गमों के नाले समंदर नजर आते हैं, बना किश्ती तुझे पार करता मैं जिन्दगी, सपनो के महल अब खंडहर नजर आते हैं।

37. रहे जो उम्र भर अनपढ़ उसे विद्वान कहते है। उड़ा दे माल जो घर का उसे मेहमान कहते है। मिले जूतों की मालाएँ उसे सम्मान कहते हैं, बना दे मर्द को औरत उसे विज्ञान कहते है।

38. बड़ी मेहनत से मेरी दुनियाँ लुटाई होगी, मेरी मोहब्बत की हस्ती भी मिटाई होगी। ला तेरे पैंरों में लगा दूँ जरा मरहम, दिलो को ठोकर मारने में चोट आई होगी ।

39. उसकी जुल्फों की खुशबू गुलाबों में है।
मेरी तस्वीर उसकी किताबों में है ।।

21. दोहे

1 (कबीर ग्रंथावली)

1. गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।
बलिहारि गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय ।।
2. पतिव्रता पति को भजै और न आन सुहाय ।
सिंह बच्चा जो लंघना, तो भी घास न खाय ।।
3. आब गयी आदर गया, नैनन गया सनेहु ।
ये तीनों तब ही गये, जबहिं कहा कछु देहु ।।
4. प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय ।
कह कबीर प्रभु को भजै प्रभुता चेरी होय ।।
5. आतम अनुभव ज्ञान की जो कोई पूछे बात ।
सो गूंगा गुड़ खाइके, कहै कौन मुख स्वाद ।।
6. जिहि घर साध न पूजिए, हरि की सेवा नाहि ।
ते घर मरुघट सारखे, भूत बसे तिन मांहि ।।
7. कथनी थोथी जगत में करनी उत्तम सार ।
कह कबीर करनी सबल, उतरै भव जल पार ।।
8. धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कछु होय ।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।
9. माया दीपक नर पंतग, भ्रमि इवै पड़त ।
कहै कबीर गुरू ग्यान थै, एक आध उबरंत ।।
10. कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरस्या आई ।
अंतरि भीगी आत्मां, हरि भई बनराइ ।।
11. कहौ संतो क्यूं पाइये दुर्लभ हरि दीदार ।
ज्यों रवि के उदय सुकमल प्रकाश ।।
12. बिरंह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोई ।
राम वियोगी ना जिवै, जिवै तो बौंरा होई ।।

13. आँखणियाँ झांई पड़ी, पंथ निहारि निहारि ।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि–पुकारि ।।
14. हँसि–हँसि कन्त न पाइये, जिनि पाया तिनि रोई ।
जो हांसे ही हरि मिलै तौ नहीं दुहागिन कोई ।।
15. पांणी हो ते हिम भया, हिम हवै बया बिलाइ ।
जो कुछ था सोई भया, अब कछु कहा न जाइ ।।
16. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं ।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या मांहि ।।
17. कबीर कूता राम का, मुतियां मेरा नाऊं ।
गले राम की जेबड़ी, जित खैंचे तित जाऊं ।।
18. यह ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल ।
दिन दस के ब्यौहार कौं झूठें रंगि न भूलि ।।
19. कबीरा यह जग निर्धता, धनवन्ता न कोय ।
धनवन्ता सो ही जानिए, जांके राम नाम धन होय ।।
20. आम पकै तब मुख पकै, होते काग को रोग ।
भाग बिना नही पाईए, भली वस्तु को भोग ।।
21. कबीरा तू ही कबीरू तू तोरे नाम कबीर ।
रामरतन तब पाइये जद पहिले तज शरीर ।।
22. भारी कहूँ तो बहु डरौं, हलका कहूँ तो झूठा ।
मैं का जानो राम कूँ, नैनूँ कबहूँ न दीठा ।।
23. जल में कुंभ, कुंभ में जल है बाहिर भीतर पानी ।
फूटा कुंभ, जल जलहिं समाना, यह तत कथो गियानी ।।
24. ब्राह्मण ग्यारसि करै चौबीसों, काजी माह रमजांन ।
ग्यारह मास जुदे क्यूँ कीये, एकहि मांहि ममांन।।
25. काँकर पाथर जोरि के मस्जिद लियो बनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरो भयो खुदाय ।।

26. और खुदाई मसीति बसत है, दुहुँ मैं किनहुँ न हेरा ।
पूरिब दिसा हरि का बासा, पछिम अलह मुकांमां ।।
दिल ही खोजि दिलैं दिल भीतरि इहाँ राम रहिमाना ।।

27. बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खात हैं, ताको कहा हवाल ।।

28. एक अचंभा देखा रे भाई, ठाढ़ा सिंघ चरावै गाइ ।
पहलैं पूत पीछे भई माई, चेला के गुरू लागै पाइ ।।

29. जल की मछरी तरवर ब्याई, पकरि बिलाई मुरगैं खाई ।
बैलहिं डारि गूंति घरि आई, कुत्ता कूँ ले गई बिलाई ।।

30. तलि करि साषा ऊपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लोग फूल।
कहै कबीर या पद को बूझै ताकूँ तीन्यूँ त्रिभुवन सूझै ।।

31. बिनां पियाला अमृत अचवै, नदी नीर भरि राखै ।
कहै कबीर सो जुग जुग जीवै, राम–सुधारस चाखै।।

32. मांटी कहै कुम्हार से, तू का रूँदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रूँदूँगी तोय ।।

33. हम तो तुमरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।
दीन–दयाल दया करि आओ, समरथ सिरज नहार।।

34. रज गुन ब्रह्मा तम गुन संकर, सत गुन हरि है सोई ।।
कहै कबीर एक राँम जपहु रे, हिंदू तुरक न कोई ।।

35. तोको पीव मिलेंगे, घूँघट के पट खोल रे ।
घट–घट में वही साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे ।

36. धन जोबन को गरम न कीजै झूठा पचरँग चोल रे ।
सुन्न महल में दियना बार ले, आसन सों मत डोल रे ।
जोग जुगत सों रंगमहल में, पिय पायो अनमोल रे।
कहैं कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।।

37. अरे इन दोउन राह न पाई ।
हिंदू अपनी करे बड़ाई गागर छुवन न देई ।
वेश्या के पायन तर सौवे यह देखो हिंदुआई ।।
38. मुसलमान के पीर–औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।
खाला केरी बेटी ब्याहैं घरहि में करै सगाई ।।
39. वाहर से इक मुर्गा लाये धोय–धाय चढ़वाई ।
सब सखियाँ मिलि जेंवन बैठीं घर भर करै बड़ाई ।।
40. हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो कौन राह हूँ जाई ।।
41. ना जाने साहब कैसा है।
मुल्ला होकर बाँग जो देवें
क्या तेरा साहब बहरा है।।
कीड़ी के पग नेवर बाजे
सो भी साहब सुनता है।।
माला फेरी तिलक लगाया
लंबी जटा बढ़ाता है ।।
अंतर तेरे कुफर – कटारी
यों नहिं साहब मिलता है।।
42. मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं छगरी, ना मैं भेंड़ी, ना मैं छुरी गँड़ास में ।
नहीं खाल में, नहीं पूँछ में ना हड्डी ना माँस में ।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे केलास में ।
ना तो कौन क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल–भर की तालास में ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ।।

43. नैनन की करि कोठरी पुतरी पलंग बिछाय ।
पलको को चिक डारि कै पिय को लिया रिझाय ।।
44. मानसरोवर सुभर जल, हँसा केलि कराहिं ।
मुकता फल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं ।।
45. प्रेमी ढूंढत मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोई ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ ।।
46. हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि ।।
स्वान रूप संसार है, भूँकन देय झख मारि ।।
47. पखा पखि के कारनै, सब जग रहा भुलान ।
निरपख होइ के हरि भजै, सोइ संत सुजान ।।
48. हिंदू मुआ राम कहि, मुसलमाल खुदाइ ।
कहै कबीर सो जीवता, जौ दुहुँ के निकटि न जाइ।।
49. काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम ।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम ।।
50. ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।।
51. करता था तो क्यों किया, अब करि क्यों पछताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय ।।
52. माला फेरत जग मुआ, फिरा ना मन का फेर ।
कर का मनका डारि दे, मनका मनका फेर ।।
53. सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जाय।।
54. बड़ा भया तो क्या भया जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।

55. दुःख में सुमिरन सब करै, सुख में करे ना कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे को होय ।।
56. निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटि छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय ।।
57. चलती चाक्की देख के, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबुत रहा न कोय ।।
58. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।।
59. बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपणा, मुझसे बुरा न कोय ।।
60. माया मरी ना मन मरा, मर–मर गया शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरे, कह गये संत कबीर ।।
61. मेरा मुझसे कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय।
तेरा तुझको सौपता, क्या लागै है मोय ।।
62. जाति ना पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान ।।
63. ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा सांई तुज्झ में है, जाग सके तो जाग ।।
64. माक्खी गुड़ में गड़ी रहे, पंख लिए लिपटाय ।
हाथ मले और सीर धुनै, लालच बुरी बलाय ।।
65. यह तन विष की बैल री, गुरू अमृत की खान ।
शीश दिये जो गुरू मिले तो भी, सस्ता जान ।।
66. समय बड़ा अनमोल है, मत कर यूं बरबाद।
कुछ तो ऐसा काम कर, लोग करे फिर याद ।।

67. पंडित देखहु हृदय विचारी, को पुरूषा को नारी।
सहज समाना घट—घट बोलै, बाको चरित विचारी ।।

68. कबीर, तीन लोक पिंजरा भया, पाप पुण्य दो जाल।
सभी जीव भोजन भय, एक खाने वाला काल ।।

67. कोई कहै हमारा राम बड़ा है, कोई कहे खुदाई रे ।
कोई कहै हमारा ईसा मसिह बड़ा, ये बाटा रहे लगाई रे ।।

68. कबीर, पंडित और मसालची, दोनों सूझै नाहि।
और ने करै चान्दना, आप अंधेरे माहि ।।

69. गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल है, पूछो वेद पुराण ।।

70. माई मसानी शेढ़ शीतला, भैरव भूत हनुमंत ।
परमात्मा उनसे दूर है, जो इनको पूजंत ।।

71. साथी हमारे चले गए, हम भी चालन हार ।
कोए कागज में बाकी रह रही, ताते लाग रही वार।।

72. देह पड़ी तो क्या हुआ, झूंठा सभी पटीट ।
पक्षी उड़या आकाश कूं, चलता कर गया बीट ।।

73. बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाय थाल ।
आना जाना लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल ।।

74. पतझड़ आवत देख कर, बन रोवै, मन माहि ।
ऊँची डाली पात थे, अब पीले हो हो जाहि ।।

75. तरूवर कहता पात से, सुनो पात एक बात।
यहां की याहे रीति है, एक आवत एक जात।।

76. सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाय।
कहै कबीर सुमिरण किये, सांई मांहि समाय ।।

77. संत मिलन कूँ चालिए, तज माया अभिमान।
जो–जो कदम आगे रखे, वो ही यज्ञ समान।।

78. दर्शन साधु का, परमात्मा आवै याद ।
लेखे में वोहे घड़ी, बाकी दिन बाद ।।

79. दर्शन साधु का, मुख बसै सुहाग ।
दर्श उन्हीं को होत हैं, जिनके पूर्ण भाग ।।

80. तिल भर मछली खायके, कोटि गऊँ दे दान ।
कासी करौत ले मरे, तो भी नरक निदान ।।

81. माया मरी न मन मरा, मर–मर गए शरीर।
आशा तृष्णा न मरी कह, गए दास कबीर।।

82. गला काटि कलमा भरे, कीया कहै हलाल।
साहब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।

83. दिन को राजा रहत है, रात हनत है गाय ।
यह खून वह वंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।

84. कबिरा तेई पीर है, जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर ।।

85. खूब खाना है खींचड़ी, मांहि परी टुक लौन ।
मांस पराया खायकै, गला कटावै कौन ।।

86. मुसलमान मारै करदसो, हिंदू मारै तरवार ।
कहैं कबीर दोनूं मिलि, जैहै यम के द्वार ।।

87. मांस खाय ते ढ़ेड सब, मद पीवै सो नीच।
कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊँच ।।

88. मांस मछलियां खात है, सुरा पान से हेत ।
ते नर नरकै जाहिगें, माता–पिता समेत ।।

89. झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
90. जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।
91. तीन देव को सब कोई ध्यावै, चौथे देव का मरम न पावै।
चौथा छाड़ पंचम को ध्यावै, कहै कबीर सो हम पर आवै।।
92. ओंकार निश्चय भया, यह कर्ता मत जान ।
साचा शब्द कबीर का, पर्दे माही पहचान ।।
93. रामकृष्ण अवतार है, इनका नाही संसार ।
जिन साहेब संसार किया, सो किन्हूं न जन्म्या नार ।।
94. चारभुजा के भजन में, भूलि परे सब संत ।
कबिरा सुमिरों तासु को, जाके भुजा अनंत ।।
95. समुद्र पाट लंका गए, सीता को भरतार ।
ताहि अगस्त मुनि पीय गयो, इनमें को करतार ।।
96. गोवर्धनगिरि धारयो कृष्णजी, द्रोणागिरि हनुमंत ।
शेष नाग सब सृष्टि सहारी, इनमें को भगवंत ।।
97. काटे बंधन विपति में, कठिन किया संग्राम ।
चिन्हों रे नर प्राणियां, गरूड़ बड़ो की राम ।।
98. कह कबीर चित चेतहूं, शब्द करौ निरूवार ।
श्रीरामहि कर्ता कहत है, भूलि परयो संसार।।
99. जिन रामकृष्ण व निरंजन कियो, सो तो कर्ता न्यार ।
अंधा ज्ञान न बूझई, कहै कबीर विचार ।।
100. लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ।।

2. रहीम –रत्नावली

1. रहिमन तब लगि ठहरिए, दान मान सम्मान।
   मान घटत देखिए जबहिं तुरतहि करिय पयान ।।
2. बिगरी बात बने नहीं लाख करो किन कोय ।
   रहिमन फाटे दूध ते मथे न माखन होय।।
3. संगति सुमति न पावहीं, परे कुमति के धंध ।
   राखौ मेलि कपूर में हींग न होय सुगंध ।।
4. समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय ।
   सदा रहे नहीं एक सी, का रहीम पछिताय ।।
5. रहिमन विपदा हूँ भलि जो थोरे दिन होय ।
   हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय।।
6. जे गरीब पर हित करें, ते रहिम बड़ लोग ।
   कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।
7. दया बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात ।
   का रहिम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात ।।
8. पावस देखि रहिम मन कोयल साधी मौन ।
   अब दादुर वक्ता भये, हमे पूछि हैं कौन ।।
9. कहु रहिम कैसे निभे, बेर केर को संग ।
   वे डोलत रस आपने उनके फाटत अंग ।।
10. रहिमन जिह्वा बावरी कहि गई सरग पताल ।
    आपुहि कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ।।
11. जो रहिम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।
    बारै उजियारो करे, बढै अँधेरो होय।।
12. रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं ।
    उनसे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ।।

13. अमरबेलि बिन मूल की, प्रतिपालत है ताहि ।
'रहिमन' ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरए काहि ।।
14. प्रीतम छबि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय 'रहीम' लखि, आप पथिक फिर जाय।।
15. सर सूखे पक्षी उड़ै, और सरन समाहिं ।
दीन मीन बिन पक्ष के, कहु 'रहीम' कहँ जाहिं ।।
16. माँगे घटत 'रहिम' पद, कितौ करौ बड़ काम ।
तीन पैंड़ बसुधा करी, तऊ वामनै नाम ।।
17. 'रहिमन' अँसुवाँ नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कह देह ।।
18. गुन ते लेत 'रहीम' जन, सलिल कूप ते काढ़ि ।
कूपहु ते कहु होत है, मन काहू को बाढ़ि ।।
19. तरूवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान ।
कहि 'रहीम' परकाज हित, सम्पति संचहि सुजान ।।
20. दुरदिन परे 'रहीम' कहि, भूलत सब पहिचान ।
सोच नहीं बित हानि को, जो न होय हित हानि ।।
21. जो 'रहीम' मन हाथ है, मनसा कहु किन जाहिं ।
जल में जो छाया परी, काया भीजत नाहिं ।।
22. कहि 'रहीम' कैसे बनै, केरि बेर को संग ।
वे डोलत रस आपने, उनते फाटत अंग ।।
23. धनि 'रहीम' जल पंक को, लघु जिय पयित अधाय ।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय ।।
24. दीन सबन को लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय ।
जो 'रहीम' दीनहिं लखै, दीन–बन्धु सम होय।।

25. बड़े दीन को दुख सुने, लेत दया उर आनि ।
हरि–हाथी सों कब हुती, कहि 'रहीम' पहिचानि।।
26. 'रहीमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानस, चून ।।
27. खीरा को मुह काटि कै, मालियत लौन लगाय।
'रहिमन' करूये मुखन की, चहियत यही सजाय।।
28. मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
'रहीमन' सोई मीत है, भीर परे ठहराय ।।
29. यौं 'रहिम' सुख होत है, उपकारी के अंग ।
बांटनवारे के लगे, ज्यौं मेहंदी को रंग ।।
30. ज्यों 'रहीम' इक दीप ते, प्रगट सबै निधि होय।
तन सनेह कैसे दुरै, दग दीपक जहँ दोय ।।
31. अच्युत–चरन–तरंगिनि, शिव सिर मालति माल ।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव भाल ।।
32. धूरि धरत नित सीस पै, कहु 'रहीम' केहि काज ।
जेहि रज मुनि–पत्नी तरी, सो ढूँढ़त गजराज ।।
33. मन से कहाँ 'रहिम' प्रभु, दग सो कहाँ दिवान ।
देखि दगन जो आदरै, मन तेहि हाथ बिकान ।।
34. 'रहिमन' अपने पेट सों, बहुत कहयो समुझाय ।
जो तू अनखाये रहे, तोसों को अनखाय ।।
35. 'रहिमन' कबहुँ बड़ेन के, नाहिं गर्व को लेस ।
भार धरैं संसार को, तऊ कहावत सेस ।।
36. 'रहिमन' यों सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत ।
ज्यौं बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत ।।

37. ‘रहिमन’ राज सराहिये, ससि सम सुखद जो होय ।
कहा बापुरो भानु है, तप्यो तरैयन खोय ।।
38. प्रीति–रीति सब सों भली, बैर न हित–मित गोत ।
‘रहिमन’ याहि जनम की, बहुरि न संगति होत ।।
39. अनुचित उचित ‘रहीम’ लघु करहि बड़नि के जोर।
ज्यों ससि के संजोग ते, पचवत अगिन चकोर ।।
40. नाद रीझ तन देत मृग, नर धन हेत समेत ।
ते ‘रहीम’ पसु ते अधिक, रीझहूँ कछू न देत ।।
41. ‘रहिमन’ चुप है बैठिये, देख दिनन को फेर ।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगि है देर।।
42. जो ‘रहीम’ उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।
43. ‘रहिमन’ निज मनकी व्यथा, मनही राखौ गोय ।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ।।
44. ‘रहिमन’ नीचन संग बसि, लगत कलंक सब काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहि सब ताहि ।।
45. ‘रहिमन’ रहला की भली, जो परसै चित लाय ।
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय ।।
46. ‘रहिमन’ विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।
47. बरू ‘रहीम’ कानन भलो, बास करिय फल भोग ।
बन्धु मध्य धनहीन है, बसिबो उचित न जोग ।।

3 दादूदयाल (श्री दादू वाणी)

1. दादू नमों नमोः निरन्जन नमस्कार गुरू देवतः ।
   वन्दनं सर्व साधवां प्रणाम पारगतः ।।
2. पर ब्रहम परापरं सो मम देव निरंजनम् ।
   निराकरं निर्मलय तस्य दादू बदंनम् ।।
3. दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय ।
   घर में धरा न पाइए, जो कर दिया न होय ।।
4. निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौडी बहै बिचारा ।
   आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।।
5. झुठा गर्व गुमान तजि, तजि आया अभिमान ।
   दादू दीन गरीब है पाया पद निर्वाण ।।
6. राजा रंग सब मरहिंगे, जीवै नाहि कोई ।
   सोई कहिये जीवता, जे मरि जीवा होई ।।
7. दादू मेरा बैरी मैं मुवा, मुझें न मारे कोई ।
   मैं ही मुझ को मारता, मैं मर जीवा होई ।।
8. पतिव्रता पति जीव कौ, सेवे दिन अरूराति ।
   दादू पति कूं छड़ि करि संगिन जाति ।।
9. दादू जै तू प्यासा प्रेम का तो जीवन की क्या आस ।
   सिर कै साटै पाइये, तो भरि भरि पीवे दास ।।
10. नारी पीवे पुरूष कौ, पुरूष नारी को खाई ।
    दादू गुरू के ज्ञान बिन, दोनों गले बिलाई ।।
11. माता नारी पुरूष की, पुरूष नारी का पूत ।
    दादू ज्ञान विचार कर छोड़ गये अवधूत ।।
12. पंच तत्व का पूतला यहु पिण्ड सवारा ।
    मन्दिर माटी मांस का, विनसत नांहि बारां ।।

13. माणस जल का बुदबुदा, पानी का पोटा ।
दादू काया कोट में, मैं वाया मोटा ।।
14. दादू यहु तन पींजरा, माही मन सुवां ।
एक नाम अल्लाह का पढ़ हाफिज हुआ।।
15. दादू नूर अल्लाह है, दादू नूर खुदाह ।
दादू मेरे पीर है, कहे अकबर शाह ।।
16. गरीब सागर कूप का पानी परम पवित्र ।
पान करे जो प्रेम से पावे मोद विचित्र ।।
17. भेंट चढ़ाकर दंडवत करते श्रदा युक्त ।
वे श्रद्धालु होत है, अवश्य अद्य से मुक्त ।।
18. श्रेष्ठ कामना पूर्ण हो, अशुभ होत है नष्ट ।
दर्शन देव का दूर करता है कष्ट ।।
19. दादू के दरबार में, लेश कमी है नाहिं ।
किन्तु भावना शुद्ध तो होनी चाहिए मांहि ।।
20. दादू मन्दिर नाव है भव सागर से पार ।
करे उसे बैठकर, करता बरम विचार ।।
21. दादू मन्दिर महात्म्य, पूरा कहा न जाए ।
शुद्ध भाव से जो चहै सो ही प्राणी पाय ।।
22. छः ऋतु बारह मास, देखी ऐसी विधि किजै ।
माया मन से टाल नाम गोविन्द का लिजै।।
23. कुबुधि भूमि मन मूल तहां उगी विष बेली ।
संशय के जल सींचि, काम के कूपंल मेल्ही ।।
24. धनिशो मंडल देश धनि, धनि वो साधु ग्राम ।
जिहि देशा दादू बसै लीजे हरि का नाम ।।

25. चोरी जारी हिंसता, तनहि दोष है तीन ।
निन्दा झूठ कठोरता वाक चल वच तीन ।।

26. कुल कुटुम्ब मात–पिता गुरू दादू मेरे ।
झुठे मोह विकार के, जग में बहुतेरे ।।

27. श्रवण में बैना रहे, नयना में दिदार ।
गुरू दादू क्यों भूलिए जिनके कोटि कोटि उपकार ।।

28. ज्यों रवि के उदय सुकमल प्रकाश ।
पूखे स्वाति सीप की आश ।।

29. शशि के उदय चकोर उछाह ।
कामिनी विगसे आवे नाह ।।

30. गगन गरजि चातक सुख होय ।
वर्षे मेघ जीवे सब कोय।।

31. भाग्य बड़े ही पाईये, साधुन को सत्संग ।
जन गोपाल जगदीश से तन मन लागा रंग ।।

32. पहली था सो अब भया, अब सो आगे होई ।
दादू तीनों ठोर की, बुझे बिरला कोई ।।

33. सोंधी नहीं शरीर की औरों को उपदेश ।
दादू अचरज देखिया, ये जांयेगे किस देश ।।

34. सब हम देख्या शोध कर वेद कुरानों माहिं ।
जहां निरजंन पाईये सो देश दूर इत नाहिं ।।

35. अल्ला आली नूर का, भर–भर प्याला देहुं ।
हम को प्रेम पिलाय कर, मतवाला कर लेहुं ।।

36. सेवग सुरा राम का, सोई कहेगा राम ।
चेतन पहरै आपणै, कर गहि खड़ंग सम्भाल ।।

37. आपा मेटे हरि भजै, तन मन तजै विकार ।
निवैरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार
38. दया धर्म का रूखड़ा सतसो बाधता जाय ।
सन्तोष से फूले फलै, दादू अमर फल खाय ।।
39. दादू हमवासी परब्रहम के, पार ब्रहम का खेल ।
ज्योति जगावै अलख की, बिन बाती बिन तेल ।।
40. ब्रह्मा, शंकर, शेस, मुन्नी नारद, ध्रू, सुकदेव ।
सकल साधु दादू सही जे लागे हरि शेव ।।
41. माया मन लागे नहीं, तन मन मेल्या मार ।
जैत सरीसा जौहरी, दादू के दरबार ।।
42. कोण पटंतर दीजिए, दूजा नाही कोई ।
राम सरीखा राम है, सुमिरणा ही सुख होई।।
43. सब जग छेति काल कसाई, कर्द लिये कंठ काटे ।
पंच तत्व की पंच पंखरी, खण्ड–खण्ड करि बांटे ।।
44. इस कलि केते हवे गये, हिंदू मुसलमान ।
दादू सांची बंदगी, झूठा सब अभिमान ।।
45. बहम गाई त्रय लोक में, साधु अस्थनपान ।
मुख मारग अमृत झरे, कत ढूढे दादू आन।।
46. तन नहि भूला मन नहि भूला, पंच न भूला प्राण ।
साधु शब्द क्यों भूलिए, रै मन मूढ अजाण ।।
47. ज्यों–ज्यों पीवे राम रस, त्यौं–त्यौं बढ़े प्यास ।
ऐसा कोई एक है, बिरला दादू दास ।।
48. कहा हमारा मान मन, पापी परिहर काम ।
विषयों का संग छाड़ दे, दादू कह रे राम ।।

49. दुःख दाता को भी सदा, सुख दे संत सुजान ।
तरू निज छेदक जनों को, छाया करत प्रदान ।।

50. राम बिना किस काम का, नहि कौड़ी का जीव ।
सांई सरीखा है गया, दादू परर्से पीव ।।

4 दोहे (अमीर खुसरो)

1. एक नार ने अचरज किया, सांप मार पिंजरे में दिया ।
ज्यों–ज्यों सांप ताल को खाय, सुखे ताल सांप मरि जाय।।

2. वह आवे तो शादी होय, उस बिन दूजा और न कोय।
मीठे लागे वाके बोल, क्यों सखि साजन, ना सखि ढोल।।

3. गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केश ।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुं देश ।।

5. दोहे (सूर्यमल मिश्रण)

1. इला न देनी आपणी, हालरियै हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय ।।

2. मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव ।
पीव मुवा घर आविया, विधवा कवण बणाय ।।

3. निधड़क सुता केहरी, तो भी विमुहा पाव ।
गज गैंडा धीर न धरै, बज्र पड़ै बघबाव ।।

4. बिण मरियां बिण जीतिया, धणी आविया धाम ।
पग–पग चूड़ी पा छटू, जै रावत री जाम ।।

5. कै दीठो हय आवतौ, कै दीठो पर फौज ।
हेली कवण सिखावियौ उड़णों–उड़णों ओज ।।

6. सुण हाकौ रण आंगणै, क्यूं न मरै धणईठ ।
मुझ भरोसौ दूध रो, जहर भजाड़े पीठ ।।

7. राजिया रा दूहा

1. अड़वां खड़वां आथ, सुदतारा विलसै सदा।
सूमां चलै न साथ, राई जितरी, राजिया!।।

2. अवसर पाय अनेक, भावैं कर भूंडी भली।
अंत समै गत एक, राव—रंक री, राजिया !।।

3. आगे मिलै न अन्न, रंक पछै पावै रिजक।
मैला ज्यां रा मन्न, रहै सदा ही, राजिया!।।

4. आछा जुध अणपार, धार खग्गां सनमुख धसै।
भोगी होई भरतारी, रसा जिके नर, राजिया!।।

5. आछोड़ां ढिग आय, आछोड़ा भेळा हुवै।
ज्यूं सागर में जाय, रळै नदी—जळ, राजिया!।।

6. ऊंच—नीच अंतराय कीरत कीधी किरतबां।
मिनख—जमारै मांय रहै भलाई, राजिया !।।

7. ऊंचै गिरवर आग, जळती सा देखै जगत।
पाण जळती मिज पाय, रती न सूझै, राजिया!।।

8. एक जतन सत ह, कूकर कुगंध कुमाणसां।
छेड़ न लीजै छेह, रैवण दीजै, राजिया!।।

9. औगणगारा और, दुखदायी सारी दुनी।
चालू चाकर चोर, रांधै छाती, राजिया!।।

10 काळी भोत करूप, कस्तुरी कांटै तुलै।
सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ां तूलै, राजिया!।।

11. खळ धूकळ कर खाय, हाथळ— बळ मोताहळां।
जो नाहर मर जाय, रज—त्रण भखै न, राजिया!।।

12. खाग तणै बळ खाय, सिर साटै रो सूरमा।
ज्यां रो हक जाय, राम निभावै, राजिया!।।

13 गैला गंडक गुलाम, बुचकार्‌यां बांथै पड़ै।
कूट्‌यां देवै काम, रीस न कीजै, राजिया!।।

14. गोला घणा नजीक, उमरावां आदर नहीं।
ठाकर जिण नै ठीक, रण में पड़सी, राजिया!।।

15. घण घण–साबळ–घाय,नह फूटै पाहड़ निवड़।
जड़ कोमळ भिद जाय, राय पड़ै जद, राजिया!।।
16. चोर चुगल वाचाळ, यां री मानीजै नहीं।
संपड़ावै घसकाल, रीति नाड्यां, राजिया!।।
17. जिण मारग ओ जात, भूंडी हो, अथवा भली।
विसनी सूं सौ बात, रह्यो न जावै, राजिया!।।
18. जिण बिन रहयो न जाय, एक घड़ी अळगो हुयां।
दोस करै विण दाय, रोस न कीजै, राजिया!।।
19. ठाकर ठाला ठोठ, ठकराणी गिरवर जिसी।
करै विभै रा कोट, रात्यूं सूंता, राजिया!।।
20. तुरत विगाड़ै ताह, पड़ गुण स्वाद सरूप नै।
मिंताराई पय मांह, रिगळ खटाई, राजिया!।।
21. दाता रांइक दाय, आथ नहीं जो आप रै।
काढै व्याज कराय, रीझ परू दै, राजिया!।।
22. दूध–नीर मिलदोय, अेकजिसी आक्रत हुवै।
करै न न्यास कोय, राजहंस विन, राजिया!।।
23. धान नहीं ज्यां धूळ, जीमण वखत जिमाड़ियै।
मांय अंस नहिं मूळ, रजपूती रो, राजिया!।।
24. ना नारी ना नाह, अधविचला दीसै अपत।
कारज सरै न काह, रांडोळा सूं राजिया!।।
25. पटियाळो, लाहोर, जीदं भरतपुर जोय लै।
जाटां ही में जोर, रिजक प्रवाणै, राजिया!।।
26. पढणो वेद–पुराण, सोरो इण संसार में।
वातां तणो विनाण, रहस दुहेलो, राजिया!।।
27. पळ–पळ में कर प्यार, पळ–पळ में पळटै परा।
ए मुतळब रा यार, रहजे अळगो, राजिया!।।
28. भली–बुरी रो भीत, नह आणै मन में निखद।
निळजी सदा नचींत, रहै सयाणा, राजिया!।।

29. हियै मूढ जो होय की संगत ज्यांरो करै ?
काळै ऊपर कोय, रंग न लागै, राजिया!।।
30. मद विद्या धन मान, ओछा से चालै अवट।
आधण रै उनमान, रहै क विरळा, राजिया!।।
31. मन सूं झगड़ै मोर, पैला सूं झगड़ै पछै।
त्यां रा घटै न तोर, राज–कचेड़ी, राजिया!।।
32. मुख ऊपर मीठास, घट मांही खोटा घड़ै।
इसड़ां सू इखळास, राखीजै नहीं, राजिया!।।
33. मूरख टोल तमाम, घसकां राळै अत घणी।
गतराड़ो गुण–ग्राम, रांडोळा में, राजिया!।।
34. रोटी चरखो राम, इतरो मुतलब आप रो।
की डोकरियां काम, राज–कथा सूं, राजिया!।।
35. सांचो मित्र सचेत, कहो काम न करै किसो।
हरि अरजण रै हेत, रथ कर हांक्यो, राजिया!।।
36. साम–धाम अर सांच, चाकरजिकेइ चालसी।
ऊन्हीं आं नै आंच, रती न आवै, राजिया!।।
37. सुख में प्रीत सवाय, दुख में मुख टाळा दियै।
जे के कहसी जाय, राम–कचेड़ी, राजिया!।।
38. हित कर जोड़ै हाथ, कामण सूं न डरै कवण ?
नम्या त्रिलोकनाथ, राधा आगळ, राजिया!।।
39. सौ मूरख संसार, कपट जिणां आगळ करै।
हरि सहु जाणणहार, रोम–रोम री, राजिया!।।
40. हित चित प्रीत हंगामा, म–हक बखेरै माढवां।
करै विधाता काम, रांडां वाळा, राजिया!।।

22. राजस्थानी कहावतां रौ महत्त्व

संसार रा सगळा देसां अर जातियां में ओखाणा, कहावतां री घणी महताऊ जागा रैयी है। दुनिया री स्यात ई कोई भासा अैड़ी है, जिणमें कहावतां रौ प्रयोग नीं हुयौ हुवै। जीवण रै व्यवहार अर सरल बुद्धि में जिण भांत कहावतां घुळी–मिळी मिळै, उणरी कोई सानी नीं है। यूं तौ कहावतां मिनख रै सभाव अर व्यवहार कुसळता रै रूप निगै आवै पण अै कहावतां भटकियोड़ां नै मारग बतावण रौ महताऊ काम ई करती लखावै। जीवण रै हरेक क्षेत्र में इण कहावतां रौ दखल उपादेयता समझावतौ लागै। कहावतां या औखाणा री सबसूं बड़ी खासियत आह के जिकी बात समझावण में बौत की कैवणौ, बौत की लिखणौ अर बौत की समझावणो पड़े उण ठौड़ ऐक ओखाणौ सारा काम सेज रूप सूं कर देवे।

कहावतां सदीव जनता जनार्दन री उक्ति हुया करै इण वास्तै गौतम बुद्ध, ईसा मसीह अर चावौ अर ठावौ दार्शनिक अरस्तू तक आपरी शिक्षावां में कहावतां ई कैयी, क्यूंकै वै जाणता हा के बात नै सटीक तरीकै सूं समझावण खातर कहावतां ई सिरै माध्यम है। राजस्थानी भाषा में अणूती कहावतां, ओखाणा प्रचलित है। इण भंडार री बरोबरी संसार री गिणीचुणी भाषावां इज कर सकै। जाति विज्ञान अर संस्कृति रै विद्वानां रौ कैवणौ है के जनता री विचारधारा जनकथावां, कहावतां इत्याद में आछी तरियां परगट कर सकां। कहावतां रौ सीधौ अरथ करियौ जावै तौ कह+आवत मतळब जिणनै लोग परंपरा सूं कैवता–सुणता चलिया आय रैया है। यूं कहावत रौ मतळब– 'कैयोड़ी बात'। इण बाबत औ ई कैयौ है के 'काळ गयौ पण कहावत रैयगी' अर 'जुग जासी बात न जाय'। राजस्थानी कहावतां में तुक रा विविध रूप मिळै। तुक मिळियोड़ी कहावतां बेगी याद हुय जावै अर अै लोक चावी ई हुवै। राजस्थानी कहावतां में तुक रा इतरा सरूप मिळै जिणरौ मतळब औ नीं है के भाषा में अतुकांत कहावतां री गिणती कमती है राजस्थानी भाषा में अतुकांत कहावतां री ई भरमार है। राजस्थानी भाषा री कहावतां में जिकी लय मिळै, वा इतरी असरदार है के अै कहावतां आज लोक में जबान जबान माथै है।

राजस्थानी कहावतां में अलंकारां री झड़ी देखण नै मिळै, जिणसूं इण कहावतां रौ रूप इतरौ संवरियौ है के सुणण वाळा अर पढ़ण वाळा नै इणसूं ज्ञान रै सागै हरख री प्राप्ति हुवै। सामाजिक कहावतां में त्यूंहारां, ब्याव, कुटुंब, शूरवीरता, प्रतिज्ञा पालण, अतिथि सत्कार, संबंध, भोज्य अर पेय, स्वास्थ्य, व्यवसाय, गैणा–गांठा, राजनैतिक चेतना इत्याद सूं जुड़ियोड़ी मिळै। राजस्थान में कृषि सिरै काम–धंधा में गिणीजै। इण कारण कृषि, खेती सूं जुड़ियोड़ी कहावतां खूब मिळै, जिणां नै सुगन विचार रै त्हैत ई सामल करीजै। राजस्थान में बड़ा–बूढा–बडेरां रै श्रीमुख सूं सुणण नै मिळै। कहावतां रा अरथ अर प्रयोग तक वै इै आछी तरियां करणी जाणै। इण खातर राजस्थानी भाषा में जितरी कहावतां मिळै उणां नै जीवती राखण रा जतन करणा जरूरी है, क्यूंकै घणकरी कहावतां तौ इण भांत री है के उणां सूं जुड़ियोड़ी केई कथावां है जिणां में राजस्थान री अैतिहासिक घटनावां, सामाजिक सरोकार, नैतिक कथावां अर दार्शनिक चिंतण री धारावां प्रवाहमान है। अै सगळी कथावां ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र इत्याद नै अंगेजती अेक मारग दरसक रै रूप में आपां नै साचें मारग माथै चालण री सीख ई देवती लखावै।

कहावतें

1. नीम न मीठो होय, सीचो गुड़ अर घीव सै।
   जिणका पड़या सुभाव, क जासी जीव सै।।

2. आँख फड़ूके बाई, के बीर मिले के सांई।
   आँख फड़के दहणी, लात घमूका सहणी।।

3. भूख कै लगावण कोनी, नींद के बिछावण कोनी।

4. कंवरजी महलां सै उतरया भोडळ को भळको।
   बतलायां बोलै नहीं, बोलै तो डबको।।

5. ओछो बोरो गोद को छोरो, बिना मुरै की सांड।
   नातै की रांड, कदेई न्याल कोनी करै।।

6. कागा किसका धन हरे, कोयल किसकूं देय।
जीभड़ल्या के कारणै जग अपनो कर लेय।।

7. कागा, कुत्ता, कुमाणसा, तीन्यू एक निकास।
ज्यां ज्यां सेरयां नीसरे, त्यां त्यां करै बिनास।।

8. कार्तिक की छाँट बुरी, बाणियां की नाट बुरी।
भायां की आंट बुरी, राज की डाट बुरी।।

9. खाणू मां का हाथ को होवो भलांई झैर ई।
चलणू गैले को होवो भलाई फेर ई।।
बैढ़णूं भायां को होवो भलांई बैर ई।
छाया मौके की होवे भलांई कैर ई।।
जीमणूं प्रेम को होवो भलाई झैर ई।

10. भाव नहीं आदर नहीं, नहिं नैनन में नेह।
तुलसी तहां न जाइये, कंचन ब्ररसै मेह।।

11. गटमण–गटमण माला फेरै।
तिलक करै सिधां का।।
दीखत का बाबाजी दीखै।
नीचै खोज गधां का।।

12. गढ़, बैरी, अर, केहरी, सगो जंवाई धी।
इतणा तो अलग भला, जब सुख पावै जी।।

13. गुरू कुम्हार सिख कुंभ है, गठि गठि काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर–बाहर चोट।।

14. गादड़ै की तावलां, सै बेर थोड़ाई पाकै।

15. गुड़ कोनी गुलगुला करती, ल्याती तेल उधारो।
परोड़ा में पाणी कोनी, बलीतो कोनी न्यारो।।
कड़ायो तो मांग कर ल्याती पण आटा को दुख न्यारो।

16. गाय ल्याये न्याणै की, भू ल्याये धरियाणै की।।

17. गुरू चेलो लालची दोनूं खेलै दाव।
दोनूं कदेक डूबसी, बैढ पत्थर की नाव।।

18. गूंगा तेरी सैन में, समझै नांई कोटा।
कै समझै तेरी मायड़ी, कै समझै तेरी जोय।।

19. गोरी में गुण होगो तो ढोलो। आपै ही आ मिलैगो।।

20. घणा हेत टूटण का, बड़ा नैण फूटण का।

21. घर मोटो, टोटो घणूं–मोटो पिव को नाव।
ऐ कारण धण दुबली, म्हारो रसता ऊपर गांव।।

22. चलणी को चाम, घोड़ै की लगाम।
संजोगी को जाम, कदे न आवै काम।।

23. चेला ल्यावै मांग कर, बैठा खावै महन्त।
राम भजन को नांव है, पेट भरण को पन्थ।।

24. काणी छोरी तनै कुण ब्यावैगो।
कह ना सरी, मै मेरे भायां नै खिलाऊंगी।।

25. बारा बरस लौं कूकर जीवै, और तेरह लौंजिय सियार।
बरस अढारा छत्री जीवै, आगै जीने को धिक्कार।।

26. आंधा की गफ्फी, बहरा को बटको।
राम छुटावै तो छूटै नहीं सिर ही पटको।।

27. अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कथ गाया, सबको दाता राम।।

28. अनजी नाचै अनजी कूदै, अनजी करै गटरका।
आज अनजी घर में नाहीं, कूण करैला मटरका।।

29. अमरो तो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो।
चोदर तो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूड़ो।
गोरां तो गोबर चुगै, खसम भलो लैटूरौ।।

30. आरिषड़ा सब जोय कर समय बताऊं तोय।
भादूड़ो जुग रेलसी छठ अनुराधा होय।।

31. आलस नींद किसान नै खोवै, चोर नै खोवै खांसी।
टक्को रिपयो मूल नै खावै, रांड नै खोवै हांसी।।

32. ऊंचे टीबै ठीकरी, घड़–घड़ गया कुम्हार।
रावण सिरसा चल दिया, लंका का सिरदार।।

33. और मंत्री सब कीजिये, एक कीजे बाणिया।
उरो बुलावै मीठो बोलै, करै मन का जाणिया।।

34. काग कुहाड़ो कुटिल नर, काटै ही काटै।
सुई सुहागो सापुरस, सांठै ही सांठै।।

35. काणूं खोड़ो कायरो, ऐंचाताणूं होय।
इण नै जद ही छेड़िये, हाथ घेसलो होय।।

36. काल कुसम्मै ना मरै, बामण बकरी ऊँट।
बो मांगै, वा फिर चरै, बो सूखा चाबै ठूंट।।

37. कुंभारी हडहड हँसै, मालण खीजै बूंट।
अजेस पगड़ा दूर है (देखूं) किण कड बैठे ऊंट।।

38. केडी चालै डोकरी, कैं का काडै खोज।
कांई थारो खो गयो, पूछै राजा भोज।।
म्हारै सैं थारै गई, जैंका काडूं खोज।
थारै सै बी जायगी, मत गरबावै भोज।।

39. खटमल कुत्तो दायमो, जट्यो मांछर जूं।
अकल गई करतार की, इता बणाया क्यूं।।

40. खाणो पीणो खेलणो, सोणो, खूंटी ताण।
आछी डोबी कंथड़ा, नामर्दी कै पाण।।

41. गंगाजी को न्हावणूं, विपरां को ब्योहार।
डूब ज्याय तो पार है, पार ज्याय तो पार।।

42. गैलो भलो न कोस को, बेटी भली न एक।
लहणो भलो न बाप को, साहब राखै टेक।।

43. चणा चाब कर कहै, म्हे चावल खाया।
नहीं छान कर फूस, म्हे हेली सैं आया।।

44. छींकत खाये छींकत पीये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर कदे न जाये, आछी कदे न होय।।

45. छोडा–छोलण, बूट–उपाड़न, थपथपियो ओ नाई।
एता चेला न करो गुरूजी, काम न आवै कांई।।

46. जननी जणै तो भक्त जण, कै दाता कै सूर।
नांई तो भल बांझ रह, मती गंवावै नूर।।

47. उल्टो चोर कोतवाल नै डंडै।।

48. तीजा पाछै तीजड़ी, होली पाछै ढूंढ।
फेरां पाछै चूनड़ी, मार खसम कै मूंड।।

49. तीतर पंखी बादली़ बिधवा काजल़ रेख।
बा बरसै बा घर करै, ई में मीन न मेख।।

50. तीन बुलाया तेरा आया, भई राम की बाणी।
राघो चेतन यूं कहै भई द्यो दाल़ में पाणी।।

51. पहलो सुख नीरोगी काया। दूजो सुख हो घर में माया।।
तीजो सुख पुत्र अधिकारी। चोथो सुख पतिवर्ता नारी।।
पांचवों सुख राज में पासा। छठो सुख सुस्थाने बासा।।
सातवों सुख विद्या फलदाता। ए सातों सुख रच्या विधाता।।

52. पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या बीसर ज्याय।
रोटी जलै़ अँगार में, कह चेला, किण दाय?गुरूजी, फर्‌यो नाहीं।

53. बातां रीझै बाणियूं, गीतां सै रजपूत।
बामण रीझै लाडुवां, बाकल़ रीझै भूत।।

54. बामण सै बामण मिल्यो, पूरबला जनम का संस्कार।
देण लेण नै कुछ नहीं, नमस्कार ही नमस्कार।।

55. बारा कोसां बोली पलटै, बनफल पलटै पाकां।
सौ कोसां तो साजन पलटै, लखण न पलटै लाखां।।

56. बीछू बानर ब्याल विष, गर्दभ, गंडक, गोल।
ये अलगा ही राखणा, यो उपदेश अमोल।।

57. ब्या बिगाड़ै दो जणा, के मूंजी के मेह।
बो पीसो खरचै नहीं, बो दड़ादड़ देह।।

58. भांग मांगै भूंगड़ा सुलफो मांगै घी।
दारू मांगे जूतियां, खुसी हो तो पी।।

59. भैरूं मींडो बांकरो, चौथी विधवा नार।
ये च्यारूँ माड़ा भला, मोटा करै बिगाड़।।

60. मरद तो जब्बान बंको, कूख बंकी गोरियाँ।
सुरहल़ तो दूधार बंकी, तेज बंकी घोड़ियाँ।।

61. मरद तो मूंच्छयाल़ बंको, नैण बंकी गोरियाँ।
सुरहल़ तो सींगाल बंकी, पोड बंकी घोड़ियाँ।।

62. हरड़ै भरड़ै आंवला़ घी सक्कर में खाय।
हाथी आंटै कांख में, साठ कोस ले ज्याय।।

63. हाथ कमाया कामड़ा कीनै दीजे दोस।
खोजे जी री पालड़ी, कांदे लीनी खोस।।

64. ऊजड़ खेड़ा फिर बसै, निरधनियाँ धन होय।
जोबन गयौ न बावड़ै मतना द्यो थे खोय।।

65. कित चंदा कित बादली, कित सरवर कित नीर।
ज्यूं ज्यूं आ विपदा पड़ी, त्यूं त्यूं सही सरीर।।

66. गाड़ी पड़ी उजाड़ में, कांटो लागै पांव।
गोरी सूखै सेज में, कह चेला, किण दाय?

67. ज्यांका ऊंचा बैठणा, ज्यांका मीत दिवाण।
वांका वैरी के करै, ज्यांका मीत दिवाण।।

68. तेल देखि तेल की धार, विण देख्यां मति करे पुकार।
खांच ऊठि चादर की खूंटि, देखी किण कडि बैठै ऊंटि।।

69. बाऊँ तीतर, बाऊँ स्याल, बाऊँ खर बोलै असराल।
बाऊँ घूघू घमा करै (तो) लंका को राज विभीसण करै।।

70. मरदां मरणौ हक्क है, ऊबरसी गल्लांह।
सापुरसां रा जीवणा, थोड़ा ही भल्लांह।।

71. रास–पुराणी बाजरी, मींडक चाल जंवार।
तोड़े–तोड़े मोठीया, कीड़ी नाल गंवार।।

72. सांई इण संसार में, भांत–भांत का लोग।
सबसूं, रलमिल चालिये, नदी–नाव संजोग।।

73. सावण में जो सूरयो चालै, भादूड़ै परवाई।
आसोजां में पिछवा चालै, भर भर गाड़ा ल्याई।।

74. सावण हरडै भादू चीत, आसोजां गुड़ खावो मीत।
काती मूला मंगसर तेल, पोह में करी दूध सूं मेल।
माघ मास घिव खिचड़ी खाय, फागण दिनूगे उठ न्हाय।।

75. सिंह संग सत्पुरूष बचन, केल फलै इक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।।

76. हर बड़ा क हिरणा बड़ा, सुगणा बड़ा क श्याम।
अरजन रथ नै हांक दे, भली करै भगवान।

77. हाट जा, बाजार, भावूं करल्या चोरी।
कमाणै की जुरत नहीं तो क्यूं परणै थो गोरी।।

78. अक्खा रोहण बायरी, राखी सरबन न होय।
पो ही मूल न होय तो, म्ही डूलंती जोय।।

79. आई ही छाय नै, घर की धिराणी बण बैठी।
80. आपकी एक फूटी को दुख कोनी,
पड़ोसी को दोनों फूटी चाये।

81. आसोजी रा मेहड़ा, दोय बात बिनास।
बोरटियां बोर नहीं, बिणयाँ नहीं कपास।।
82. आ सुन्दर मन्दर चलां तो बिन रहयो न जाय।
माता देवी आसकां, बै दिन पूंच्या आय।।
83. एक दिन पावणूं, दूजै दिन अनखावणों।
तीजै दिन बाप को मुंघावणूं।।
84. ऊत गयो दक्खन, उठे का ल्यायो लक्खन।
85. ऐरण की चोरी करी, करयो सुई को दान।
ऊपर चढ़ कर देखण लाग्यो, कद आवै बीमाण!

86. कोई स्यान मस्त, कोई ध्यान मस्त,
    कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त।
87. गूंगो बड़ो क राम, कै बड़ो तो है,
    सो है ही पण सांपा सै कुण बैर करै।
88. घर की खांड किरकिरी लागै, गुड़ चोरी को मीठो।
89. घाघरी को साख नजीक को हो ज्याय।
90. च्यार दिना री चानणी, फेर अंधेरी रात।
91. जै रिण तारै बाप को तो साढ़ा मूंग बुहाय।
92. टकै की हांडी फूटी, गंडक की जात पिछाणी।
93. ठाकरां भागो किसाक? कह, गैल की मार जाणियै।
94. डोकरी मुसाण कैंका? आये–गये का?
95. तरवार को घाव भर ज्या, बात को कोनी भरै।
96. नानी कसम करै, दूयती नैं डंड।
97. पाँच पंच छट्ठो पटवारी, खुल्ला केस चुरावै नारी।
    घिरतो फिरतो दातण करै, जैंका पाप सैं कीड़ा मरै।
98. फूट्या भाग फकीर का, भरी चिलम ढुल़ ज्याय।
99. बाई सोवणी तो घणी ई है पण आंख में फूलो।
100. सरीर कै रोगी की दवा है, मन कै रोगी की कोनी।
101. सांची भई कहनावति वा, कवि ठाकुर कान हती जोऊ।
    माया मिळी नहिं राम मिळै,दुविधा में गयै सजनी सुन दोऊ।।
102. कीड़ी नै कण, हाथी नै मण,
103. गोद कौ छौरौ, राखणौ दोरौ।
104. जाणै तौ ताणै,साठी बुद्धि नाठी।
105. सगती लारै भगती, तंगी में कुण संगी।
106. औसर चूक्या नै मौसर कोनी मिळै,ठाकर नै चाकर घणा।
107. चोरी रौ धन मोरी में जाय।
108. छोड़ौ ईस, बैठौ बीस।
109. आंख है, तौ लाख है।
110. अकल सरीरां ऊपजै,दिवी न आवै सीख।

111. अण मांग्या मोती मिळै,मांगी मिळै न भीख।।
112. जळ थोड़ौ नेहा घणा,लग्यौ प्रीत कौ बाण।
113. तू पी तू पी करत आं,मिरगां तजिया प्राण।।
114.. आंख्या में गीड़ पड़ै नाम मिरगानैणी।
115. नाम गंगाधर न्हावै कोनी उमर में।
116. नाम सीतळदास दुर्वासा–सो झाळी।
117. सीयाळै खाटू भली,ऊनाळै अजमेर।
नागाणौ नित कौ भलौ,सावण बीकानेर।।
118. मारवाड़ नर नीपजै,नारी जैसळमेर।
तुरी तौ सिंधां सांतरी,करहल बीकानेर।।
119. पख हाड़ौती माळवै,ढब देखै ढूंढाड़।
आखर परखै मरूधरा,आडंबर मेवाड़।।
120. के जागै जै कै घर सांप,के जागै बेटी रौ बाप।
121. पोता बहु री राबड़ी,दोयता बहु री खीर।
मीठी लागै राबड़ी,खाटी लागै खीर।।
122. फूहड़ रौ मेल फागण में उतरै।
123. गणगौर्‌यां में ई घोड़ा नीं दौड़ै तौ कद दौड़ै।
124. वाचा चूकूं, ऊभौ सूकूं
125. घर आयौ, मां जायौ।
126. सगौ सगारथ कीजियै, जद तद आवै काज।
127. चोखौ खाणौ, खरौ कमाणौ।
128. पाणी पीणौ छाणनै, करणौ मन रौ जाणनै।
130. धन खेती धिक चाकरी, धन–धन बणिज ब्यौहार।
गहणा धयां रा सिणगार, भूखां रा आधार।
131. जम रौ बुलावौ आईजौ, पण राज रौ बुलावौ मत आइजौ।
132. जमीदार रै बावन हाथ हुवै।
133. जैड़ौ राजा, वैड़ी परजा।
134. गुरू री चोट, विद्या री पोट।
135. आपरी मां नै डाकण कुण कैवै।

136. अपणी करणी, पार उतरणी।
137. डूंगर बळती मत देख, पगां बळती देख।
138. अब फाटौ आकास, कह कारी कींकर लगै।
139. मानौ तौ देव, नींतर भीतां रा लेव।
140. सांच नै आंच कोनी।
141. धरम कियां सूं धन बधै।
142. थावर कीजै थरपणा, बुध कीजै व्यौपार।
143. छींकत खायै छींकत पीयै,छींकत रहियै सोय।
छींकत पर घर कदै न जायै,आछा कदै न होय।।
144. करमां लिखिया कंकर, तौ के करेगा शंकर।
145. बात कैवता वार लागै, हुंकारै बात प्यारी लागै।
बात में हुंकारौ अर फौज में नगारौ।
जियौ बात रा कैवणहार जियौ हुंकारा रा देवणहार।।
146. साधुवां के किसौ सुवाद।
अणबिलायौ ई आवा दौ।।
147. गहरौ फूल गुलाब रौ, झुक–झुक झोला खाय।
ना माळी रै नीपजै, ना राजा रै जाय।।
148. बरखा बरसी रात नै, भीजी सा वणराय।
घड़ौ न डूबै लोटियौ, पंछी तिरसा जाय।।
149. चार मण रा चार पाया, आठ मण री खाट।
सोळा मण रौ गूदड़ौ, मांगै चारण भाट।।
150. पैली पोत तौ म्हैं जलम्यौ, पाछै बडौ भाई।
धूमधड़ाकै बाबौ जलम्यौ, पाछै म्हांरी माई।।
151. लांबी नाड़ की कुरझड़ी जी ढोला।
बैठी जाजम ढाळ ओ राज मरदां।
सूं मुजरा करै जी ढोला समझौ नीं म्हारा चतर सुजाण।
ग्यानी छौ तौ ग्यान द्यौ सा नहिं आपरा बाबौसा नै पूछौ राज।।

23 राजस्थानी कविता

1. **धरती धोरां री** (कन्हैयालाल सेठिया)

धरती धोरां री,आ तो सुरगां नै सरमावै, ईं पर देव रमण नै आवै,
ईं रो जस नर नारी गावै, धरती धोरां री!
सूरज कण–कण नै चमकावै, चन्दो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावळ कर ज्यावै, धरती धोरां री!
काला बादळिया घहरावै, बिरखा घूघरिया घमकावै,
बिजली डरती ओळा खावै, धरती धोरां री!
लुळ लुळ बाजरियौ लैरावै, मक्की झालो दे'र बुळावै,
कुदरत दोन्यूं हाथ लुटावै, धरती धोरां री!
पंछी मधरा मधरा बोलै, मिसरी मीठै सुर स्यूं घोलै,
झीणूं बायरियो पंपोळै, धरती धोरां री!
नारा नागौरी हिद ताता, मद आ ऊंट अणूंता खाथा!
ईं रै घोड़ां री के बातां? धरती धोरां री!
ईं रा फळ फुलड़ा मन भावण, ईं रै धीणो आंगण आंगण,
बाजै सगंळां स्यूं बड़ भागण, धरती धोरा री!
ईं रो चित्तौड़ो गढ़ लूंठो, ओ तो रण वीरां रो खूंटो,
ईं रो जोधाणूं नौ कूंटो, धरती धोरा री!
आबू आभै रै परवाणै, लूणी गंगाजी ही जाणै,
ऊभो जयसलमेर सिवाणै, धरती धोरां री!
ईं रो बीकाणूं गरबीलो, ईं रो अलवर जबर हठीलो,
ईं रो अजयमेर भड़कीलो, धरती धोरां री!
जैपर नगरयां में पटराणी, कोटा बूंदी कद अणजाणी!
चामल कैवै आं री काणी, धरती धोरां री!
कोनी नांव भरतपुर छोटो, घूम्यो सूरजमल रो घोटो,
खाई मात फिरंगी मोटो, धरती धोरां री!
ईं स्यूं नही मालवो न्यारो, मोबी हरियाणी है प्यारो,
मिलतो तीन्यां रो उजियारो, धरती धोरां री!

ईं डर पालनपुर है ईं रा, सागी जामण जाया बीरा,
अै तो टुकड़ा मरू रै जी रा, धरती धोरां री!
सोरठ बंध्यो सोरठां लारै, भेळप सिंध आप हंकारै
मूमल बिसर्‌यो हेत चितारै, धरती धोरां री!
ईं पर तनड़ो मनड़ो वारां, ईं पर जीवण प्राण उंवारां,
ईं री धजा उड़ै गिगनारां, धरती धोरा री!
ईं नै मोत्यां थाळ बधावां, ईं री धूल लिलाड़ लगावां,
ई रो मोटो भाग सरावां, धरती धोरा री!
ईं रै सत री आण निभावां, ईं रै पत नै नहीं लजावां,
ईं नै माथो भेंट चढ़ावां, मायड़ कोड़ां री, धरती धोरा री!

2 पातळ'र पीथळ

अरै घास री रोटी ही जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो।
नान्हो सो अमर्‌यो चीख पड़्यो राणा रो सोयो दुख जाग्यो।
हूं लड़्यो घणो हूं सह्यो घणो
मेवाड़ी मान बचावण नै,
हूं पाछ नहीं राखी रण में
बैर्‌यां रो खून बहावण में,
जद याद करूं हळदी घाटी नैणां में रगत उतर आवै,
सुख दुख रो साथी चेतकड़ो सूती सी हुक जगा ज्यावै,
पण आज बिलखतो देखूं हूं
जद राज कंवर नै रोटी नै,
तो क्षात्र—धरम नै भूलूं हूं
भूलूं हिंदवाणी चोटी नै
मै'लां में छप्पन भोग जका मनवार बिना करता कोनी,
सोनै री थाळ्यां नीलम रै बाजोट बिना धरता कोनी,
अै हाय जका करता पगल्या
फूलां री कंवळी सेजां पर,
बै आज रूळै भूखा तिसिया
हिंदवाणै सूरज रा टाबर,

आ सोच हुई दो टूक तड़क राणा री भीम बजर छाती,
आंख्यां में आंसू भर बोल्या मैं लिख स्यूं अकबर नै पाती,
पण लिखूं किंया जद देखै है आडावळ ऊंचो लिया,
चितौड़ खड्यो है मगरां में विकराळ भूत सी लियां छियां,
मैं झुकूं कियां? है आण मनै
कुळ रा केसरिया बानां री,
मैं बुझूं किंया ? हूं सेस लपट
आजादी रै परवानां री,
पण फेर अमर री सुण बुसक्यां राणा रो हिवड़ो भर आयो,
मैं मानूं अमर हूं दिल्लीस तनै समराट् सनेसो कैवायो।
राणा रो कागद बांच हुयो अकबर रो सपनूं सो सांचो,
पण नैण कर्‌यो बिसवास नहीं जद बांच बांच नै फिर बांच्यो,
कै आज हिंमाळो पिघळ बह्यो
कै आज हुयो सूरज सीतळ,
कै आज सेस रो सिर डोल्यो
आ सोच हुयो समराट् विकळ,
बस दूत इसारो पा भाज्या पीथळ नै तुरत बुलावण नै,
किरणां रो पीथळ आ पूग्यो ओ सांचो भरम मिटावण नै,
बीं वीर बांकुड़ै पीथळ नै
रजपूती गौरव भारी हो,
बो क्षात्र धरम रो नेमी हो
राणा रो प्रेम पुजारी हो,
बैर्‌यां रै मन रो कांटो हो बीकाणूं पूत खरारो हो,
राठौड़ रणां में रातो हो बस सागी तेज दुधारो हो,
आ बात पातस्या जाणै हो
घावां पर मूण लगावण नै,
पीथळ नै तुरन्त बलायो हो
राणा री हार बंचावण नै,

म्हे बांध लियो हैं पीथळ सुण पिंजरे में जंगली शेर पकड़।
ओ देख हाथ रौ कागद है तूं देखा फिरसी किंयां अकड़?
मर डूब चळू भर पाणी में
बस झूठा गाल बजावै हो,
पण टूट गयो बीं राणा रो
तूं भाट बण्यो बिड़दावै हो,
मैं आज पातस्या धरती रो मेवाड़ी पाग पगां में है,
अब बता मनै किण रजवट रै रजपूती खून रगां में है?
जद पीथळ कागद ले देखी
राणा री सागी सैनाणी,
नीवै स्युं धरती खसक गई
आंख्यां में आयो भर पाणी,
पण फेर कही ततकाल संभळ आ बात सफा ही झूठी है,
राणा री पाघ सदा ऊंची राणा री आण अटूटी है।
ल्यो हुकम हुवै तो लिख पूछूं
राणा नै कागद रै खातर,
लै पूछ भलांई पीथळ तूं
आ बात सही बोल्यो अकबर,
म्हे आज सुणी है नाहरियो
स्याळां रै सागै सोवैलो,
म्हे आज सुणी है सूरजड़ो
बादळ री ओंटा खोवैलो,
म्हे आज सुणी है चातगड़ो
धरती रो पाणी पीवैलो,
म्हे आज सुणी है हाथीड़ो
कूकर री जूणां जीवैलो,
म्हे आज सुणी है थकां खसम, अब रांड हुवैली रजपूती।
म्हे आज सुणी हैं म्यानां में, तरवार रवैली अब सूती।।

तो म्हांरो हिवड़ो कांपै है मूंछ्यां री मोड़ मरोड़ गई,
पीथळ नै राणा लिख भेजो आ बात कठै तक गिणां सही?
पीथळ रा आखर पढ़तां ही
राणा री आंख्यां लाल हुई,
धिक्कार मनै हूं कायर हूं
नाहर री एक दकाल हुई,
हूं भूख मरूं हूं प्यास मरूं
मेवाड़ धरा आजाद रवै
हूं घोर उजाड़ा में भटकूं
पण मन में मां री याद रवै,
हूं रजपूतण रो जायो हूं रजपूती करज चुकाऊंला,
ओ सीस पड़ै पण पाघ नहीं दिल्ली रो मान झुकाऊंला,
पीथळ के खिमता बादल री
जो रोकै सूर उगाळी नै,
सिंघां री हाथळ सह लेवै
बा कूख मिली कद स्याळी नै?
धरती रो पाणी पिवै इसी
चातग री चूंच बणी कोनी,
कूकर री जूणां जिवै इसी
हाथी री बात सुणी कोनी,
आं हाथां में तरवार थकां
कुण रांड कवै है रजपूती?
म्यानां रै बदळै बैर्‌यां री
छात्यां में रैवै ली सूती,
मेवाड़ धधकतो अंगारो आंध्यां में चमचम चमकैलौ,
कड़खै री उठती तानां पर पग पग पर खांडौ खड़कैलो,
राखो थे मूंछ्यां ऐंठ्योड़ी
लोही री नदी बहा द्यूंला,
हूं अथक लडूंला अकबर स्यूं
उजड़्यो मेवाड़ बसा द्यूंला,
जद राणा रो संदेश पीथळ री छाती दूणी ही,
हिंदवाणो सूरज चमकै हो अकबर री दुनियां सूनी ही।

3. जलम भोम

कन्हैयालालसेठिया

आ धरती गोरा धोरां री, आ धरती मीटा मोरां री
ईं धरती रो रूतबो ऊंचो, आ बात कवै कूंचो कूंचो,
आं फोगा में निपज्या हीरा, आं बांठां में नाची मीरा,
पन्ना री जामण आ सागण, आ ही प्रताप री मा भागण,
दादू रैदास कथी वाणी, पीथळ रै पाण रयो पाणी,
जौहर री जागी आग अठै, रळ मिलग्या राग विराग अठै,
तलवार उगी रण खेतां में, इतिहास मंड्योड़ा रेतां में,
बो सत रो सीरी आडावळ, बा पत री साख भरै चंबळ,
चूंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी,
ईं कूख जलमियो भामासा, राणा री पूरी मन आसा,
बो जोधो दुरगादास जबर, भिड़ लीन्ही दिल्ली स्यूं टक्कर,
जुग जुग में आगीवाण हुया, घर गली गांव घमसाण हुया,
पग पग पर जागी जोत अठै, मरणै स्यूं मधरी मौत अठै,
रूं रूं में छतरयां देवळ है, आ अमर जुंझारां री थळ है,
हर एक खेजड़ै खेड़ा में, रोहिड़ा खींप कंकेड़ा में,
मारू री गूंजी राग अठै, बलिदान हुया बेथाग अठै,
आ मायड़ संतां शूंरां री, आ भोम बांकुरा वीरां री,
आ माटी मोठ मतीरां री, आ धूणी ध्यानी धीरां री,
आ साथण काचर बोरां री, आ मरवण लूआं लोरां री,
आ धरती गोरै धोरां री, आ धरती मीठै मोरां री।

4. धन धन मात खेजड़ी (पुष्पा भास्कर)

धन धन मात खेजड़ी, सांचो थारो आंलखौ,

कलयुग मैं कल्प वृक्ष रख्यो थारो नांव।

धन–धन मात खेजड़ी धन धन थारी छांव।

तातो चालै बायरौ, बरसै जाण्यूं आग,

तूं ही बचां मां खेजड़ी, जोड़ां थारे दोन्यू हाथ।

देह तपे अंगार ज्यूं, मरूथलां रे माय,

चोखी लागै उण थको, खेजडली री छांव।

सूना सूना टीबड़ा सूना सूना खेत,

उभी दिखे खेजड़ी मन भर जावे हेत।

अर्जुन री गांड़ीव नै टांक्यो थारे माय,

लाज रखी विश्वास री, धन धन म्हारी मांय।

5. म्हारो राजस्थान

यो है म्हारो राजस्थान, म्हारो हिवड़ा रो मिजमान!
ऊँचा नीचा डूँगर ईंका, ऊची नीची घाटियाँ,
खेत रूखाळी करै खेजड़ा, कॉधे ले–ले लाठियाँ,
सोना–सो बूरो रेताँ में, बीज कुणी ये छाँटियाँ?
यो है म्हारो राजस्थान.......................।।
मरूधर मूंडे उजळी रेताँ, झिलमिल धोंरा जाणी,
मोट्यारां ने मोठ–बाजरी, टाबर ने गुड़–धाणी,
जुग री पोथ्याँ मूँडे बोले, तलवारां रो पाणी।
यो है म्हारो राजस्थान.........................।।
रागाँ रो रंगीलो समदर, लहरॉ लेवे लोरियाँ,
तीज–तुवारौं घूमर लेवे, निरत करे गणगोरियॉ,
मोड़ बॅधायाछिन में निकले, जौहर री बन्दोरियाँ।
यो है म्हारो राजस्थान..........................।।
अलबेलो चित्तौड़ राज यो जोधपुरी रणधीर,
नगर गुलाबी जयपुरियो, बीकाणो हिवड़े हीर,
झीला सागै मौज माण्डतो उदयापुर कश्मीर।
यो है म्हारो राजस्थान..........................।।
सुख–दुख एक सरीखो जाणे, हुवे न काची काया,
हिम्मत पाण जीवणों जाणे, काल सुकाली छाया,
मोड़ बाँधकर मौत परण ले, राजस्थानी जाया।
यो है म्हारो राजस्थान..........................।।
नुवा पंथा निरमाण मुळकिया चम्बल संग बनास,
पन्ना पवमण ज्योति जल्योड़ी, जोधो दुरगादास,
हळदी घाटी लारे बोलै, राणा रो इतिहास।
यो है म्हारो राजस्थान..........................।।

24. नीतिशतक

भूमिका

संस्कृत–भाषा विश्व की भाषाओं में प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम भाषा है। मानव–जाति का सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रन्थ ' वेद ' इसी भाषा से रचा हुआ है। वैदिक संस्कृत–साहित्य परम्परा का संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् आदि के रूप में सर्वांगीण विकास हुआ है। इनसे भारतीय संस्कृति का निर्मल स्वरूप स्पष्टतः प्रतिभासित होता हैं। इसी विशेषता के कारण संस्कृत साहित्य को भारतीय संस्कृति का दर्पण कहा जाता है। वस्तुतः संस्कृत भाषा में मानव–भावों एवं विचारों को व्यक्त करने की अनुपम क्षमता है। इसमें एक ओर आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डालने वाला विशाल साहित्य है, तो दूसरी ओर जन–जीवन के विशुद्ध मनोविनोद एवं भौतिक जीवन के मंगलमय पक्ष को समुन्नत बनाने की शिक्षा देने वाले साहित्य की प्रचुरता है। इन विशेषताओं के कारण संस्कृत भाषा एवं उनमें रचित साहित्य का महत्त्व आज भी अक्षुण्ण है।

मुक्तक शतक काव्य

भारतीय संस्कृति में जीवन के चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चतुर्वर्ग के नाम से प्रतिष्ठित हैं। इन पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से अनेक कवियों ने मुक्तक कोटि की काव्य– विधा को अपनाया हैं। जिस पद्य–संग्रह में प्रत्येक श्लोक स्वतंत्र रूप से अर्थ प्रकाशन की क्षमता रखता है उसे पूर्वापर प्रसंग की आवश्यकता नहीं होती है तथा रसनिष्पत्ति या अर्थ प्रकाशन से जो स्वतंत्र श्लोक सहृदयों के हृदय में चमत्कार का आधायक होता है, उसे मुक्तक काव्य की कोटि में रखा जाता हैं।

नीतिशतक में क्षेपक

नीतिशतक में संकलित अनेक श्लोक पूर्ववर्ती काव्य ग्रथों में भी मिलते हैं और कुछ सर्वथा भिन्न प्रतीत होते हैं। इसका मूल कारण क्षेपक–श्लोकों का समावेश है।

उपसंहार

नीतिशतक नीतिप्रधान उपदेशात्मक काव्यों में अनुपम स्थान रखता हैं। इसमें लोक–जीवन का व्यावहारिक ज्ञान आद्योपान्त भरा हुआ हैं।

लोक मंगल की भावना का प्रसार सदाचरणशीलता एवं सद्वृतियों की ग्राह्यता का उपदेश इसका मूल प्रतिपाद्य माना जा सकता हैं। संस्कृत—साहित्य में शतककाव्य एवं मुक्तक गीतिकाव्य काव्य—. परम्परा के लिए नीतिशतक उपजीव्य रहा हैं। यह रचना संस्कृत—साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

1. अपूर्ण ज्ञान काष्टकारीः

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि त नरं न रञ्जयति।। 1।।

भावार्थः— मुर्ख और विद्वान् को सुभाषित या नैतिक उपदेश समझाया जा सकता है, परन्तु अधूरा ज्ञान होने पर भी स्वयं को विद्वान् मानने वाले घमंडी व्यक्ति को चतुर्मुख ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते। ऐसे व्यक्ति पर प्रिय और हितकर वचनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

2.विद्वान् आदरणीयः

हर्तुर्याति न गोचरं किंमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा—
प्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते।।

भावार्थः— जो विद्याधन चोरों को दृष्टिगत नहीं होता है, जो सदा अनिवर्चनीय सुख को बढ़ाता है, जो याचकों को सदा दान करने से भी बढ़ता ही रहता है तथा जो प्रलयकाल में भी नष्ट नहीं होता है, ऐसा विद्या नामक धन जिसके पास है, अरे राजाओं ! उनके प्रति गर्व करना छोड़ दो । भला उनके साथ कौन बराबरी कर सकता है?

3.वाणी सर्वोतम आभूषणः

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भुषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणमं।।

भावार्थः— बाजूबन्द आदि आभूषण मनुष्य को सुशोभित नहीं कर सकते, न चन्द्रमा की तरह चमकने वाले हार ,न स्नान, न चन्दन आदि

का सुगन्धित लेप, न फूल और न सँवारे गए बाल ही मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं। केवल एक व्याकरण आदि से शुद्ध वाणी ही मनुष्य को सुशोभित करती है, क्योकि अन्य आभूषण नष्ट हो जाते है, परन्तु वाणी रूपी आभूषण सदा स्थायी रहता है।

4. विद्या की महिमाः

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकारी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पुज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

भावार्थः— विद्या से ही मनुष्य की शोभा होती है, विद्या रूपी धन सदा मानव के ह्दय में निगूढ तथा स्थायी रहता है और इससे ही व्यक्ति सम्मान, सुख–भोग आदि प्राप्त करता है। विदेश में विद्या आजीविका प्रदान करती है, राजाओं के द्वारा विद्वान का सम्मान होता है। अतः विद्या का अत्यधिक महत्त्व है। इससे रहित व्यक्ति निरा पशु ही है।

5. कल्याण का पथः

प्राणाघातान्निवृतिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथामूकभावः परेषाम्।
तृष्णास्त्रोतोविभग्डो गुरूषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्था।।

भावार्थः— जीवहिंसा से दूर रहना, दुसरे का धन हरण करने से अपने मन को रोकना, सत्य बोलना, समय पर यथाशक्ति दान देना, दूसरों की स्त्रियों की चर्चा के समय मौन रहना, लोभ के प्रवाह को रोकना, गुरूजनों के प्रति नम्र होना तथा सब प्राणियों पर दया करना–यहीं सभी शास्त्रों से अनुमोदित जनसाधारण के कल्याण का मार्ग है।

6.सज्जनता का निर्वाह कठिनः

असन्तो नाऽभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः
कृशधनः प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभग्डेप्यसुकरम्।
विपद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां
सतां केनोदृष्टिं विषममसिधाराव्रतमिदम्।।

भावार्थः—दुर्जनों से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, अल्पधन वाले मित्र से भी नहीं मांगना चाहिए, प्रिय एवं न्यायोचित आजीविका का आश्रय लेना चाहिए, निन्दनीय कर्म प्राणी के नाश होने पर भी दुष्कर है, विपत्ति काल में उच्चमना होकर रहना चाहिए, और महापुरूषों के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए—इस तरह दुष्कर एवं तलवार की धार के समान कठोर व्रत का सज्जनों के लिए किसने उपदेश दिया है?

7. सज्जनों की अक्षुण्ण महत्ताः

क्षुत्क्षमोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्राणोऽपि
कष्टां दशा—मापन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भ— कवल— ग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी।।

भावार्थः— सिंह और स्वाभिमानी पुरूषों का स्वभाव एक— सा होता है। सिंह भूखा भले ही मर जाय, पर वह स्वाभिमानी होने से कभी सुखी घास खाकर प्राण धारण नहीं करता है। वह तो मदमस्त हाथी के गण्डस्थल का मांस खाने का ही प्रयास करता है। इसी प्रकार स्वाभिमानी व्यक्ति भी कभी किसी से मांगकर नहीं खाता है। वह तो सम्मानपूर्वक जीवन—व्यापन करने के लिए कटिबद्ध रहता है।

8. पराक्रमियों का स्वभावः

सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतयः सम्भाविताः
पञ्चषा— स्तान् प्रत्येष् विशेषविक्रमरूची राहुर्न वैरायते।
द्वावेव ग्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ
भ्रातः! पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषाकृतिः।।

भावार्थः— राहु तेजस्वी सूर्य और चन्द्रमा से ही वैर रखकर उन्हें आक्रान्त करता है। इसी प्रकार शक्तिशाली वीर पुरूष अपने समान पराक्रमी लोगों से ही वैर रखते हैं। वे अपने से कम तेजस्वी एवं दुर्बल जनों से कदापि वैर नहीं करते हैं। मानी जनों का यह सहज स्वभाव होता है।

9. धन की महिमाः

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधो
गच्छताच्छीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना।
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः
केवलं येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे।।

भावार्थः– धनवान के पास सभी गुण और आवश्यक पदार्थ अपने आप आ जाते हैं। धन ही सुख–समृद्धि को बढ़ाता हैं। इसलिए जाति, गुण, शिल,वंश आदि की चिन्ता न करके धन का अर्जन करना चाहिए। क्योंकि बिना धन के उक्त समस्त गुण तृणवत् निस्सार ही हैं। धन ही जीवन का परम लक्ष्य हैं। इसलिए मनुष्य को धनार्जन के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

10. दानशीलता का महत्त्वः

मणिः शणोल्लीढः समरविजयी हेतिदलितो
मदक्षीणो नागः शरदिसरितः श्यानपुलिनाः।
कलाशेषश्चन्द्र : सुरतमृदिता बालवनिता
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चार्थिषु नराः।।

भावार्थः– मणि या रत्न शान पर घिसने से यद्यपि कुछ क्षीण या पतला हो जाता है तथापि उसमें चमक अधिक बढ़ जाती है। इसी प्रकार शस्त्रों से आहत एवं कृश हुआ योद्धा अधिक शोभा पाता है, मदस्त्राव से क्षीण होने पर हाथी भी अधिक सुन्दर लगता है। शरद् ऋतु में नदियों के सैकत प्रदेश शुष्क होने पर अच्छे लगते हैं। द्वितीया का चन्द्रमा कला मात्र शेष रहने पर भी सुन्दर लगता हैं। रतिकालीन मर्दन से शिथिलांगी युवती अच्छी लगती हैं। इसी प्रकार याचकों को दान देने से क्षीण धन वाले लोग अधिक शोभा पाते हैं।

11. प्रजापालन का सुफलः

राजन्! दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेतां
तेनद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलः फलति कल्पलतेव विद्या।।

भावार्थः– यदि राजा भली–भांति से प्रजा का पालन करता है, तो उसके धन वैभव की स्वतः वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार सुशासन से राजा अपने राज्य से स्वेच्छानुकूल धन प्राप्त कर सकता है। जैसे इच्छा अनुकूल दूध प्राप्त करने के लिए गाय का स्वामी बछड़े के पोषण का ध्यान रखता है। बछड़े के मर जाने पर तो गाय भी दूध नहीं देती है। अतः राज्य या पृथ्वी राजा के लिए कल्पलता के समान सभी प्रकार के फलों या द्रव्यों को सम्पादित करने वाली हो सकती है।

12. कर्मानुसार फल प्प्तिः

यद्धात्रा निजभालपट्ट लिखितं स्तोकं महदा धन
तत्प्राप्नोति मरूस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम्।
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृतिं वृथा मा कृथाः
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्।।

भावार्थः– मनुष्य को उतना ही धन मिलेगा, जितना उसके भाग्य में लिखा होगा। चाहे वह मरूस्थल में रहे या सुमेर पर्वत पर, सर्वत्र उसे भाग्य अनुसार ही धन मिलेगा। इसलिए कवि उपदेश देता है कि धनवानों के सामने लोभ में आकर व्यक्ति को दीनता नहीं प्रकट करनी चाहिए। घड़ा चाहे कुएँ में डाला जाए या समुद्र में, उसमें उतना ही जल आएगा जितना की उसकी जल ग्रहण क्षमता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी उतना ही धन मिलेगा, जितना उसके भाग्य में लिखा गया है।

13. दुर्जन का लक्षणः

अकरूणत्वमकारणविग्रहःपरधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्।।

भावार्थः– दुर्जनो में निर्दयता आदि दुर्गुण जन्मजात होते हैं। वे अपने बान्धवों और सज्जनों पर सदा असहनशील रहते हैं। बिना कारण दूसरों से वैर करना, पराये धन और परस्त्री को पाने की लालसा करना उनका स्वभाव होता है। इसलिए धनवान् या विद्यावान् होने पर भी दुर्जन की संगति नहीं करनी चाहिए। वे सदा ही अवगुणी होते हैं।

14. सेवाकर्म की दुष्करताः

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा,
धृष्टः पार्श्वे वसति च सदा दूरतश्चाऽप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरूर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।।

भावार्थः– राजा अथवा स्वामी की सेवा करना परम कठिन कार्य होता है, त्रिकालदर्शी एवं तत्ववेत्ता योगीजन भी सेवा–धर्म का निर्वाह नहीं कर सकते, क्योंकि सेवाधर्म में संलग्न सेवक सदा निन्द्य होता है।सेवक यदि कार्य करते हुए चुप रहता है तो उसे गूँगा कहा जाता है। यदि वह अच्छा प्रवक्ता होता है तो उसे बातूनी बतलाते हैं। यदि वह सदा स्वामी के पास रहता है तो उसे ढीठ कहा जाता है। यदि वह क्षमाशीलता का व्यवहार करता है तो उसे डरपोक कहा जाता है। इसी प्रकार उसे दूर रहने पर अव्यवहारी, किसी की बात न सहने पर नीच कुलोत्पनन माना जाता है। स्वामी को प्रसन्न रखना कठिन होता है। इसलिए सेवा–धर्म को परम गहन एवं अगम्य कहा गया है।

15. दुर्जन–सज्जनों की मैत्री में भेदः

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्ध–परार्द्ध भिन्ना, छायेव मैत्री खल–सज्जनानाम्।।

भावार्थः– सज्जनों की मित्रता तथा दुर्जनों की मित्रता में बहुत बड़ा अन्तर होता है। जिस प्रकार दिन के पूर्वार्द्ध की छाया आरम्भकाल में अधिक तथा कमशः घटती जाती है, उसी प्रकार दुर्जनों की मित्रता प्रारम्भ में अत्यन्त गहन तथा क्रमशः क्षीण होने लगती है। सज्जनों की मित्रता दिन के परार्द्ध भाग की छाया के समान पहले कम तथा बाद में धीरे–धीरे बढ़ने वाली होते है। इसलिए सज्जनों से मित्रता अपनानी चाहिए, दुर्जनों से मि़त्रता नहीं करनी चाहिए।

16. महापुरूषों के गुणः

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

भावार्थः– विपत्ति आने पर साधारण जन घबरा जाते हैं, परन्तु महापुरूष सदा धैर्यवान् बने रहते हैं। सम्पत्ति आने पर सामान्य लोग घमण्डी होकर दुसरों को तुच्छ समझने लगते हैं तथा उनकी बात सहन नहीं करते हैं, परन्तु महापुरूष सदा सहिष्णु और क्षमाशील बने रहते हैं। ऐसे महापुरूष विद्वत्सभा में वाग्मिता, युद्ध में वीरता तथा यश प्राप्ति में विशेष रूचि दिखाते हैं। वे विद्याभ्यास में सतत निरत रहते हैं। निश्चय ही महापुरूषों में ये सब गुण स्वभावसिद्ध होते हैं।

17. सज्जनों का कठिन वृतः

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभवसाराः परकथाः
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्।।

भावार्थः– प्रायः लोग धनवान होने पर दिखावा करते हैं, घमण्डी बन जाते हैं और दूसरों को हीन दृष्टि से देखते हैं। परन्तु सज्जनो में से दोष नहीं होते हैं। वे दिखावे से मुक्त होकर गुप्त दान करते हैं, घर आये अतिथि का सत्कार करते हैं, दूसरों का उपकार करके अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं तथा दूसरों से उपकृत होने पर कृतज्ञता प्रकट करते हैं। वे आत्मश्लाघा एवं परनिन्दा से मुक्त रहते हैं। इस तरह सज्जनों में ये गुण स्वभावसिद्ध होते हैं, उन्हें ऐसा आचरण करने के लिए कोई प्रेरित नहीं करता हैं।

18.महापुरूषों के स्वाभाविक अलंकरणः

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरूपादप्रणयिता,
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृतिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयो–
र्विनाऽप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्।।

भावार्थः– वस्तुतः हाथ की शोभा कंकण से नहीं, अपितु प्रशंसनीय दान से होती हैं। शिर की शोभा गुरू के चरणों में किये गए अभिवादन से होती है। मुख का आभूषण ताम्बूल आदि न होकर सत्य वाणी ही हैं। भुजाओं का आभूषण बाजूबन्द न होकर विजयशील अतुल बल होता हैं।

हृदय का आभूषण हार आदि न होकर निर्मल आचरण होता है और कानों का आभूषण कुण्डल आदि नहीं; अपितु पठित शास्त्र ही होता है। इस प्रकार ये दान आदि महापुरूषों के लिए बिना धन–सम्पत्ति के स्वभाविक आभूषण होते हैं।

19. संगति के गुणोत्पत्तिः

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।।

भावार्थः– कवि कहता है कि कोई यदि अधम लोगों के संसर्ग में रहता है तो वह उसी प्रकार व्यथित होकर अस्तित्वहीन हो जाता है जैसा कि गर्म लोहे पर पड़कर जल सूखकर नष्ट हो जाता है। यदि कोई मध्यम कोटि के लोगों के सम्पर्क में रहता है तो वह कमल–पत्र पर पड़े हुए मोती की तरह चमकने वाले जलबिन्दु के समान मध्यम गति पाता है। लेकिन उत्तम लोगों के संसर्ग में रहने पर व्यक्ति उसी प्रकार सर्वोत्तम गुण सम्पन्न और आकर्षक बन जाता है, जैसे कि सीप में पड़कर जलबिन्दु बहुमूल्य मोती बन जाते है। इसलिए उत्तम गुणों को प्राप्त करने के लिए उत्तम लोगों की संगति करनी चाहिए।

20. पुण्यकर्मों से तीन लाभः

यः प्रीणयेत्सुचरितैः पितरं स पुत्रो,
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम्।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं
य देतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते।।

भावार्थः– सत्पुत्र वही हो सकता है जो समुचित कर्त्तव्य–निर्वाह एवं सदाचरण द्वारा पिता को सर्वथा प्रसन्न रखता है। सत्पत्नी वही होती है जो अपने पति को ही सर्वस्व मानकर सदा उसका हितसाधन करती है। इसी प्रकार सन्मित्र वही होता है जो सम्पत्तिकाल और विपत्तिकाल में अपने मित्र के साथ एक जैसा अच्छा व्यवहार करता है। इस जीवन में ऐसे सत्पुत्र, सत्पत्नी और सन्मित्र की प्राप्ति पुण्यात्मा लोग ही कर पाते हैं तथा ये ही सांसारिक सुखों के साधक होते हैं।

21. परोपकारियों का स्वभावः

भवन्ति नमास्तरवः फलोद्‌गमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

भावार्थः— परोपकारी लोगों का यह स्वभाव सिद्ध गुण होता है कि वे सम्पत्तिशाली बनने पर विनम्र व्यवहार करते हैं। सामान्य लोग धनवान् होते ही घमण्ड करने लगते हैं तथा प्रायः उद्धत बन जाते हैं, परन्तु परोपकारी लोग उसी प्रकार विनम्र बने रहते हैं, जैसे कि फल लगने से वृक्ष झुक जाते हैं और नये जल से भरे हुए आकाश में संचरण करते बादल धरती की और अधिक झुक जाते हैं।

22. परोपकारियों का आभूषणः

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेनदानेन पणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करूणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन।।

भावार्थः— परोपकार—परायण जनों के कानों की शोभा कुण्डल धारण करने से नहीं, अपितु विद्याभ्यास से होती हैं। उनके हाथ की शोभा दान करने से होती हैं, कंकण धारण करने से नहीं। इसी प्रकार उनके शरीर की शोभा परोपकार से होती हैं, चन्दन लगाने से नहीं। अतः आभूषण आदि नश्वर वस्तुओं से शरीर की सजावट करने की अपेक्षा विद्याभ्यास, दान और परोपकर में निरत रहना चाहिए।

23. सज्जन मैत्री का दृष्टान्तः

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरातेऽखिलाः
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी।।

भावार्थः— कवि ने सज्जनों की मित्रता का उदाहरण दूध और जल से दिया है। जब दूध में जल मिश्रित होता है तो दूध अपने मित्र जल को अपने समस्त गुण दे देता है। आग पर रखने से जब दूध में उफान आने लगता है, तो अपने मित्र की रक्षा के लिए जल स्वयं पहले जल जाता है। उसे जलता हुए देखकर दूध भी आग में जाने के लिए व्याकुल हो जाता है। तब जल से मिश्रित होकर दूध शान्त हो जाता है।

इसी प्रकार सज्जन भी मित्र की सहायता करते हैं और अपने प्राणों की परवाह न करके मित्र का हित साधते हैं।

24. गुणवान् ही प्रशंसार्हः

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः।।

भावार्थः– सुमेरू और कैलाश पर्वत भले ही स्वर्ण और रजत के पर्वत कहलाते हों, परन्तु इनसे दूसरों को कोई लाभ नहीं होता। इन पर्वतो पर जो वृक्ष होते हैं, वे सदा सामान्य वृक्ष ही बने रहते हैं। वस्तुतः मलय पर्वत ही सर्वश्रेष्ठ पर्वत है, जिस पर उगने वाले कंकोल, नीम, कुटज जैसे तुच्छ वृक्ष भी चन्दन जैसी सुगन्धि वाले शीतल होते हैं। अर्थात् चन्दन वृक्षों के संसर्ग से अन्य वृक्ष भी सुगन्धित हो जाते हैं। इस प्रकार गुणवान् व्यक्ति की संगति से अल्पगुणी व्यक्ति भी गुणवान् बन जाता है।

25. धीरपुरूषों की अविचलताः

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ट्म्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

भावार्थः– धैर्यवान् लोग अपने निश्चित मार्ग से जरा भी विचलित नहीं होते हैं। अपने सुनिश्चित मार्ग पर चलते समय चाहे लोग उनकी निन्दा करें अथवा प्रशंसा, चाहे उनको लक्ष्मी मिले या नष्ट हो जाय, चाहे उनकी तुरन्त मृत्यु हो अथवा वें युगों जीवित रहें, परन्तु वें अपना न्यायपूर्ण मार्ग नहीं छोड़ते हैं। उन्हें तो निन्दा या स्तुति की चिन्ता नहीं रहती हैं, न्यायोचित कार्य–साधन में लगा रहना ही उनका स्वभाव होता हैं।

26 भाग्य का प्राधान्यः

भग्नाशस्य करण्डपिण्डिततनोर्म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा
कृत्वाखर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः।
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा
लोकाः !पश्यत दैवमेव हि नृणा वृद्धौ क्षये कारणम्।।

भावार्थः– भाग्य के बल से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं और भाग्यहीन को कठोर प्रयत्न करने पर भी इच्छित वस्तु नहीं मिलती है। जैसे कोई सर्प जब अपने जीवन से निराश होकर सपेरे की पिटारी में बन्द भूख से छटपटा रहा था, तो चूहा उस उस पिटारी में छेद कर स्वयं जाकर सर्प के मुँह में गिर गया, जिससे उसकी क्षुधा भी शान्त हो गई और वह उसी छेद के रास्ते बाहर भी निकल गया। यह सब भाग्य का ही चमत्कार था। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य की उन्नति एवं अवनति का कारण उसका भाग्य ही होता है। भाग्यानुकूलता से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

27. मनुष्य के शत्रु व बन्धुः

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुर्यं कृत्वा नावसीदति।। 27।।

भावार्थः– आलस्य मनुष्य का महान् शत्रु होता है, क्योंकि यह मनुष्य के शरीर में रहता है और अप्रत्यक्ष होने से इसको जितना कठिन होता है। उद्योग या उद्यम के समान दूसरा कोई बन्धु नहीं होता हैं, क्योंकि उद्यमी व्यक्ति कभी दुःख नहीं पाता है, वह सदा सुखी रहता है। अतः मनुष्य को आलस्य का त्याग कर उद्योगी बनना चाहिए।

28.भाग्य का प्राधान्यः

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिकाः
स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः किल हरेरैरावतो वारणः।
इत्यैश्वयबलान्वितोऽपि बलभिद् भग्नः परैः सग्ड़रे
तद् व्यक्तं ननु दैवमेव शरणं धिग्धिग् वृथा पौरूषम्।।

भावार्थः–वस्तुतः दैव के आगे पुरूषार्थ शक्तिहीन हो जाता हैं। अतः वही होता है जो भाग्य या दैव–प्रदत्त होता है। चाहे मनुष्य के पास उत्तम साधन हों, परन्तु घठित वही होगा जो भाग्यविहित है। जैसे देवराज इन्द्र भी जब सब साधनों से सम्पन्न होकर भी दानवों से पराजित हो गए, तो सामान्य मनुष्य की क्या शक्ति, जो देव के विपरित कार्य कर सके। अतः पुरूषार्थ व्यर्थ है, देव ही परम आत्मबल है–उससे ही सारे कार्य सफल होते हैं।

29. भाग्यहीन की विडम्बनाः

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके
वाच्छन् देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।।

भावार्थः—भाग्यशाली व्यक्ति चाहे कहीं भी कैसी भी स्थिति में रहे, वह सदा सुख ही पाता है, परन्तु भाग्यहीन व्यक्ति चाहे जितने भी प्रयत्न करे, वह विपत्तियों से मुक्त नहीं हो पाता है। जैसे खल्वाट व्यक्ति आत्मरक्षार्थ ताड़ के पेड़ के नीचे गया, परन्तु वहां पर भी उसे सुख नहीं मिला। अतः यह सिद्ध है कि मानव के सुख–दुःखों का कारण उसका भाग्य ही हैं तथा भाग्यहीन व्यक्ति जहाँ भी जाता है विपत्तियाँ उसका पीछा नहीं छोड़ती हैं।

30. कर्म की महिमाः

नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगाः,
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः।
फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किंच विधिना,
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति।।

भावार्थः—वस्तुतः विधि की अपेक्षा कर्म का ही प्राधान्य है, क्योंकि विधाता भी कर्मानुसार ही फल देता है। इसलिए देवताओं और विधाता की वन्दना करना व्यर्थ है। देवता विधाता के अधीन हैं और विधाता कर्मानुसार फल देता है। मनुष्य को जो कुछ मिलता है, वह कर्मों के अनुसार मिलता है। अतः विधाता या अन्य देवता कर्मफल को नहीं रोक सकते। इस दृष्टि से कर्म ही वन्दनीय हैं।

31. पुण्य का फलः

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि।।

भावार्थः— पूर्व जन्मकृत पुण्य मनुष्य की सर्वत्र रक्षा करते हैं। चाहे वह जंगल में रहे, चाहे संग्राम भूमि में हो या शत्रुओं के बीच फँस गया हो, जल में डूब रहा हो या अग्नि के बीच पड़ गया हो, चाहे वह महासागर में

अथवा पर्वत की चोटी पर ही क्यों न हो, चाहे वह किसी भी अवस्था में हो, सर्वत्र उसके पुण्यकर्म उसकी रक्षा करते हैं। इसलिए मनुष्य को पुण्यार्जन के लिये प्रयत्न करते रहना चाहिए।

32. अनहोनी व होनी की नियतताः

मज्जत्वम्भसि यातु मेरूशिखरं शत्रूजयत्वाहवे
वाणिज्यं कृषिसेवने च सकला विद्याः कलाः शिक्षताम्।
आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत् कृत्वा प्रयत्नं परं
नाभाव्यं भवतीह कर्मवशती भाव्यस्य नाश कुतः।।

भावार्थः– मनुष्य अपने प्रयास से चाहे कठिन से कठिन काम करले और असम्भव कार्य भी कर डाले, सभी विद्याओं में पारंगत हो जावे, शत्रुओं को पराजित कर ले तथा कोई उद्योग व्यवसाय करने में सफल रहे, परन्तु अवश्यम्भावी बात कभी टल नहीं सकती। कर्म की गति के अनुसार जो होनी है वह अवश्य होगी और जो अनहोनी है वह कदापि नहीं होगी। सभी फल कर्मानुसार मिलते हैं, भाग्य भी सतकर्म से बनता है। अतः सत्कर्म में ही मनुष्य की प्रवृति होनी चाहिए।

33. सत्पुरूषों की शोभाः

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचनाढ्यैः स्वदारपरितुष्टैः।
परपरिवादनिवृत्तैः क्वचित्क्वचिन्मण्डिता वसुधा।।

भावार्थः–इस संसार में ऐसे लोग बिरले ही होते हैं जो कटु वचन न बोलने वाले हों, जो सदा प्रिय वचन कहें, जो अपनी पत्नि से ही संतुष्ट रहें और परनिन्दा से विमुख रहने वाले हों। इसलिए कवि कहता है कि ऐसे लोगों से यह पृथ्वी कहीं–कहीं ही शोभित होती है, सर्वत्र नहीं, क्योंकि सत्पुरूष इस धरती पर कम ही होते हैं। भाव यह है कि मनुष्य को सत्पुरूषों के उक्त गुण अपनाने चाहिए।

34. वीर पुरूष का महत्त्वः

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फरिततेजसा।।

भावार्थः– जैसे एक ही प्रकाशवान् सूर्य अपनी किरणों से समस्त भू–मण्डल को आक्रान्त अर्थात् प्रकाशित एवं प्रभावित कर लेता है, उसी

प्रकार तेजस्वी वीर पुरूष अकेला ही समस्त भूमण्डल को अपने चरणों के नीचे दबाकर वशवर्ती बना लेता है। धरती पर ऐसे वीर पुरूष कम ही होते हैं और वें ही वास्तविक रूप में वसुधा का सही उपभोग कर पाते हैं।

35. शील की महिमाः

वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणा–
न्मेरूः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सद्यः कुरग्ड़ायते।
व्यालो माल्यगुणायते विषरसः पीयूषवर्षायते
यस्साग्ड़ेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति।।

भावार्थः– जो व्यक्ति शीलवान् होता है, उसके लिए कोई भी पदार्थ अथवा कोई भी कार्य दुलर्भ या दुःसाध्य नहीं होता है। वह तो सब कुछ करने और सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ होता है। उसे तो अग्नि जैसा दाहक पदार्थ जल के समान शीतल लगने लगता है, अति दुस्तर समुद्र भी एक छोटी नहर जैसा प्रतीत होता है, अति उन्नत सुमेरू पर्वत भी एक छोटी शीला जैसा जान पड़ता है, सिंह भी मृगवत सरल जीव बन जाता है, भीषण सर्प भी पुष्पमाला के समान और विषरस भी अमृत की धारा के समान सुखकारी बन जाता है। अतः ये सभी दुर्लभ और दुस्तर पदार्थ शीलवान् के लिए अति सरल हो जाते हैं।

36. सत्यप्रतिज्ञ की महिमाः

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव
स्वा–मत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानाम्।
तेजस्विनःसुखमसूनपि सन्त्यजन्ति
सत्यव्रतव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम्।।

भावार्थः– सत्पुरूष या सत्यव्रत में रूचि रखने वाले तेजस्वी पुरूषों का यह स्वभाव होता है कि वे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहते हैं, भले ही उन्हें अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए प्राण ही गँवाने पड़े, परन्तु वें अविचल रहते हैं। ऐसे तेजस्वीयों के लिए अंगीकृत प्रतिज्ञा अपनी माता के समान प्रिय एवं अत्याज्य होती है। माता जैसे अपने पुत्रों के लिए अनुकूल आचरण करने वाली और अति शुद्ध हृदय वाली होती है तथा उसमें गुणों का समावेश करती है, उसी प्रकार सत्पुरूष की प्रतिज्ञा उसके आचरण के

अनुकूल और सद्‌गुणों को उत्पन्न करने वाली होती है। अतः उनके लिए प्रतिज्ञा परिपालनीय होती है।

37. मूर्खता का परिहार असम्भवः

शक्यो वारयितुं जलन हुतभुक छत्रण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताडकशेन समदो दण्डेन गोरार्दभौ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैविष
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ।।

भावार्थ :– मूर्ख की मूढ़ता किसी भी उपाय से दूर नहीं हो सकती है। स्वयं विधाता भी उसकी मूर्खता दूर नहीं कर सकते। मूर्खता ऐसा असाध्य रोग है जिसका कोई भी उपचार नहीं है। इसलिए मूर्ख की मूढ़ता को दूर करने का प्रयास करना व्यर्थ है।

38. विद्या से रहित मनुष्य पशु के समान

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं गुणो न धर्मः
ते मर्त्यलोक भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

भावार्थ :– विद्या आदि से रहित मनुष्य वस्तुतः मनुष्य होकर भी पशु के समान है। मनुष्य का रूप धारण करने पर भी उसका आचरण पशुओं के तुल्य रहता है। ऐसा व्यक्ति इस पृथ्वी पर भार स्वरूप ही है। इसलिए मनुष्य कोटि में रहने के लिए विद्या आदि का अर्जन आवश्यक है।

39. सुकंविता की महिमाः

क्षान्तिश्चेत्कवचेन कि किमरिभिः क्रोधोअस्ति चदेहिनां
ज्ञातिश्चेदनलेन कि यदि सुहृद् दिव्यौषधैः कि फलम्।
कि सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ।।

भावार्थ :– क्षमा रूपी उत्तम गुण से मनुष्य की स्वतः रक्षा होती है। क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। बान्धव ही सम्पति के विनाशक होते हैं। अच्छे मित्र ही सभी विपत्तियों के निवारक होते हैं। दुष्ट व्यक्ति सर्पो से भी अधिक घातक होते हैं।मनुष्य के लिए लज्जा ही सबसे बड़ा आभूषण है और सुकविता सभी को वश में करने वाला साधन है। लौकिक जीवन में मनुष्य को उक्त बातों का ध्यान रखना चाहिए।

40. भगवत्कृपा का फलः

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्ध मित्रमवञ्चकः परिजनो निष्क्लेशलेशं मनुः।
आकारो रूचिरः स्थिरश्च विभवो विद्यावदातं मुखं
तुष्टे विष्बपकष्टहारिणि हरौ सम्प्राप्यते देहिना ।।

भावार्थ :– संसार के कष्टों के निवारक भगवान् विष्णु जब किसी व्यक्ति पर कृपा करते है तो तब उस व्यक्ति को सदाचारी पुत्र, पतिव्रता पत्नी, प्रसन्नचित स्वामी, विश्वस्त सेवक, स्नेही मित्र, निष्कलेश मन तथा चिरस्थायी सम्पत्ति के साथ विद्या की स्वेच्छा से प्राप्ति हो जाती है। अतः सुखी जीवन के लिए मनुष्य को भगवत्कृपा प्राप्त करनी चाहिए।

25 हँसी के फुवारे–ठहाके

1. एक सेठ ने अपने नौकर से किसी बात पर नाराज होकर कहा – तू बड़ा गधा है।

   नौकर ने नम्रता पूर्वक जबाब दिया बड़े तो हुजूर आप हैं। मैं तो छोटा हूँ ।।

2. एक बार एक व्यक्ति सवेरे–सवेरे अपने मकान के आगे टहल रहे थे तो उनके पड़ोसी उनको टहलते देख कर कहा– भाई साहब सवेरे–सवेरे टहलना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है, पड़ौसी ने झल्लाकर कहा रात 10 बजे से ऐसे ही टहल रहा हूं। बीवी है कि दरवाजा ही नहीं खोल रही है।

3. एक नेता का बेटा अपनी मां से सवाल करते हुए, माँ–ये भ्रष्टाचारी कौन होते है।

   मां ने झाड़ लगाते उत्तर दिया, बेटा एक बात मुझे समझ में नहीं आती के तू हर बात में अपने बाप को बीच में क्यों घसीट लाता है।

4. एक बार एक व्यक्ति साइकिल से जा रहा था, उसने एक लड़की को टक्कर मार दी। लड़की जोर से चिल्लाई – अरे मूर्ख–घंटी नहीं मार सकता था क्या – उस व्यक्ति ने उसी लहजे में जवाब दिया पूरी की पूरी साइकिल मार दी, अब घंटी क्या अलग से मारूँ ?

5. दो व्यक्ति छत पर सो रहे थे कि चोर आया और उनका कंबल लेकर भागने लगा।

   तब दूसरे व्यक्ति ने कहा – पकड़ो–पकड़ो जब पहले व्यक्ति ने उसकी आवाज सुनी तो कहा रहने दो यार, जब वह चोर तकिया चुराने आयेगा तब पकड़ लेंगे।

6. एक व्यक्ति दर्जी से बोला कि– यार इतने दिन तो भगवान ने दुनिया बनाने में नहीं लिए जितने तुने कुर्ता बनाने में ले लिए। दर्जी बोला– तो दुनिया की हालात देख रहें हैं न, जल्दबाजी में काम ऐसा ही होता है।

7. एक बार एक व्यक्ति विदेश में समुद्र किनारे लेट रहा था, अंग्रेज ने उसे देखकर पूछा – आर यू रिलैक्सिंग ?

   उस व्यक्ति ने कहा नो आई एम रामसिंह।

   थोड़ी देर में दूसरे अंग्रेज ने पूछा– आर यू रिलैक्सिंग ?

   उस व्यक्ति ने कहा नो आई एम रामसिंह।

   कई लोगों के पूछने पर रामसिंह वहां से उठकर चल दिया और आगे लेटे एक अंग्रेज से जाकर उसने पूछा– आर यू रिलेक्सिंग? अंग्रेज ने कहा यस आई एम रिलेक्सिंग।

   रामसिंह झल्लाकर बोला – तो यार उधर जा न, वहां तुझे सब ढूँढ़ रहे हैं।

8. होटल में ग्राहक ने वेटर को डाँटते हुए कहा तुम्हें तो गधे तक को खाना परोसने की तमीज नहीं है। वेटर पलट कर बोला कोशिश तो कर रहा हूँ साहब।

9. पिता–मुकेश तुम इतनी देर से मुर्गा क्यों बने हुए हो ।

बेटा– आपने ही तो कहा था कि जो काम स्कूल में किया करते हो उसे घर में आधा घंटा दोहराया करो।

10. डाकू – सेठ जल्दी बताओ जान देते हो या माल दोगे।

सेठ – भाई जान ही ले लो, माल तो बुढ़ापे में काम आयेगा।

11. जज, जेब कतरे से, तुम मुझे बताओ कि तुमने इनकी जेब कैसे काटी।

जेबकतरा– सॉरी सर मैं यह हनूर किसी को नहीं सिखाता।

12. एक कैदी, दूसरे से– यहाँ तुमसे मिलने कोई नहीं आता क्या तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है ?

कैदी– यार हैं तो बहुत मगर सारे रिश्तेदार जेल में ही हैं।

13. थानेदार – एक कदम भी आगे मत बढ़ना, वरना !

चोर– वरना क्या करोगे ?

थानेदार – वरना ! मुझे ही दो कदम पीछे हटना पड़ेगा।

14. होटल में एक प्रेमी ने अपनी प्रेमिका से पूछा ? कहो जानेमन क्या मंगवाया जाए।

प्रेमिका ने जवाब दिया मेरे लिए कॉफी और अपने लिए एंबुलेस, क्योंकि सामने से मेरे पति आ रहे हैं।

15. एक औरत, भिखारी लड़के से – तुम्हें शर्म नहीं आती भीख माँगते हो। तुम जैसे लड़को को तो स्कूल जाना चाहिए।

भिखारी – जी वहां भी गया था मगर कुछ नहीं मिला।

16. माँ– बेटा शरारती लड़कों से दूर रहा करो।

बेटा – इसलिए तो मां मैं स्कूल नहीं जाता ।

17. गुरूजी– बच्चो मेहनत का फल मीठा होता है।

रमेश– मास्साहब मैनें कल बहुत मेहनत से एक नीबूं तोड़ा था वह तो खट्टा निकला ।।

18. क्या आप अपना कुत्ता बेचने की कृपा करेगे। कल मेरी पत्नी को गाने का अभ्यास रोक देना पड़ा क्योंकि वह पूरे समय तक गुर्राता रहा ।

माफ कीजिए– शुरू आत आपकी पत्नी ही करती है।

19. लड़की– पापा क्या गुस्सा करना अच्छी बात है।

पापा – नही बेटी यह तो बहुत बुरी बात है। अच्छे लोग गुस्सा नहीं करते।

लड़की– तो फिर देखिए मेरी अंकतालिका, मैं फेल हो गई हूँ ।

20. ग्राहक – दुकानदार से इस टाई की कीमत क्या है ?

दुकानदार – 200 रूपये मात्र।

ग्राहक – क्या बात करते हो 200 रूपये में तो अच्छे जूते आ जाते हैं।

दुकानदार – तो फिर आप गले में जूते ही लटका लें।

21. गुरूजी –गुस्से में यदि यहाँ कोई मूर्ख बैठा हो तो खड़ा हो जाए कुछ देर बाद एक छात्र खड़ा हो गया।

गुरूजी ने पूछा – क्या तुम मूर्ख हो ?

छात्र – जी यह बात नहीं है मैं तो इसलिए खड़ा हो गया हूँ क्योंकि कक्षा में आप अकेले खड़े अच्छे नहीं लग रहे हैं।

22. एक राजा की मृत्यु हो गई। उनकी शवयात्रा बड़ी धूमधाम से निकाली गई। जब शव यात्रा बीच बाजार से गुजर रही थी तो वहाँ खड़े एक व्यक्ति के मुंख से निकला– ''आज राजाजी जिन्दा होते तो अपनी शव यात्रा को धूमधाम से होती देखकर कितने खुश होते ।

23. जज, सिपाही से – तुमने चोर क्यों नहीं पकड़ा ?

सिपाही–क्या करूं साहब वह ऐसे घर में घुस गया था, जिस के बाहर लिखा था – अन्दर आना सख्त मना है।

24. शिक्षक– राजू आज तूं कक्षा में दस मिनट लेट आया है।

राजू– नहीं सर पाँच मिनट तो मैं कक्षा के बाहर ही खड़ा रहा और पाँच मिनट से यह विचार कर रहा था कि सर से क्या बहाना बनाऊँ कि वे मुझे माफ करदें।

25. शिक्षक, छात्र से – तुम कैसा निबन्ध लिखकर लाए हो ? तुम्हारा पढ़ाई की तरह बिलकुल ही ध्यान नही है। तुम्हारे पापा से शिकायत करनी पड़ेगी।

छात्र – कोई फायदा नहीं सर यह निबंध उन्होंने ही लिखा है।

26. मेहमान – आपका रसोइया इतनी देर से रसोई घर में सीटी बजा रहा है। आपको बुरा नहीं लगता ?

मेजबान – जी दरअसल मैंने ही उसे सीटी बजाने के लिए कहा है, ताकि पता चलता रहे कि वो रसोई में कुछ खा तो नहीं रहा।

27. रात को कब्रिस्तान में एक आदमी कब्र पर बैठा हुआ था। इतने में एक मुसाफिर उधर से गुजरा और पूछा – आप इतनी रात को कब्रिस्तान में बैठे हो, तुम्हे डर नहीं लगता ?
आदमी बोला – इसमें डरने की क्या बात है। कब्र के अन्दर गर्मी लग रही थी । इसलिए थोड़ी देर के लिए बाहर आ गया ।

28. दो दुकानदार आपस में बातचीत कर रहे थे ।

पहले ने कहा – तुम्हें कैसे पता चल जाता है कि माल लेने वाले ग्राहक मियां बीवी है।

या प्रेमी–प्रेमिका।

दूसरा दुकानदार बोला – बहुत आसान है, ये तो जो चुपचाप खरीदारी करें, वो प्रेमी–प्रेमिका है।

जो न केवल मोलभाव करे, बल्कि आपस में झगड़े भी वे मियां बीवी हैं।

29. एक औरत एक छोटे लड़के को सड़क पर सिगरेट पीते देख कर अचम्भित रह गई।

उसने पूछा– तुम्हारे मां–बाप जानते है कि तुम सिगरेट पीते हो ?

बच्चे ने जबाव दिया – क्या आपके पति जानते है कि आप राह चलते अजनबी लोगों से बातें करती है ?

30. अध्यापक – एक खेत में बीस भेड़ चर रही थी । उनमें से आठ भेड़े बाहर चली गई, तो बताओ कितनी भेड़ बची ?

विद्यार्थी– महोदय, आप गणित ही जानते है, भेड़ का स्वभाव नहीं।

31. विद्यालय में शिक्षा अधिकारी मुआयना करने आये तो देखा की अध्यापक कक्षा में ऊंघ रहे है। साहब के जगाने पर।

वे हड़बड़ा कर बोले – साहब में तो बच्चों को यह उदाहरण दे रहा था कि प्राचीन काल में कुंभकरण कैसे सोता था।

32. श्याम अपनी बहन को मोटर–साइकिल पर बैठाकर तेजी से जा रहा था, रास्ते में उसकी बहन का दुपट्टा गिर गया पीछे से एक साइकिल वाला आ रहा था।

वह चिल्लाया भाईजी ओ भाईजी, श्याम ने पीछे मुड़कर देखा और रुक गया।

उस आदमी ने पास आकर कहा – भाईजी आपकी बीवी का दुपट्टा गिर गया है।

श्याम गुस्से में होकर बोला – बेवकूफ के बच्चे बीवी होगी तेरी, मेरी तो बहन है।

33. एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कहता है कि यह बता की जेल को हवालात क्यों कहते है।

अरे भाई यह तो बड़ा सिंपल प्रश्न है । जेल में खाने को हवा और लात खूब मिलते हैं।

34. मालिक– नौकर से मैंने तुम्हे घर के सारे मच्छर मारने को कहा था। देखो मेरे कान पर तो मच्छर भिन–भिना रहे हैं।
नौकर – मालिक मैंने तो सारे मच्छर मारे थे ये तो मच्छरों की विधवायें है। जो आपके कान में जाकर रो रही है।

35. एक साहब एक होटल में खाना खाने पहुँचे। खाना बासी और बैकार था। पहला निवाला मुँह में रखते ही वे गरजे – ''बुलाओ होटल के मैनेजर को कहाँ है वह ?''
वेटर ने कहा– मैनेजर साहब बराबर वाले होटल में खाना खाने गये हैं।

36. शराब के नशे में धुत्त व्यक्ति गाड़ी से उतरकर टैक्सी स्टैण्ड पर पहुँचा ।
टैक्सीवाला – कहाँ जाना है ?
शराबी – चाँदनी चौक।
टैक्सीवाला –वह सामने ही है।
शराबी – मुझे टैक्सी से जाना है।
टैक्सीवाला – अच्छा बैठो। एक्सीलेटर पर पैर रखकर थोड़ी देर बाद, वह सामने है चाँदनी चौक।
शराबी – कितने पैसे हुए ?
टैक्सीवाला – बारह रूपये।
शराबी (पैसे देते हुए) –एक बात याद रखना, टैक्सी इतनी तेज मत चलाया करो।

37. एक शराबी रात को एक खम्भे को खटखटा रहा था – खोल मेरी रामप्यारी।
सिपाही– यह तुम्हारा घर नहीं बिजली का खम्भा है।

38. घर का कुत्ता मर गया। नौकर सिर पकड़र देर रात तक रोता रहा।

नौकर – हाय! तुम मर गए अब मेरा क्या होगा ।

मालिक – अपने को संभालो–आखिर इसमें तुम्हारे इतना दुःखी होने की क्या वजह है।

नौकर–अब घर के सारे झुठे बर्तन मुझे ही साफ करने होगें।

39. हवलदार–(स्कूटर वाले से) तुमने लाल बत्ती नहीं देखी क्या ?

स्कूटर वाला – जी, लाल बत्ती तो देखी थी लेकिन आपको नहीं देखा था।

40. शरारती बच्चे को पिता ने थप्पड़ मारते हुए कहा– तुम कहना नहीं मानते, शरारत करते हो।

बेटा – पिताजी! जब आप शरारत करते थे तो क्या आपके पिताजी भी आपको इसी प्रकार थप्पड़ मारते थे ?

पिता – हां बेटा।

बेटा – तो क्या जब आपके पिता शरारत करते थे तो क्या उनके पिता भी उन्हे इसी प्रकार थप्पड़ मारते थे ?

पिता – हां बेटा।

बेटा–मैं पूछता हूं आखिर यह गुंडागर्दी कब तक चलेगी ?

41. हवलदार (स्कूटर वाले से) – रोको रोको, तुम्हारे स्कूटर में लाईट नहीं है।

स्कूटर वाला – पीछे हट जाओ, इसमें ब्रेक भी नहीं है।

42. एक बहरे मनुष्य का मित्र बीमार था –वह उससे मिलने गया। मन में सोचने लगा, ज्यादा बात नहीं करूंगा।

रास्ते में – मैं पूछूंगा कैसी तबियत है ?

अक्सर रोगी कहते है – ठीक है । फिर पुछूंगा किसकी दवा चल रही है ? वह डॉक्टर का नाम बता देगा।

बहरा मित्र – कहो कैसी तबियत है ? बीमार – मर रहा हूँ। बहरा – अच्छा ही है, भगवान करे ऐसा ही हो। दवा किसकी चल रही है?

बीमार – यमराज की ।

बहरा – अच्छा डॉक्टर है। खाने को क्या बताया है ?

बीमार – पत्थर।

बहरा – ठीक है, पचने में हल्के होते है।

43. जज – तुमने सरे बाजार इतने बड़े आदमी को जूत्ता मारकर इनका अपमान किया है। तुम पर पच्चास रूपये का जुर्माना किया जाता है ।

अपराधी – साहब! मेरे पास खुले रूपये नहीं है सौ का नोट है एक जूत्ता और मार देता हूँ ।

44. मरीज– डॉक्टर साहब! मैं रात को सोते–सोत पंलग से गिर जाता हूं ।

डॉक्टर – तुम मेरे पास क्यों आए ? पंलग बनाने वाले के पास जाओ।

45. एक सिपाही रात में गश्त पर था। उसे एक चोर दिखाई दिया सिपाही ने उसके पीछे भागना शुरू कर दिया। चोर की रफ्तार तेज थी।

सिपाही तेजी से भागने लगा। थोड़ी दूर जाकर एक चौराहा आ गया, सिपाही वही रूक गया और चोर को आवाज देकर कहने लगा– इसके आगे तुम आराम से जा सकते हो, मेरी डयूटी यही तक थी ।

46. शॉपिंग करते – करते शाम हो गई । पैकेटों का बण्डल उठाते पति महोदय, पत्नी के साथ दुकान से जब बाहर निकले तब तक चाँद भी निकल आया था।

पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा– देखो कितना अच्छा चाँद है ।

पति ने बिना देखे जवाब दिया – होगा, पर अब उसे खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं बचे ।

47. जज – जब आपके घर में चोरी हुई उस समय क्या बजा था ?

वादी – जी लाठियां बजी थी । एक मेरे कंधे पर और दूसरी मेरे सिर पर ।

48. एक पत्नी ने अपने पति को डाँटते हुए कहा – मैं आपसे चार दिन से कह रही हूँ कि राखी भेजने के लिए लिफाफा ला दे। याद रखिए, अगर आज शाम को आप लिफाफा लेकर नहीं आये तो मैं यह राखी आपके बांध दूंगी।

49. एक व्यक्ति नकली नोट छापता था। गलती से पन्द्रह रूपये का नोट छप गया। उसने सोचा, शहर में तो चलेगा नहीं इसलिए इसे गांव में जाकर चलाता हूँ ।

यह सोचकर वह पास के गांव में चला गया ।

एक दूकानदार से – पन्द्रह रूपये के छुट्टे होगे ?

दूकानदार – लेकिन यह पन्द्रह का नोट ?

व्यक्ति – शहर में नया चला है।

दूकानदार – लेकिन चौदह रूपये मिलेगे । व्यक्ति – ठीक है। दूकानदार अन्दर गया और सात–सात के दो नोट लाकर उसके हाथ में थमा दिये।

50. पत्नी – उठोजी! लगता है भूकम्प आ रहा है। कहीं अपना मकान न गिर जाये।

पति – अरे! गिरता है तो गिर जाने दो । किराया का ही तो है।

51 अध्यापक : तुम किस खानदान से हो?
छात्र : मास्टरजी, मैं जानवरों के खानदान से हूॅं।
अध्यापक : (हैरानी से): वो कैसे?
छात्र : मेरे पापा कहते हैं उल्लू कहीं का।
मां कहती हैं–गधा। दादाजी शेर बेटा कहते हैं और दादी कहती है बदंर।

52 एनसीसी का अफसर बोला, 'नौ जवान आगे बढ़ो!' सभी आगे बढ़ गए,लेकिन बांके वहीं पर खड़ा रहा।' अफसर– 'तुम क्यों नहीं आगे बढ़े?

बाकेः 'आप ने ही तो कहा था कि नौजवान आगे बढ़ो। मैं तो दसवां जवान हूँ!

53 दफ्तर में दो नए कर्मचारी बात कर रहे थे। 'अपना फैमिली अलाउंस बढ़वाने के लिए मैंने बच्चों की संख्या तीन लिखवा दी है।'
दूसराः 'अरे, कम से कम पांच तो लिखवाते। मैंने तो सातलिखवाई है।'
पहलाः भैया तुम्हारी बात और है, तुम तो शादीशुदा हो। मैं तोअभी........

54 दारोगा(रवि)– जब तुम्हारे यहां चोरी हुई,उस समय कितना बजा था?

रवि(दारोगा)–हम पर चार लट्ठ और हमारे भाई पर दो लट्ठ बजे थे,
दारोगा(रवि से)–अरे में घड़ी का समय पूछ रहा हूँ उसमें कितना बजा था?
रवि(दारोगा से)–साहब घड़ी तो एक ही लट्ठ बजने पर टूट गई।

55. रामू– रेलवे पूछताछ काउंटर एक घण्टे के भीतर नौ–दस बार रेलगाड़ी के आने–जाने के बारे में पूछ चुका था। आखिर में परेशान होकर वहां के स्टेशन मास्टर ने रामू से पूछा– महाशय, यह बताएं कि आपको जाना कहां हैं?
रामू घबराते हुए बोले– दरअसल मुझे पटरी पार करनी हैं।

26. सार्थक बातें

1. जीतने की इच्छा सभी में होती है, मगर जीतने के लिए
तैयारी करने की इच्छा बहुत कम लोगों में होती है।।

विंस लॉम्बार्डी

2. काम की अधिकता नहीं,अनियमितता आदमी को मार डालती है।।

महात्मा गांधी

3. यदि आपके हृदय में मनुष्यता नहीं, तो धर्म
और ईश्वर में आस्था रखने का कोई अर्थ नहीं है।।

रविन्द्र नाथ टैगोर

4. बुराई का सम्पर्क,हमारी अच्छी आदतों को भी दुषित कर देता है।।

बाइबिल

5. कर्महीन ही ऐसे होते हैं जो भाग्य को कोसते हैं।
और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य होता है।।

पं. जवाहर लाल नेहरू

6.. जो मानव अपनी निन्दा सुन लेता है।
वह सारे जगत पर विजय प्राप्त कर लेता है।।

मदन मोहन मालवीय

7. सब्र जिंदगी के मकसद का दरवाजा खोलता है।
क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाजे की कोई कुंजी नहीं है।।

शेख सादी

8. जो बदला लेने की बात सोचता है, वह अपने ही उस घाव को
हरा रखता है, जो अब तक कभी का अच्छा हो गया होता।।

बेकन

9. उधोगी मनुष्य की सहायता करने के लिए प्रकृति बाध्य है।
उसकी सफलता की सुनिश्चितता है।।

स्वामी रामतीर्थ

10. भविष्य का दरवाजा खोलना है,
तो अतीत की कुंजी अपने पास रखिये।।

11. आदतों को यदि रोका न जाये तो वे शीघ्र लत बन जाती हैं।।
सन्त आगस्ताइन

12. अन्याय सहना उतना ही बड़ा अपराध है, जितना अन्याय करना।।
महात्मा गांधी

13. धैर्य तो विवेक का साथी है, ताकत और दबाव की ।
तुलना में धीरज रखकर अधिक पाया जा सकता है।।
ला फोंटेन

14. जीवन हर व्यक्ति को प्रिय है लेकिन अच्छे व्यक्ति सम्मान।
और प्रतिष्ठा को जीवन से अधिक मूल्यवान मानते हैं।।
शेक्सपियर

15. जो नारी पिता की भली बेटी नहीं है,
वह किसी की भली पत्नी शायद ही बन सके।।
फ्रैंकलिन

16. अतीत को दफन दो अनंत भविष्य तुम्हारे सामने है।
याद रखो कि प्रत्येक शब्द, विचार और कर्म तुम्हारे भाग्य का निर्माण करता है।।
विवेकानन्द

17. मनुष्यता के ऊँचे गुणों को विकसित करना ही धर्म का उद्देश्य है।।
हरिकृष्ण प्रेमी

18. जो फूट डालती है, भेद बढ़ाती है वही हिंसा है।।
विनोबा भावे

19. कभी–कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है,
जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञान समझते हैं।।
प्रेमचन्द

20. खुदा की नजर में अजीज वे लोग है,
जिनके अखलाक बुलंद हैं।। हजरत मुहम्मद

21. घृणा करना शैतान का काम है क्षमा करना
मनुष्य का धर्म है और प्रेम करना देवताओं का गुण है।।
भर्तृहरि

22. दोष से हम सब भरे हैं मगर दोष मुक्त
होने का प्रयास करना हम सबका कर्तव्य है।।
महात्मा गांधी

23. चरित्र एक ऐसा हीरा हैं जो हर पत्थर को घिस सकता है।।
वर्टल

24. जो व्यक्ति स्वयं के जीवन से प्रेम नहीं करता
वह दूसरों से कैसे प्रेम कर सकता हैं। गौतम बुद्ध

25. इकटे कर जहाँ के जर सभी मुल्को के वाली थे।
सिकन्दर जब गए दुनियां से दोनों हाथ खाली थे।।

26. अवगुण नाव के पैंदे में छेद के समान है,
जो छोटा हो या बड़ा एक दिन नाव को जरूर डूबो देगा।।

27. दूसरे के अनुभव से लाभ उठाने वाला ही बुद्धिमान है।

28. जिसकी अपनी कोई राय नहीं बल्कि दूसरों की राय और रूचि पर निर्भर रहता है, गुलाम है।

29. जिन्दगी के पन्नों पर कुछ ऐसा लिखा जाए,
जो पवित्र पुस्तक सा ही सुबह शाम पढ़ा जाए।

30. मनुष्य जन्म से नहीं कर्मो से महान् बनता है।

31. आपका व्यवहार गणित के शून्य की तरह है, वह स्वयं तो कोई कीमत नहीं रखता किन्तु हर चीज का मूल्य दस गुना बढ़ा देने में समर्थ है।

32. किसी का सुधार उपहास से नहीं, उसे नये सिरे से
सोचने एवं बदलने का अवसर देने से प्राप्त होता है।।

33. इंजीनिअर की भूल नींव में दब जाती है,
डॉक्टर की भूल कब्र में दब जाती है।
लेकिन, शिक्षक की भूल पूरे राष्ट्र में परिलक्षित होती है।।

34. अगर मनुष्य निरंतर सुखी रहना चाहता है,
तो उसे परोपकार के लिए जीवित रहना चाहिए।। रविन्द्र नाथ ठाकुर

35. भूल करना पाप है परन्तु उसे, छिपाना उससे भी बड़ा पाप है।।
महात्मा गांधी

36. पढ़ने योग्य लिखा जावे, इससे लाख गुना बेहतर
यह है कि लिखने योग्य किया जाये।। महात्मा गांधी

37. वह व्यस्त जीवन निरर्थक है जो बंजर है।

38. जहाँ प्रेम और भक्ति नहीं, वहाँ परमात्मा नहीं है।।

39. विनम्रता और श्रद्धा के सामने सभी तर्क बेअसर हो जाते हैं।।

40. जब तक मन में काम, क्रोध, मद और लोभ रहता है,
तब तक ज्ञानी और मूर्ख एक समान होते हैं।। तुलसीदास

41. भाग्य जिसे प्यार करता है, उसे गर्व मूर्ख बना देता है
एवं भाग्य एक बाजार है।
जहाँ कुछ देर ठहरने से आमतौर पर भाग गिर जाता है।। बेकर

42. साँच बराबर तप नहीं, झूंठ बराबर पाप।
जाँके हिरदे साँच है, ताँके हिरदे आप ।।'

43. जीवन वही सार्थक है जो सद्चरित्र का परिचायक है।

44. पछतावा ह्यद की वेदना है, और निर्मल जीवन का उदय है।।
शेक्सपीयर

45. शिक्षा बेशक मंहगी है, लेकिन अज्ञानता
उससे ज्यादा मंहगी पड़ सकती है।। डेरेक बोक

46. सूर्य, चन्द्रमा और सच बहुत लंबे समय तक ओट में नही छिपे रह सकते हैं।। महात्मा बुद्ध

47. इस दुनियां में ईमानदार व्यक्ति ईश्वर की अनुपम और सर्वश्रेष्ठ कृति है।। एलेक्जैण्डर पोप

48. कींचड़ मत उछालो, हो सकता है तुम निशाना चूक जाओ,
लेकिन तुम्हारे हाथ तो गंदे हो ही जायेंगे।। जोसेफ पारकर

49. खुले विकास के मार्ग अपार, नियंत्रण हो जनसंख्या का भार।।

50. निशक्तजन भी अंग हमारे, मिले इन्हें अधिकार समान,
अवसर का उपहार चाहिए, दया नहीं सम्मान चाहिए।।

51. माता—पिता ही संतान के लिए प्रथम गुरू हैं, और सर्वथा पुज्य हैं।।

52. हमारा कर्तव्य है कि देश के उत्थान के लिए ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करें।

53 .अपने जीवन के प्रकाश स्वयं बनो।

54. देश तभी महान बनता है जब उसकी अधिकांश जनसंख्या देश पर भार बनने के बजाय, उसके विकास में योगदान देती है।।

55. जीवन की श्रेष्ठ अनुभूतियों और अनुभवों के आधार पर ही उन्नत समाज की रचना होती है। मानवेन्द्र नाथ राय

56. जीवन में प्रत्येक व्यक्ति से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है।

57. जीवन में हंसवृति को अपनाओ,
सार—सार ग्रहण कर लो और थोथा दो उड़ाये।। श्रीमद्भागवत।।

58. स्वार्थ, वासना और अज्ञान जीवन के सबसे बड़े शत्रु हैं। वेदान्त दर्शन

59. जीवन का आनन्द बादलों की तरह देने में है, लेने में नहीं।

60. जीवन में करनी व कथनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।

61. जीवन उन्हें भार प्रतीत होता है, जो नास्तिक हैं। उन्हें ईश्वर तक जाने का ना तो रास्ता मालूम है और नही जीवन जीने की कला मालूम है।

62. आदर्श, अनुशासन, मर्यादा, परिश्रम और ईमानदारी तथा उच्च मानवीय मूल्यों के बिना किसी का जीवन महान नहीं बन सकता है।

स्वामी विवेकानन्द

'63. बात हक की है तो कबूल करो, यह न देखो की किसने कही है।

64. जीवन में मित्रता से बढ़कर कोई सुख नहीं।

65. एकता में शक्ति होती है।

66. धैर्य के फल मीठे होते हैं।

67. उस वस्तु पर गलत निगाह मत डालो जिस पर आपका हक न हो।

68. बालकों की कर्तव्यशीलता ही सब गुणों की नींव है।

69. क्षमा करना अच्छा है, भूल जाना उससे भी अच्छा है।

70. हवा में राग होता है, फूलों मे पराग होता है।
कमियों में ध्यान मत दो क्योंकि चांद में भी दाग होता है।

71. जीवन में कभी सरल, छोटा रास्ता नहीं होता है,
संघर्ष भरे लम्बे रास्ते को पार करने से ही विजय की प्राप्ति होती है।

प्रेमचंद

72. जहां जीवन है, वहां मृत्यु अवश्य है,
मृत्यु सबसे बलवान है, इस संसार की सबसे बड़ी शक्ति है।

चाणक्य

73. श्रेष्ठ और सुन्दर जीवन जीने की कला है,
न अत्याचार सहो, न अत्याचार करो। बाईबिल

74. जीवन में अवसर चूक जाना सबसे बड़ी हानि है। भर्तृहरि

75. जीवन में भाव, विचार तथा क्रियाएँ तीनों शुद्ध होनी चाहिए।''

स्वामी अवधेशानन्द

76. जीवन में आत्म दर्शन करना ही मोक्ष है।
77. मृत्यु जीवन का एक पड़ाव है, जीवन का अंत नहीं।
78. जीवन एक अंतहीन यात्रा है, जन्म–मरण सायुज्य–ज्ञालोक्य, सामीप्य इसके पड़ाव हैं, परन्तु यात्रा का अन्त है –स्वयं आत्मा को उपलब्ध हो जाना। स्वामी अवधेशानन्द
79. मै आज जो कुछ भी हूँ उसका कारण है वे निर्णय जो मैंने कल लिए थे। एलेनाँर रूजवेल्ट
80. अपने जीवन में कुछ भी लाने के लिए कल्पना करें कि वह पहले से ही वहां है। रिचर्ड बाक
81. असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना,उतना ही असंभव है जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना बंकिम चन्द्र
82. प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूँ किसी न किसी रीत में मुझसे श्रेष्ठ होता है, इसलिए मैं उससे कुछ शिक्षा लेता हूँ। (एमर्सन)
83. चरित्र स्पष्ट तो महान क्षणों में होता है, लेकिन उसका निर्माण क्षुद्र क्षणों में ही हो जाता है। फिलिफ्स बुक्स
84. दुनियां में दो ही ताकते हैै, तलवार और कलम। अंत में जीत हमेशा कलम की ही होती है। नेपोलियन
85. सफलता किसी लौ के भभक उठने से प्राप्त नहीं होती,उसके लिए खुद को तपाना पड़ता हैं। अरनॉल्ड एच ग्लासो
86. ह्दय की सच्ची प्रार्थना से हमें सच्चे कर्तव्य का पता चलता है आखिर में तो कर्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है। महात्मागाँधी
87. आस्था राडार के समान है जो धुंध में भी दूर की चीजों की वास्तविकता को देखती है। इसे हमारी आँखे नहीं देख पाती।
88. केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही ऐसा है, जो हमारे दुखों को सदा के लिए नष्ट कर सकता है। स्वामी विवेकान्द
89. बजुर्गो को आगे रखना, खुद उनके तजुर्बो से लाभ उठाना है।

90. मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और मिथ्या भाषण को सत्य से जित सकता है। गौतम बुद्ध
91. शिक्षक सामान्य व्यक्ति नहीं, प्रलय और निर्वाण उसकी गोद में खेलते हैं।
92. प्रशंसा एक ऐसा विष है, जिसे अल्प मात्रा में ही ग्रहण करना चाहिए।
93. सदाचार का उल्लंघन करके कोई कल्याण नहीं पा सका।
94. जो आदमी नशे में मदहोश हो, उसकी सूरत उसकी माँ को भी बुरी लगती है।
95. अपना कार्य आप इस तरह किजिए कि वह आपकी पहचान बन जाये।
96. यदि दोष देखने हैं तो सबसे पहले अपने दोष देखने चाहिए, क्योंकि अपने दोषों का पता लगाना सरल भी होता है।
97. जीभ का वार तलवार से भी घातक है, जीभ का वार सीधे आत्मा पर चोट करता है।
98. संसार में न कुछ भला है न बुरा, केवल हमारे विचार ही उसे भला या बुरा बना देते हैं।
99. माता, मातृभूमि एवं मातृभाषा स्वर्ग से भी महान है।
100. दिनचर्या व्यवस्थित करना जीवन में सफलता का नक्शा बनाने जैसा है।

27. राष्ट्रपिता की जय हो

श्रद्धायुत जन–गण–मन बोले–'राष्ट्रपिता की जय हो !'
राष्ट्रपिता की जय हो !!
मोहनदास बने युग–मोहन, करम–चन्द बन चमके,
देशभक्ति के सुरभित गन्धी दृढ़ गान्धी बन गमके;
सत्याग्रह के दीपित सूरज, अखिल ज्योति के वाहक,
क्षार कर दिये बन्धन भ्रम के, पराधीनता–तम के;
सत्य–न्याय–समता–अभिमंत्रित देश सजग निर्भय हो !
श्रद्धायुत जन–गण–मन बोले–'राष्ट्रपिता की जय हो' !!
असरदार सरदार बनाये असहयोग–संगर में,
छोटे तन में भरे बड़े मन, जौहर भरे जवाहर में;
राम–रहीम मिलाये जिसने नरम–गरम सब एक किये,
जो हिंसारत गलियों में घूमा प्रेम–दण्ड ले कर में;
सबल अहिंसा की छाया में जीवन मृत्युंजय हो !
श्रद्धायुत जन–गण–मण बोले––'राष्ट्रपिता की जय हो' !!
धरती का धीरज था जिसमें सागर की गहराई,
दिग्–दिगन्त थे सीमित जिसमें कण की छवि छहराई;
वाणी में सत्साहस–गर्जन दृग में तप के सपने,
स्वतन्त्रता की अमर पताका दिशि–दिशि में फहरायी;
बापू का बलिदान सफल हो, भारत ज्योतिर्मय हो !
श्रद्धायुत जन–गण–मन बोले––'राष्ट्रपिता की जय हो' !!

28. प्रतिज्ञा

1. भारत मेरा देश है । समस्त भारतीय मेरे भाई बहिन है।
2. मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ ।
3. तथा मुझे इसकी विपुल एवं विविध थातियों पर गर्व हैं ।
4. मैं इसके योग्य होने के लिए, सदैव प्रयत्न करता रहूँगा/ रहूँगी
5. मैं अपने माता–पिता, अध्यापक एवं समस्त बड़ों का सम्मान करूँगा/करूंगी।
6. तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ शिष्टता से व्यवहार करूँगा/करूँगी ।
7. मैं अपने देश एवं देशवासियों के प्रति निष्ठा बनाये रखने की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।
8. मेरी प्रसन्नता केवल उनके कल्याण एवं उनकी समृद्धि में ही है।

29. राष्ट्रीय गान (रविन्द्रनाथ टैगोर)

जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे।
गाहे तव जय गाथा, जन गण मंगलदायक जय हे।
भारत भाग्य विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे।
जय जय जय जय हे।